Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CM 4034 4034
228
C.

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला
५३

भासनाटकचक्रे—

मध्यमव्यायोगः

'प्रकाश'-संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतः

व्याख्याकारः
[illegible] श्रीरामजीमिश्र

R635
15L9

चौखम्बा विद्याभवन
वाराणसी—२२१००१

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

R635 4035
15L9

Mishra, Ramjee, tr.
Madhyamavya yoga.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मध्यमव्यायोगः

'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतः

व्याख्याकारः

पं० श्रीरामजीमिश्रः

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-२२१००१

१९७६

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

..)

.न के पीछे),
पोस्ट बाक्स नं० ६९
वाराणसी–२२१००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

तृतीय संस्करण १९७९
मूल्य २–५०

अन्य प्राप्तिस्थान—
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)
के० ३७/११७, गोपाल मन्दिर लेन
पोस्ट बाक्स नं० १२९
वाराणसी–२२१००१

मुद्रक—
श्रीजी मुद्रणालय
वाराणसी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

R635
15L9
4035
Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

THE

VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA

53

MADHYAMAVYĀYOGA

OF

BHĀSA

With the

'PRAKASHA' Sanskrit & Hindi Commentaries

By

Pt. Ramjee Misra

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JANGAMAWADI MATH, VARANASI
LIBRARY

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI

CC0: In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

© CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No. 69
VARANASI 221001

R635
15L9

Third Edition
1979
Price Rs. 2-50

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
Acc. No. 4034

Also can be had of
CHAUKHAMBA SURABHARATI PRAKASHAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
K. 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 129
VARANASI 221001

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्राक्कथन

महाकवि भास के नाटकों में 'मध्यम-व्यायोग' का एक अपना विशेष स्थान है और सम्भवतः संस्कृत साहित्य के वाङ्मय में यही सबसे प्रसिद्ध 'व्यायोग' है।

प्रकाशक की प्रेरणा से प्रस्तुत संस्करण को छात्रोपयोगी बनाने का अथक प्रयास किया गया है आशा है छात्रों को इससे विशेष लाभ होगा।

महाकवि भास के समय एवं कृतियों के विषय में कुछ भी निर्णय देना सरल नहीं है किन्तु आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय, आदरणीय पं० करुणापति त्रिपाठी एवं डॉ० भोलाशंकर व्यास आदि गुरुजनों की प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहायता से मुझे पर्याप्त सफलता मिली है। मैं उनकी इस कृपा के लिए आभारी हूँ।

पूज्य पण्डित मंगलदत्त जी त्रिपाठी ने अपना बहुमूल्य समय देकर सम्पूर्ण पाण्डुलिपि को सुन कर तथा आवश्यक परिमार्जन करके मेरा उत्साहवर्धन किया है जिसके लिए मैं हृदय से उनका आभारी हूँ।

अन्त में मैं उन सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करना नहीं भूल सकता जिनकी पुस्तकों से मैं किसी न किसी प्रकार लाभान्वित हुआ हूँ।

दीपावली
सं० २०१७

—रामजी मिश्र

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महाकवि भास

संस्कृत वाङ्मय का भण्डार भास ने लालित्यपूर्ण सफल नाटकों से सम्पन्न किया। मानवीय भावनाओं का जैसा सफल चित्रण हमें भास के नाटकों में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। महाकवि अश्वघोष और कालिदास से भास किसी भी क्षेत्र में न्यून नहीं दृष्टिगोचर होते। श्री सुशीलकुमार डे ने भी कहा है कि अश्वघोष के नाटकों को पढ़ने के बाद जब हम कालिदास के नाटकों को पढ़ते हैं तो उसमें काफी ऊँची भावभूमि पर आना पड़ता है, रचना-विधान की भी दृष्टि से पर्याप्त सौष्ठव मिलता है। सहसा इतनी अधिक प्रगति पाकर हमें आश्चर्य होता है, पर जब हम भास की कृतियों का आस्वादन कर लेते हैं तो विकासक्रम हमें बिलकुल स्वाभाविक प्रतीत होता है। अतः महाकवि भास को अश्वघोष और कालिदास के बीच की कड़ी माना है।

भास को साहित्य जगत् में पुनः प्रतिष्ठित करने का श्रेय महामहोपाध्याय पं० गणपति शास्त्री को है। इन्होंने सन् १९१२ ई० में अनन्तशयन ग्रन्थमाला (त्रिवेन्द्रम्) से भास के स्वप्नवासवदत्तम् आदि १३ नाटकों का बड़ा ही प्रामाणिक-प्रकाशन कराया। साहित्य-समीक्षकों और सहृदयों के मन में 'प्रियविषये जिज्ञासा' खूब बढ़ी और भास के विषय में सर्वांगीण गवेषणाओं का श्रीगणेश हुआ। ये सब नाटक अपनी रचना-पद्धति, भाषाशैली एवं रसवत्ता की दृष्टि से बेजोड़ हैं, इसे मानने में किसी को भी आपत्ति नहीं, पर सब नाटक एक ही कवि की कृति हैं या नहीं इस पर विद्वानों में बड़ा मतभेद है। इतने बड़े कवि के जन्मकाल की समस्या तो अनेक ऊहापोह के बाद भी अभी सुलझी नहीं।

प्राचीन महाकवियों की भाँति भास ने भी अपनी रचनाओं में अपनी चर्चा नहीं की है। जिस प्रकार कविकुलगुरु कालिदास के विषय में अनेक पाश्चात्य और पूर्वीय विद्वानों के परस्पर विरुद्ध मत हैं उसी प्रकार भास के विषय में भी पाये जाते हैं। उन सभी मत-मतान्तरों का मन्थन कर श्री पुशलकर जी ने निम्नलिखित तालिका बनाई है[1]—

---

१. देखिए—पुशलकर—**Bhasa : A Study** पृष्ठ ६१ की टिप्पणी।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भिडे, दीक्षितार, गणपति शास्त्री, हरप्रसाद शास्त्री, खुपेरकर, किरत और टटके	६ठी से ४थी शताब्दी ई० पू०
जागीरदार, कुलकर्णी, शेम्बवनेकर, चौधुरी, ध्रुव एवं जायसवाल	३री शताब्दी ई० पू०
कोनो, लिण्डेन्यू, सरूप, सौली, एवं वेलर	२री शताब्दी ई०
वनर्जी शास्त्री, भण्डारकर, जेकोबी, जौली एवं कीथ	३री शताब्दी
लेस्नी और विण्टरनित्ज़	४थी शताब्दी ई०
शंकर	५वीं या ६ठी शताब्दी ई०
वार्नेट, देवधर, हीरानन्द शास्त्री निरुरकर, पिशरोटी और सरस्वती	७वीं शताब्दी ई०
काने और कुन्हनराजा	९वीं शताब्दी ई०
रामावतार शर्मा	१०वीं शताब्दी ई०
रेड्डी शास्त्री	११वीं शताब्दी ई०

उपर्युक्त मतों को तीन भागों में बाँटकर उनकी प्रामाणिकता पर विचार करने में सुविधा होगी । इन्हें यों रखा जा सकता है--

प्रथम मत (चतुर्थ-पंचम शताब्दी ई० पू०)—महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री, दीक्षितार आदि के अनुसार महाकवि भास पाणिनि और कौटिल्य से भी अधिक प्राचीन ठहरते हैं । कौटिल्य ने युद्ध-क्षेत्र में शूरों के उत्साहवर्द्धन के लिए जिन श्लोकों का उद्धरण दिया है उनमें से एक श्लोक भासकृत 'प्रतिज्ञा-यौगन्धरायण' में उपलब्ध है ।[1] भास के 'प्रतिमानाटक' में भी महापण्डित रावण ने स्वयं अपने को बृहस्पति-अर्थशास्त्र का ज्ञाता कहा है ।[2] इससे भी यह सिद्ध होता है कि भास के समय में कौटिल्य के प्रसिद्ध अर्थशास्त्र का प्रणयन नहीं हुआ था ।

---

१. नवं शरावं सलिलैः सुपूर्णं सुसंस्कृतं दर्भकृतोत्तरीयम् ।
तत्तस्य मा भून्नरकं च गच्छेद् यो भर्तृपिण्डस्य कृते न युध्येत् ॥
(अर्थशास्त्र, १०।३ पृ० ३६७—३६८) तथा प्रतिज्ञा ४।२

२. 'भोः काश्यपगोत्रोऽस्मि । साङ्गोपाङ्गं वेदमधीये, मानवीयं, धर्मशास्त्रं, माहेश्वरं योगशास्त्रं बार्हस्पत्यमर्थशास्त्रं, मेधातिथेर्न्यायशास्त्रं, प्राचेतसं श्राद्धकल्पं च ॥'
प्रतिमा, अंक ५

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाणिनीय व्याकरण के नियमों की व्यवस्था भास के ग्रन्थों में नहीं पाई जाती। इससे यह सिद्ध होता है कि भास पाणिनि से पूर्ववर्ती अवश्य थे।

विन्सेन्ट ए० स्मिथ के मतानुसार ई० पू० २२० से १९७ तक शूद्रक का शासन था जिसके 'मृच्छकटिक' पर 'दरिद्र चारुदत्त' का स्पष्ट प्रभाव माना जाता है।[1] अतः अपने 'दरिद्र चारुदत्त' की रचना भास ने संभवतः ई० पू० पांचवीं या चौथी शताब्दी में की होगी।

भास के ऐतिहासिक नाटकों में जिन तीन राजाओं की कथा का आश्रय लिया गया है उनमें १. कौशाम्बी के राजा उदयन, २. उज्जैन के राजा प्रद्योत और ३. मगध के राजा दर्शक के नाम उल्लेख्य हैं और इनका शासन-काल छठी शताब्दी ई० पू० के बाद नहीं माना जा सकता।[2] इसके भी पूर्व रामायण और महाभारत की रचना हुई होगी।

महाकवि ने जिस नागवन, वेणुवन, राजगृह और पाटलिपुत्र का उल्लेख किया है इन सबने बुद्ध के समय में ही प्रसिद्धि प्राप्त की होगी। अतः कवि का समय बुद्ध के बाद ही माना जा सकता है। इससे डा० गणपति शास्त्री की यह मान्यता खण्डित होती है कि भास बुद्ध पूर्व स्थित थे। इनके नाटकों में जिस समाज का चित्रण है वह अनेक प्रमाणों से भास को एक निश्चित समय में सिद्ध करता है। श्री ए० डी० पुशलकर ने सामाजिक स्थिति के विस्तृत विवेचन के द्वारा भास का समय ई० पू० पांचवीं या चौथी शताब्दी निश्चित किया है,[3] जिसमें मुझे भी पर्याप्त तथ्य मिलता है।

द्वितीय मत (ईसा की द्वितीय-तृतीय शताब्दी)—डा० कीथ के अनुसार भास की अन्तिम तिथि-सीमा ३५० ई० हो सकती है क्योंकि कालिदास ने इसके पश्चात् ४थी शताब्दी में इनके यश का वर्णन किया है अर्थात् ये तब तक प्रथित यश हो चुके थे।[4] अश्वघोष ने इनकी कहीं चर्चा नहीं की है और न इनका कोई

---

१. देखिए—पुशलकर—Bhasa : A Study, अध्याय ६।

२. देखिए विन्सेन्ट स्मिथ कृत 'Early History of India' पृ० ३८, ३९, ५१।

३. देखिए ए० डी० पुशलकर कृत 'Bhasa : A study' पृ० ६७–६८।

४. "It is difficult to arrive at any precise determination of Bhasa's date. That Kalidas knew his fame as firmly established is clear, and, if we may fairly safely date Kalidas about A. D. 400, this

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रभाव ही उन पर दृष्टिगत होता है पर इनके 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' में 'बुद्धचरित' के एक श्लोक की स्पष्ट छाया मिलती है।[1] इसलिए यह सिद्ध होता है कि भास अधिक से अधिक द्वितीय शताब्दी (अश्वघोष) के बाद और कम से कम पाँचवीं शताब्दी (कालिदास) से पूर्व अवश्य रहे होंगे। अब भास कालिदास के अधिक निकट हैं या अश्वघोष के, यह एक प्रश्न है, जिसके उत्तर में डा० कीथ ने इन्हें कालिदास के अधिक निकट माना है।[2]

भास महाभारत या कृष्ण से सम्बद्ध कथावस्तुओं के निर्वाह में जैसे तल्लीन और सफल हुए हैं वैसे अन्यत्र नहीं, सम्भवतः क्षत्रप राजाओं के आश्रित होने से ही उन्होंने यह प्रभाव ग्रहण किया हो जो कि परम कृष्णभक्त थे। इन क्षत्रपों का राज्य-काल स्टेन कोनो के मतानुसार दूसरी शताब्दी ईस्वी ठहरती है और भास इसी समय वर्तमान माने जाते हैं।

तृतीय मत (सातवीं शताब्दी)—भास के नाटकों का समय सातवीं शताब्दी ईस्वी मानने वालों में डा० वार्नेट प्रमुख हैं। वार्नेट ने 'नाटकचक्र' के कर्त्ता महाकवि भास नहीं हैं अपितु कोई केरलीय कवि है जो ईसा की सातवीं शताब्दी में वर्तमान था ऐसा सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। इसके अतिरिक्त भास के भरतवाक्यों में जिस राजसिंह का उल्लेख है उसे वे केरल का कोई राजा मानते हैं पर स्टेन कोनो ने इसे क्षत्रप रुद्रसिंह प्रथम, ध्रुव ने शुङ्ग पुष्यमित्र तथा दूसरों ने अन्य किसी राजा का विशेषण माना है। पुशलकर ने इसे विन्ध्य और हिमवत् तक फैले हुए उत्तरी भारत पर एकच्छत्र राज्य करने वाले प्रथम सम्राट् चन्द्रगुप्त को मानकर अपने मत की पुष्टि की है।[3]

सिद्धान्त मत—अन्ततोगत्वा भास के नाटकों का अन्तःपरीक्षण एवं बहिः-परीक्षण करके यह सिद्ध किया जा सकता है कि कवि मौर्यकाल के पूर्व वर्तमान

---

gives us a period of not later than A. D. 350 for Bhasa."
(The Sanskrit drama. Page 93. 1954.)

१. दे० बुद्धचरित सर्ग १३ श्लोक ६०।

२. देखिए 'The Sanskrit drama'—A. B. Keith p. 95.

३. देखिए पुशल्कर—'Bhasa : A Study' पृ० ६९।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

था क्योंकि इन्होंने भी कहीं अपनी रचनाओं में अपना नामोल्लेख नहीं किया है। भरतवाक्यों को दृष्टि में रखते हुए भास की स्थिति उग्रसेन महापद्मनन्द (चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी) के समय में मानी जा सकती है।

जैसे कालिदास, शूद्रक और कौटिल्य का समय असंदिग्ध है वैसे ही भास को अश्वघोष के पहले रखा जाय या पश्चात् यह भी एक समस्या है। भास को सब प्रकार से मौर्यकाल के पूर्व सिद्ध किया जाता है तथा कौटिल्य (४थी शताब्दी ई० पू०) के पश्चात् इन्हें किसी प्रकार नहीं लाया जा सकता।[1]

कर्तृत्व—महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री द्वारा सम्पादित 'नाटक-चक्र' के सम्पूर्ण नाटकों के कर्त्ता महाकवि भास ही हैं या कुछ अन्य कवि की भी कृतियाँ इसमें जोड़ी गई हैं[2] यह अब तक निश्चित नहीं हो सका है। अधिकांश विद्वान् अब डा० गणपति शास्त्री से सहमत हो गये हैं, जैसे डा० कीथ, डा० थामस, डा० सरूप, प्रो० परांजपे और प्रो० देवधर आदि। प्रो० जागीरदार ने स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं पंचरात्र को भास की कृति मानकर शेष नाटकों को दो भागों में विभक्त करके भिन्न-भिन्न काल की रचनायें मानी हैं। डा० विंटरनित्ज़ और डा० सुक्थनकर ने 'स्वप्नवासवदत्तम्' और 'प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्' को भास की कृति मानी है, शेष के बारे में कोई निश्चित मत नहीं व्यक्त किया है।

धर्म—प्रो० विंटरनित्ज़ ने इसके नाटकों को ब्राह्मण-धर्म का पोषक माना है, क्योंकि भास के नाटकों में ब्राह्मणों के प्रति बड़ी श्रद्धा दिखाई गई है।[3] उन्हीं प्रमाणों के आधार पर डा० व्यास ने अपना मत व्यक्त करते हुए बतलाया है कि भास के समय तक ब्राह्मण-धर्म का पुनरुत्थान हो चुका था।[4]

इन नाटकों के कर्त्ता के प्रमाणस्वरूप हमें इनके अन्तःसाक्ष्य और बहिःसाक्ष्य पर विचार करना आवश्यक है।

---

१. देखिए पुशलकर—'Bhasa : A Study' पृ० ७९–८१।

२. इस विषय में वार्नेट का मत पृष्ठ ४ के 'तृतीय मत' में देखिये।

३. 'द्विजोत्तमाः पूज्यतमाः पृथिव्याम्' मध्य० १।९, 'ब्राह्मणवचनमिति न मयातिक्रान्तपूर्वम्' कर्णभारम् १।२३, बालचरित २।११ आदि।

४. डा० भोलाशंकर व्यास : 'संस्कृत कवि दर्शन' पृ० २३०।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्तःसाक्ष्य (रचना-विधान में साम्य)— यह सिद्ध किया

१. नांदीपाठ के स्थल पर मंगलपाठ का विधान तथा सूत्रधार के द्वारा नाटकों का प्रारम्भ ('नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः')।

२. 'प्रस्तावना' के स्थान पर 'स्थापना' का सर्वत्र प्रयोग।

३. प्ररोचना का अभाव।

४. तेरह नाटकों में से पाँच नाटकों के प्रथम श्लोकों में मुद्रालंकार (देवता की स्तुति के साथ-साथ पात्रों का भी नामोल्लेख तथा कथानक की ओर भी हल्का संकेत) पाया जाता है।

५. भरतवाक्य में 'राजसिंह' का नामोल्लेख।[1] (केवल चारुदत्त और दूतघटोत्कच में भरतवाक्य का विधान नहीं है।)

६. सब नाटकों की भूमिका अल्प तथा प्रारम्भिक वाक्य एक से हैं।[2] (केवल 'प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्', 'चारुदत्त', 'अविमारक' और 'प्रतिमा' में कुछ भेद है।)

७. कंचुकी और प्रतिहारी (वादरायण और विजया) का नाम अनेक नाटकों में दुहराया गया है।

८. अनेक नाटकों में (नाटकीय व्यंग्य) 'पताकास्थान' का प्रयोग।

९. कई वाक्यों का समान रूप से अनेक नाटकों में प्रयोग।

१०. नाटकों की संस्कृत का विशुद्ध-पाणिनीय-व्याकरण-सम्मत न होना।

११. भरत-प्रतिपादित नाट्यशास्त्रीय विधि निषेधों का उल्लंघन इनके प्रायः सभी नाटकों में पाया जाता है, जैसे (क) दशरथ की मृत्यु 'प्रतिमा' और वालि की 'अभिषेक' में तथा दुर्योधन की मृत्यु 'ऊरुभंग' में प्रदर्शित है। (ख) चाणूर, मुष्टिक और कंस का वध (ग) कृष्ण और अरिष्ट के घोर युद्ध का दृश्य 'बालचरित' में। (घ) क्रीडा और शयन का विधान 'स्वप्नवासवदत्तम्' में। (ङ) दूर से जोर से पुकारने का वर्णन 'पंचरात्र' और 'मध्यमव्यायोग' में।

१२. कथानकों का साम्य।

---

१. 'इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्।
महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः॥'

२. 'एवमार्यमिश्रान् विज्ञापयामि। अये किन्तु खलु मयि विज्ञापनव्यग्रे शब्द इव श्रूयते। अङ्ग पश्यामि।'

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

... सूचना इन्होंने भटों, ब्राह्मणों आदि से अधिकांश नाटकों में दिलाई है।

१४. किसी उच्च पदाधिकारी जैसे राजा, राजकुमार या मन्त्री के आगमन की सूचना 'उस्सरह' उस्सरह। अय्या! 'उस्सरह' आदि के द्वारा दी गई है। स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, प्रतिमा आदि में इसके पर्याप्त उदाहरण हैं।

१५. किसी विशिष्ट घटना की सूचना के लिए 'निवेद्यतां निवेद्यतां महाराजाय' इत्यादि का विधान पंचरात्र, कर्णभारम्, दूतघटोत्कच आदि में किया गया है।

१६. एक की मुख-मुद्रा को ही देखकर उसके आन्तरिक भावों का परिज्ञान इनके एकाधिक नाटकों—जैसे प्रतिमा, अविमारक, अभिषेक आदि—में कराया गया है।

भावों में साम्य—भावों की एकता तो प्रत्येक नाटक में पाई जाती है। कुछ विशेष भावसाम्य का नीचे उल्लेख किया जाता है :—

१. कवि ने वीर के स्वाभाविक शस्त्र उसके हाथों को ही सिद्ध किया है जिसके उदाहरण बालचरित, मध्यमव्यायोग, पञ्चरात्र, अविमारक आदि में पाए जाते हैं।

२. नारद की अवतारणा कलहप्रिय और स्वरसाधक के रूप में सर्वत्र की गई है।[1]

३. अर्जुन की वीरता का वर्णन दूतवाक्य (श्लो० ३२-३३), दूतघटोत्कच (श्लो० २२) और ऊरुभंग (श्लो० १४) में किया गया है।

४. राजाओं का शरीर से मरकर भी यशःशरीर से चिरकाल तक जीवित रहने का विचार 'नष्टाः शरीरैः क्रतुभिर्धरन्ते' (पञ्चरात्र श्लो० १, २३) तथा 'हतेषु देहेषु गुणा धरन्ते' (कर्ण० श्लो० १७) में वर्णित है।

५. लक्ष्मी केवल साहसी के पास रहती है और संतोष नहीं धारण करती। ऐसा वर्णन चारुदत्त, दूतवाक्य, पञ्चरात्र और स्वप्नवासवदत्तम् में पाया जाता है।

---

१. तन्त्रीषु च स्वरगणान् कलहांश्च लोके। (अविमारक ४।२)
तन्त्रीश्च वैराणि च घट्टयामिम। (बाल० १।४)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्त में कतिपय अन्य साम्यों को भी परिगणित करते हुए यह सिद्ध किया जाता है कि अन्त:साक्ष्य के आधार पर तेरहों नाटक एक ही कवि की प्रतिभा से प्रसूत हैं—

१. पताकास्थानकों और नाटकीय व्यंग्यों में काफी समता ।

२. समान नाटकीय स्थितियां ।

३. समान नाटकीय दृश्य ।

४. समान अप्रस्तुत विधान ।

५. समान वाक्यविन्यास और कथोपकथन ।[1]

६. समान छन्द एवं अलंकारविधान ।

७. समान नाटकीय पात्रों के नाम ।

८. समान सामाजिक व्यवस्था का चित्रण ।[2]

बहि:साक्ष्य—अनेक आचार्यों ने इनके नाटकों के उल्लेख और गद्यांशों या पद्यांशों के उद्धरण अपने ग्रन्थों में दिए हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि ये नाटक महाकवि भासरचित ही हैं । यहाँ कतिपय आचार्यों एवं कवियों का साक्ष्य दिया जाता है—

१. आचार्य अभिनवगुप्तपाद (१०वीं शती) ने नाट्यशास्त्र पर टीका करते हुए क्रीडा के उदाहरण में स्वप्नवासवदत्तम् का उल्लेख किया है—

'क्वचित् क्रीडा । यथा वासवदत्तायाम् ।'

२. भोजदेव (११वीं शती) के 'शृङ्गारप्रकाश' में 'स्वप्नवासवदत्ते पद्मावतीमस्वस्थां द्रष्टुं राजा समुद्रगृहकं गत: ।'···आदि, का स्पष्ट उल्लेख मिलता है ।

३. शारदातनय (१२वीं शती) ने 'भावप्रकाशन' से प्रशान्त नाटक की व्याख्या करते हुए पूरा स्वप्नवासवदत्तम् का कथानक उद्धृत किया है ।

४. सर्वानन्द (१२वीं शती) ने 'अमरकोशटीकासर्वस्व' में शृङ्गार के

---

१. देखिए डा० सुकथन्कर का (भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट के १९२३वें वार्षिक विवरण के परिशिष्टांक में प्रकाशित) 'Studies in Bhasa, Iv' में 'Recurrence and parallelisms' की सूची ।

२. देखिए—पुशलकर 'Bhasa : A study' पृ० ५–२१

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भेद करते हुए धर्म, अर्थ और काम की गणना की है। इसी में अर्थ के उदाहरण-स्वरूप उदयन और वासवदत्ता के विवाह का वर्णन किया है।

५. रामचन्द्र और गुणचन्द्र (१२वीं शती का उत्तरार्द्ध) के 'नाट्यदर्पण' में उद्धृत—'यथा भासकृते स्वप्नवासवदत्ते शेफालिकाशिलातलमवलोक्य वत्स-राज'...आदि से स्वप्नवासवदत्तम् का भासकृत होना स्पष्ट सिद्ध है।

६. राजशेखर ने सूक्तिमुक्तावली में स्पष्ट ही घोषित किया है—

भासनाटकचक्रेऽपि छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोभून्न पावकः॥

इस प्रकार राजशेखर ने पूरे नाटकचक्र में से स्वप्नवासवदत्तम् को तो अग्नि-परीक्षा के द्वारा भी भासकृत सिद्ध किया है।

७. वाणभट्ट द्वारा उल्लिखित विशेषताओं को कसौटी मानकर भास के नाटकों की यदि परीक्षा की जाय तो बड़ी सरलता से नाटकचक्र के नाटकों का रचयिता भास घोषित किया जा सकता है।[1]

८. वाक्पतिराज (८वीं शती) ने गउडवहो (५, ८००) में भास को 'अग्निमित्र' कहा है। इस विशेषण को दृष्टिपथ में रखकर डा० विंटरनित्ज़, डा० बनर्जी शास्त्री और प्रो० घटक आदि ने भास के नाटकों को प्रमाणित सिद्ध किया है।

९ जयदेव (१२वीं ई० शती) ने प्रसन्नराघव की प्रस्तावना में भास के काव्य की मुख्य विशेषता हास मानी है।[2] इसके उदाहरण प्रतिज्ञायौगन्धरायण, प्रतिमा और मध्यमव्यायोग में पाए जाते हैं।

१०. दण्डी ने 'अवन्तिसुन्दरीकथा' में भास के काव्यगुणों का वर्णन करते हुए बताया है कि—(१) मुख-प्रतिमुख सन्धियाँ इनके काव्यों में स्पष्ट लक्षित

---

१. विशेष देखिए—पुशलकर—Bhasa : A Study, पृ० ३७–४२
२. भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।
....
केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय॥ (प्रस्तावना, प्रसन्नराघव)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

होती हैं तथा (२) अनेक वृत्तियों के द्वारा इन्होंने अपने काव्य में विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति की है।[१]

इस प्रकार बाह्य साक्ष्यों में बाण, वाक्पति, जयदेव और दण्डी के द्वारा निर्दिष्ट विशेषताओं पर ध्यान देने से यह निश्चित हो जाता है कि त्रिवेन्द्रम् में सम्पादित भास-नाटकचक्र के सभी नाटक भास की प्रामाणिक कृतियाँ हैं।

भास के तेरह नाटकों को कथावस्तु के आधार पर यों बाँट सकते हैं—

१. उदयन-कथा—इन ऐतिहासिक नाटकों के प्रणयन में कवि को गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' से पर्याप्त सहायता मिली होगी ऐसी डा० कीथ की मान्यता है।[२] पर भास के नाटकों में वर्णित घटनायें अधिक सत्य और गम्भीर हैं जब कि कथासरित्सागर आदि में केवल सामान्य उल्लेख मात्र है। इसलिए उदयन की कथाओं के लिए भास पर अधिक विश्वास किया जाता है अपेक्षाकृत उक्त दो ग्रन्थों के।[३]

२. महाभारत-कथा—महाकवि भास ने महाभारत के कथानकसूत्रों को लेकर मनोरम कल्पना का उसमें सम्मिश्रण करके उसे नाटकीय परिधान दिया है। कई नाटकीय परिस्थितियाँ कवि की मौलिक प्रतिभा का प्रतीक हैं। इन्होंने कई नाटकों के पात्रों के चरित्र भी अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार परिवर्तित कर लिए हैं जैसे दुर्योधन, कर्ण, हिडिम्बा, घटोत्कच आदि के।

३. कृष्ण-कथा—कृष्णकथा पर आधारित 'बालचरित' का मूल स्रोत डा० स्वरूप और डा० ध्रुव ने हरिवंशपुराण को माना है पर उसे मानने पर भास का समय ४थी शती ईस्वी मानना होगा जो कि उचित नहीं, अतः डा० वेबर का ही मत ग्राह्य मालूम होता है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि इस नाटक में कृष्ण का

---

१. सुविभक्तमुखाद्यङ्गैर्व्यक्तलक्षणवृत्तिभिः।
परेतोऽपि स्थितो भासः शरीरैरिव नाटकैः ॥ ११ ॥

२. देखिए—कीथ-कृत संस्कृत ड्रामा, पृ० १००।

३. 'Bhasa' treats the incident in a more realistic and serious fashion than dces the light-hearted account of the Kathasaritsagar and herein he is probably more faithful to the Udayana legends.'

J. A. O. S. 43 page 169.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आरम्भिक काल का रूप चित्रित है। डा० कीथ ने विष्णुपुराण और भागवतपुराण से भी पूर्व बालचरित की रचना मानी है।

४. राम-कथा—प्रतिमा की कथावस्तु का मूल आधार वाल्मीकीय रामायण के द्वितीय-तृतीय स्कन्ध हैं जिनसे कवि ने कोरा कथानक लिया है। उसकी साज-सज्जा में कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा का विनियोग किया है। इनके चरित्र रामायण की अपेक्षा अधिक उदात्त और भावोद्बोधक हैं। अभिषेक नाटक के लिए कवि ने किष्किन्धा, सुन्दर, और युद्ध काण्डों में सामग्री संचयन किया है।

५. लोक-कथा (मौलिक कल्पना)—चारुदत्त के लिए किसी निश्चित स्रोत का पता नहीं चलता। एक वेश्या का निर्धन वणिक्प्रेम तो लोक-कथा के रूप में बहुत समय से प्रचलित था। वैसे कवि की मौलिक कल्पना भी हो सकती है। यों तो जातक की 'सुन्दरी-कथा' को संभावित स्रोत माना जाता है और इसकी बहुत कुछ संभावना भी है। डा० स्वरूप की निश्चित धारण है कि अविमारक की कथा कवि-कल्पना-प्रसूत है। डा० ध्रुव इसे लोकगीतों पर आधृत मानते हैं।

भासनाटकचक्र के नाटकों का संक्षिप्त परिचय

१. स्वप्नवासवदत्तम्—इस नाटक में ६ अङ्क हैं। इसमें स्वप्न को यथार्थ में परिणत करके कवि ने सफल प्रेम का मनोरम चित्रण किया है। मन्त्री यौगन्धरायण अपने बुद्धि-वैभव के बल पर उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराता है। वह 'वासवदत्ता अग्नि में जल गई' ऐसा प्रवाद फैलाकर पद्मावती से विवाह कराता है जिससे उदयन पुनः राज्य प्राप्त करते हैं।

२. प्रतिज्ञायौगन्धरायण—यह नाटक ४ अङ्कों का है। स्वप्नवासवदत्तम्' के पूर्व की कथा इसमें निबद्ध है। मन्त्री यौगन्धरायण के प्रयत्न से वत्सराज उदयन और अवन्तिकुमारी वासवदत्ता के रहस्यमय (गुप्त) परिणय और मन्त्री के कौशल तथा दृढ़ प्रतिज्ञा का रोमांचक वर्णन है।

३. ऊरुभंग—इस एकांकी में भीम के प्रतिज्ञा-निर्वाह की दृढ़ता की भयानक (रौद्र) एवं वीररसपूर्ण वर्णन है। भीम और दुर्योधन के गदायुद्ध

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में दुर्योधन की कारुणिक मृत्यु का वर्णन है। संस्कृत नाट्य-परम्परा में एक मात्र यही दुःखान्त नाटक है।

४. दूतवाक्य—यह एक अङ्क का व्यायोग है। भास ने इसमें सर्वथा विरुद्ध प्रकृति के दो पात्रों को चुना है, एक जहाँ अपनी उदारता के कारण ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति का है वहाँ दूसरा ईर्ष्या की ज्वाला में जलता हुआ निम्नगामी मनोवृत्ति का प्रतीक। महाभारत-युद्ध के विनाशकारी परिणाम से सबकी रक्षा के लिए पाण्डवों की ओर से श्रीकृष्ण का सन्धि-प्रस्ताव लेकर जाना पर दुर्योधन की सभा से विफल हो कर लौटना इसमें वर्णित है। कृष्ण और दुर्योधन के कथोपकथन में नाटकीयता का चरम निदर्शन है।

५. पंचरात्र—तीन अङ्कों के इस समवकार में तथ्य (फैक्ट्स) और कथ्य (फिक्शन) का सम्यक् सम्मिलन हुआ है। विराट् पर्व के कथासूत्र को लेकर कवि ने इस सुन्दर नाटक का कल्पनापूर्ण निर्माण किया है। द्रोणाचार्य को दक्षिणा-रूप में पाण्डवों को आधा राज्य देने का बचन और अज्ञातवास की स्थिति में पाँच रात्रि के भीतर ही पाण्डवों के मिलने पर दुर्योधन का आधा राज्य दे देना ही इसकी कथावस्तु है।

६. दूतघटोत्कच—अभिमन्यु-वध के पश्चात् अर्जुन के प्रतिज्ञा करने पर श्रीकृष्ण का घटोत्कच को धृतराष्ट्र के पास विनाश की सूचना देने के लिए भेजना और अन्त में भयंकर युद्ध। उद्धत वीर घटोत्कच और दुर्योधनादि का वार्तालाप बड़ा सफल बन पड़ा है।

७. कर्णभार—प्रस्तुत उत्सृष्टिकांक में कर्ण का ब्राह्मणवेशधारी इन्द्र को अपना कवच-कुण्डल देना वर्णित है। इसमें कर्ण के उज्ज्वल चरित्र एवं दानशीलता का प्रभावशाली निरूपण किया गया है।

८. मध्यमव्यायोग—इस व्यायोग में मध्यम पाण्डव (भीम) का मध्यम ब्राह्मण कुमार की रक्षा करना और हिडिम्बासे अन्त में मिलन वर्णित है। पुत्र का पिता को न पहचानते हुए धृष्टतापूर्वक मां के सन्मुख ला उपस्थित करना बड़ा ही सरस और कौतूहलपूर्ण है।

९. प्रतिमा—सात अङ्कों के इस नाटक में राम-वनवास से रावणवध तक की कथा वर्णित है। भरत का ननिहाल से अयोध्या आते हुए प्रतिमा मन्दिर में

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपने पिता राजा दशरथ की 'प्रतिमा' दिवंगत पूर्वजों में देख उनकी मृत्यु का अनुमान लगा लेना वर्णित है।

१०. अभिषेक—कुल छः अंक हैं। रामायण के किष्किंधा, सुन्दर और युद्ध काण्डों की संक्षिप्त कथा पर इसका कथानक आधारित है और अन्त में रामराज्याभिषेक भी वर्णित है।

११. अविमारक—छः अंक है। राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुरंगी का राजकुमार अविमारक से प्रणय एवं विवाह वर्णित है। अविमारक का संकेत कामसूत्रों में है अतः इसे लोककथानक कह सकते हैं।

१२. चारुदत्त—चार अंकों का एक 'प्रकरण' है। शूद्रक के प्रसिद्ध 'मृच्छकटिक' नाटक का इसे आधार माना जाता है। इस अधूरे नाटक में निर्धन पर सदाचारी ब्राह्मण चारुदत्त तथा गुणवती वेश्या वसन्तसेना का प्रणय वर्णित है। बृहत्कथा में वेश्या'ब्राह्मण के प्रेम पर आधारित कई कहानियाँ है, बाद में वे लोककथाओं के रूप में प्रचलित हो गईं, अतएव इस नाटक का भी आधार यही लोककथाएँ मानी जा सकती हैं।

१३. वालचरित्र—यह एक पौराणिक नाटक पाँच अंकों का है। इसका उपजीव्य हरिवंश पुराण माना जाता है। इसमें कृष्ण-जन्म से कंसवध तक की कथाएँ वर्णित हैं।

नाटकों की सामान्य विशेषताएँ—भास के पात्र चाहे स्त्री हों या पुरुष सामान्य भूमिका पर ही सर्वदा दृष्टिगत होते हैं। उन्हें हम कल्पनालोक के प्राणी नहीं कह सकते, जिसमें वायवीय तत्त्वों के कारण कुछ अलौकिकता या अस्वाभाविकता आ गई हो। यही कारण है कि श्रोता या पाठक इनके नाटकों को देखते-सुनते पात्रों के साथ पूरी सहानुभूति प्रकट करता है एवं अपनी भावनाओं की मानसिक क्रिया-प्रतिक्रियाओं को उनमें बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से पाता है। देवगुण-सम्पन्न पात्र जैसे राम; सीता, लक्ष्मण आदि में भी हम मानवीय भावों की हो झलक पाते हैं। उनके विचारों और क्रियाओं में कहीं भी असाधारणता नहीं आने पाई है।

जहाँ तक पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्र-विकास का प्रश्न है हम भास

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को विल्कुल आधुनिक युग के नाटककारों के साथ पाते हैं। श्री मीरवयं ने भास के इस गुण की बड़ी प्रशंसा की है।[1]

इन्होंने अपने नाटकों में जितने पात्रों का विनियोजन किया है सभी सार्थक हैं और सवका अपने-अपने स्थान पर एक विशेष महत्व है। कवि ने व्यक्तिवैचित्र्य पर सर्वथा घ्यान दिया है और यही कारण है कि एक वर्ग के प्रतीक के रूप की अपेक्षा व्यक्तिगत विशेषताओं से युक्त पात्र हमारे सामने आते हैं।

महाभारत-कथा पर आधारित नाटकों के चरित्र-चित्रण में यद्यपि कवि को स्वतन्त्रता नहीं थी, फिर भी कर्ण और दुर्योधन का चरित्र हमारे हृदय में उदात्त भावनाओं को उत्पन्न करने में असमर्थ है और इस प्रकार सहज ही वे सहानुभूति के पात्र वनते हैं।

लोककथाओं पर आश्रित नाटकों में कवि को कल्पना की रंगीनी का विनियोग करने की काफी छूट थी फिर भी उनमें अस्वाभाविकता नहीं है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भास के पात्र कालिदास और वाण की भाँति न तो रोमांटिक और कल्पनाप्रवण हैं, न भवभूति की भाँति काव्यात्मक और भावुक और न तो भट्टनारायण की भांति अति ओजस्वी, न श्रीहर्ष की भाँति अति काल्पनिक और न शूद्रक की भाँति हास्यप्रधान और अति यथार्थ ही हैं।

नाट्यकला—नाटककार भास ने अपने नाटकों की विषयवस्तु का चुनाव बड़ी बुद्धिमानी और कुशलता से किया है। इनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य के साथ यथा-अवसर ओजगुण की भी प्रधानता पाई जाती है। घटनाओं का विधान अत्यन्त स्वाभाविक होते हुए भी प्रभावोत्पादक और कौतूहलपूर्ण है। पात्रों के चरित्रचित्रण में व्यक्ति वैचित्र्य के द्वारा सजीवता ला देना भास का प्रिय कौशल है। वाक्य, सरल, चुटीले और भावोत्तेजक होने के कारण कथोपकथन के स्थलों पर विशेष नाटकीयता ला देते हैं। घटनाओं का निश्चित लक्ष्य की ओर उत्तरोत्तर वढ़कर प्रभावान्वित करना तथा अन्तर्द्वन्द्व और घात-घतिघातों में पड़े हुए पात्र की चरित्रगत विशेषताओं का उद्घाटन करना

---

१. '···in psychological subtlety Bhasa is almost modern.'
J. A. S. B. 1917 p. 278

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इनके नाटकों का मुख्य गुण है। इनके नाटक अपने युगधर्म और सांस्कृतिक तथा सामाजिक गति-विधियों के प्रतिनिधि माने जाते हैं।

इनके नाटकों को देखने से पता चलता है कि रामचरित्र से सम्बद्ध नाटकों में न तो वह रसवत्ता ही पाई जाती है और न चरित्रों का चित्रण ही उतना प्रभावपूर्ण हो सका है जितना कि एक रससिद्ध नाटककार के लिए अपेक्षित है। महाभारत या कृष्णचरित्र से सम्बन्ध रखने वाले कथानकों में नाटककार की भावनायें अधिक उदात्त हैं और रसानुकूल घटना-विधान का नियोजन किया गया है अतः ये नाटक मध्यम श्रेणी में आते हैं। तीसरी स्थिति उन नाटकों की है जो उदयन-कथा पर आधारित हैं। इन्हें हम कवि की सर्वोत्कृष्ट रचनायें मान सकते हैं तथा इनमें नाटककार या कवि पाठकों या दर्शकों को भावमग्न करने में अधिक सफल हुआ है। प्रणय जैसे व्यापक विषय को लेकर कवि ने बड़ी सफलता से मानव-मन की भावनाओं का रंगीन चित्रण किया है। महाकवि भास आदर्शवादी नाटककार के रूप में हमारे सामने आते हैं। उन्होंने सामाजिक और पारिवारिक आदर्शों का निर्वाह बड़ी मनोरमता से किया है। नाटकीय व्यंग्य से दर्शक या पाठक के कौतूहल का पूर्ण वर्द्धन हुआ है। 'प्रतिज्ञा' के द्वितीय अङ्क में वासवदत्ता के माता-पिता जब अपनी पुत्री के भावी पति के बारे में विचार करते हैं उसी समय कंचुकी का 'वत्सराज' कहना और बन्दी उदयन के आने का समाचार मिलना 'घटनासाहचर्य' का उज्ज्वल उदाहरण है। ऐसा ही 'अभिषेक' के पाँचवें अङ्क में सीता-रावण-संवाद के सिलसिले में द्रष्टव्य है।

भास के नाटक उस समय रचे गए जब कि नाटक-कला का पूर्ण विकास नहीं हो पाया था, इस कारण भी कुछ त्रुटियां इनके नाटकों में आ गई हैं। कहीं-कहीं 'निष्क्रम्य' 'प्रविशति' आदि द्रुतगति वाले नाटकीय निर्देशों से अस्वाभाविक औपचारिकता सी आ गई है। कवि ने कथानक-सूत्रों के संघटन में कहीं-कहीं समय की अन्विति का ध्यान नहीं दिया है। कृष्ण के निर्जीव शस्त्रास्त्रों को मानवरूप में रङ्गमंच पर उपस्थित करके सारी स्वाभाविकता नष्ट कर दी गई है। नाट्यशास्त्र के द्वारा वर्जित दृश्यों (युद्ध, मरणादि) को भी इन्होंने 'ऊरुभंग' आदि में सामाजिक के सम्मुख उपस्थित किया है। इनके नाटकों

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की अस्वाभाविकता का कारण अपरिचित पात्रों का रंगमंच पर सहसा उपस्थित होना भी है।[1] इसी प्रकार की त्रुटि 'स्वप्नवासवदत्तम्' में 'वासवदत्ता जली नहीं है' ऐसा कहकर वाद की घटनाओं को नीरस और सामान्य बना देने में है। सामाजिकों की सारी उत्कण्ठा भविष्य के परिणाम की अनिश्चितता इस भावना के वद्धमूल होने पर समाप्तप्राय हो जाती है।

कतिपय त्रुटियों के होते हुए भी भास की कला महान् है। उसमें प्रौढत्व न होने पर भाव-गांभीर्य और रमणीयता है। वीर रस के तो ये सफल नाटककार हैं ही पर मानव के मन का कोमल से कोमलतम पक्ष भी इनकी लेखनी के लिए अछूता नहीं। इन्होंने प्रणय, करुणा एवं विस्मय का बड़ा सुन्दर निर्वाह अपनी कृतियों में किया है।

भास को शैली—शैली की सारी विशेषताओं से विशिष्ट भास कवि की अभिव्यंजना बड़ी ही प्रभावोत्पादक है। प्रसाद और ओज के साथ-साथ माधुर्य की संयोजना सहृदयों को मुग्ध कर देती है। पूरे के पूरे नाटक पढ़ जाइए, कहीं भी दूरारूढ़ कल्पना, समासबहुलता या प्रवाह में अवरोध नहीं मिलेगा। इसे कुछ विद्वानों ने रामायण का प्रभाव माना है। इनकी शैली अलंकारों पर नहीं, भावनाओं के निखार पर गर्व करती है जिससे कृत्रिमता की जगह स्वाभाविकता आ गई है। सरलता से समझ में आने वाले उन अलङ्कारों का प्रयोग भास ने किया है जिनसे वस्तु चित्र और भी स्पष्ट हो गए हैं। भावबोधन में जैसी सफलता इन्हें मिली, इनके पूर्ववर्ती किसी भी कवि को नहीं। इसका एकमात्र कारण इनकी सरल शैली और अद्भुत मनोवैज्ञानिक दृष्टि ही है। इनके काव्य को हम मानव-मन के अन्तस् की विभिन्न स्थितियों में होने वाली प्रतिक्रियाओं का संकलित-चित्र (एलवम) आसानी से कह सकते हैं। पिता की मृत्यु का कारण जान कर भरत के हार्दिक उद्गारों की मार्मिक अभिव्यञ्जना कवि ने एक ही लघु श्लोक में कर दी है—'तुम्हारी पुत्र के प्रति कितनी प्रगाढ़ ममता थी और हमारा भाई के प्रति यह ऐसा

---

१. विशेष के लिए देखिए—पुशलकर : Bhasa : A study , P. 1024

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रेम है ?"[१] बात सीधी पर बड़ी मर्मस्पर्शिणी है। वे प्रकृति को मानवीय भावों के प्रतिबिम्ब रूप में उपस्थित करते हैं। पाठक या दर्शक इन वर्णनों को सुनते ही भावमयता की उच्च भूमिका में पहुंच जाता है और साधारणीकरण की स्थिति आ जाती है।[२]

भास के नाटकों में तुलसी के समान पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्धों एवं आचारों का आदर्श उपस्थित किया गया है।[३]

भास ने लोकोक्तियों के द्वारा गागर में सागर भर दिया है।[४] भास के संश्लिष्ट चित्र नाटकों के कथानक विशेष उत्पन्न कर देते हैं।[५]

---

१. अद्य खल्ववगच्छामि पित्रा मे दुष्करं कृतम्।
कीदृशस्तनयस्नेहो भ्रातृस्नेहोऽयमीदृशः॥ प्रतिमा ४।१२

२. देखिए—अविमारक ४।४, प्रतिमा २।७, तथा स्वप्नवासवदत्तम् ४।६

३. देखिए—सूर्य इव गतो रामः सूर्य दिवस इव लक्ष्मणोऽनुगतः।
सूर्यदिवसावसाने छायेव न दृश्यते सीता॥ प्रतिमा २।७
तथा
गोपहीना यथा गावो विलयं यान्त्यपालिताः।
एवं नृपतिहीना हि विलयं यान्ति वै प्रजाः॥ प्रतिमा ३।२०

४. 'आपदं हि पिता प्राप्तो ज्येष्ठपुत्रेण तार्यते।' १९। मध्यमव्यायोग।
'रुष्टोऽपि कुञ्जरो वन्यो न व्याघ्रं घर्षयेद्वने।' ४४। मध्यमव्यायोग।

५. स्वप्न० १।१६ तथा प्रतिमा १।३ और १।१८

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मध्यमव्यायोग-समालोचना

कथावस्तु—भास ने यद्यपि इस नाटक का कथानक महाभारत से लिया है पर उसे व्यक्त किया है विशेष साज-सज्जा से युक्त प्रभावोत्पादक शैली में। अस्थि-पंजर तो प्राचीन है पर उसमें मांस, मज्जा और रक्त का संचार सर्वथा नवीन और स्फूर्तिमय है। अब हमें देखना है कि मध्यमव्यायोग में कवि ने प्राचीनता का कितना अंश ग्रहण कर किस कल्पना और मौलिक उद्भावना से उसे पूर्ण बनाया है।

मूलस्रोत—हमें प्रस्तुत 'मध्यमव्यायोग' की कथा का मूलरूप महाभारत के 'हिडिम्बवध पर्व'[1] में मिलता है जिसमें भीम के द्वारा राक्षसी डिहिम्बा के भाई हिडिम्ब का वध वर्णित है। भीम का हिडिम्बा से मिलन, प्रेम तथा विवाह के पश्चात् घटोत्कच की उत्पत्ति भी महाभारत में निबद्ध है, जिसकी मृत्यु रणक्षेत्र में कर्ण के द्वारा होती है।

घटोत्कच का अपने अज्ञात पिता भीम से युद्ध और हिडिम्बा-सम्मिलन सर्वथा कवि की कल्पना का परिणाम है। इस घटना के नियोजन से नाटक की नाटकीयता का विकास तो हुआ ही साथ ही स्वारस्य की भी वृद्धि हुई। भीम और घटोत्कच के चरित्र को स्पष्ट करने और भावों में तनाव लाने के लिए कवि ने ब्राह्मण परिवार को अच्छा माध्यम चुना है। यद्यपि यह बात खटकती है कि माता के आदेशानुसार उसे ब्राह्मण कुमार को नहीं ले जाना चाहिए फिर भी वह ब्राह्मण परिवार को कष्ट देता है, पर हो सकता है, अन्य मनुष्य के अभाव में ब्राह्मण कुमार को ही ले जाने की मजबूरी आई हो।

हिडिम्बा और भीम-मिलन की पूर्वपीठिका के रूप में ब्राह्मण परिवार के प्रयोग की प्रेरणा बहुत कुछ संभव है कि कवि को 'ऐतरेय ब्राह्मण[2]' के अन्तर्गत 'शुनाशेप' की कथा से मिली हो। डॉ० कीथ[3] के निर्देशानुसार पवोलिनि ने इस कल्पना का मूल महाभारत के बकवध[4] को ही माना है।

---

१. हिडिम्बवध पर्व। प्रथम स्कंध, ९ अध्याय।

२. ऐतरेय ब्राह्मण : सप्तम अध्याय श्लोक० १४–१८।

३. देखिए कीथ : संस्कृत ड्रामा, पृ० ९५।

४. महाभारत : बकवध-पर्व अ० स्कंध १६०–१६१ अध्याय।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नाटक की कथावस्तु को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि भास में घटना-संघटन की अद्भुत कला थी। उपर्युक्त स्रोतों के मूलरूप में कवि ने आमूल परिवर्तन करके ऐसी परिस्थिति उत्पन्न की है कि भाव एकोन्मुख होकर रस की अनुभूति सहज ही करा देते हैं। शुनःशेपोपाख्यान के अजीगर्त और मध्यम व्यायोग के केशवदास में बड़ा अन्तर है। एक में पाशविक वृत्ति की प्रधानता है, वह अपनी बुभुक्षा की शान्ति के लिए अपने पुत्र को बेचने और मार डालने में भी नहीं हिचकता पर दूसरे में पिता का संवेदना और अपार वात्सल्ययुक्त हृदय है। उसमें मानवोचित कमजोरियाँ और मजबूती भी है। वह अपने बच्चे की रक्षा के लिए आत्मसमर्पण करता है, अपने संत्रस्त परिवार की रक्षा के लिए भीम से प्रार्थना करता है।

महाभारत के घटोत्कच को देखकर भास के घटोत्कच से तुलना करने पर काफी भिन्नता मिलेगी। एक का शिर लोमहीन (घटवत् सुचिक्कण) है[1] पर दूसरे के पिंगल केशादि की प्रभूत प्रशंसा की गई है।[2] हिडिम्बा और घटोत्कच में भास ने मानवीय गुणों का पर्याप्त आरोप किया है। अतः उसकी राक्षसी वृत्तियाँ मन्द पड़ गई हैं। घटोत्कच के दया, संकष्टापन्न के प्रति सहानुभूति और पूज्यों के प्रति आदर आदि भावों की स्वयं भीम ने प्रशंसा की है। महाभारत की हिडिम्बा एक कर्कशा राक्षसी है पर भास ने उसे बड़ा कोमल और मानव-सुलभ प्रेमयुक्त हृदय दिया है। स्पष्ट है कि वह किसी मनुष्य की हत्या नहीं करना चाहती थी अपितु भीम के ही दर्शन की लालसा से उसने इस षड्यन्त्र की रचना की थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि भास ने इधर-उधर बिखरे कथासूत्रों को एक रङ्गीन वातावरण और नवीन साँचे में ढालकर अभिनेय बना दिया है। भास में कथानक-निर्वाह की सबसे बड़ी विशेषता है सब प्रकार की अस्वाभाविकताओं का सर्वथा त्याग। शुनःशेप की मुक्ति वरुणदेव की कृपा और दैवी चमत्कार

---

१. 'घटो हास्योत्कच (ह अस्य उत्कचः) इति माता ते प्रत्यभाषत।
अब्रवीत्तेन नामास्य घटोत्कच इति स्म ह ॥'

२. 'तरुणरविकरप्रकीर्णकेशो' श्लो० ४। 'कनककपिलकेशः' श्लो० ५। 'दीप्तविश्लिष्टकेशः' श्लो० २६।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से होती है पर ब्राह्मणकुमार की मुक्ति का विधान महापराक्रमी भीम की उदारता और आत्मसमर्पण के द्वारा करके भास ने भारतीय आदर्श का चरम निदर्शन किया है।

गृहीत रूप—स्थापना (नाटकीय प्रस्तावना) के वाद रङ्गमञ्च पर (पर्याप्त जिज्ञासा और कौतूहल उत्पन्न कराने के वाद) एक वृद्ध अपनी वृद्धा पत्नी और तीन युवा पुत्रों के साथ उपस्थित होता है। उसके पीछे विकराल आकृति वाला घटोत्कच भी उसे पकड़ने की इच्छा से आता है। करुण रस का भयानक रस की भूमिका में यहीं वीजवपन हो जाता है। सामाजिक में यही जिज्ञासा होती है कि एक निर्धन वृद्ध ब्राह्मण को यह क्रूर दैत्य क्यों कष्ट दे रहा है? इसका उत्तर वाद में मिलता है—'माँ (हिडिम्वा राक्षसी) के पारण हेतु एक मनुष्य ले जाने के लिए। पास ही में पाण्डवों की कुटी है यह वतलाकर आशा का अङ्कुरण और वाद में यह वताकर कि वे सव यज्ञ में गये हैं सवको निराश वना दिया गया है। इसी प्रकार काफी देर तक सामाजिकों को आशा और निराशा के वीच थपेड़े खाने के लिए छोड़ दिया जाता है। असहायावस्था में वृद्ध ब्राह्मण स्वयं राक्षस के पास जाता है कि वही कुछ मुक्ति का उपाय वतलाए। एक क्रूर-क्रर्मा राक्षस से दया की भिक्षा का यह दृश्य वड़ा करुणोत्पादक है। यह वतलाता है कि अपने परिवार की मुक्ति के लिए उसे एक लड़के को वलिदान करना ही होगा। वृद्ध पिता ने अपने को ही सवसे पहले समर्पित किया पर उसका समर्पण घटोत्कच को स्वीकार नहीं हुआ। यहाँ पुनः दर्शकों के मन में भविष्य के प्रति अनेक आशङ्कायें उठने लगती हैं। 'वृद्धा ब्राह्मणी ने अपने को समर्पण कर कृतकृत्य माना पर उसको भी स्त्री होने के कारण घटोत्कच नहीं ले जा सका। अवशिष्ट तीनों भाई अपने-अपने कर्तव्य का पालन करना चाहते हैं पर अन्त में मध्यम को ही इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए अपने को प्रस्तुत करना पड़ता है। इस समय मध्यम के प्रति सबकी सहृदयतापूर्ण सहानुभूति सञ्चित हो जाती है। उसका वलिदान सामान्य मानव की भूमिका से उसे काफी उन्नत कर देता है। यह दृश्य वड़ा ही रोमाञ्चक वन पड़ा है। मृत्यु के पूर्व वह तृषा-शान्ति के लिए निकट सरोवर पर जाता है। घटोत्कच का उसे स्वेच्छा-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नुकूल जाने की निःसङ्कोच आज्ञा दे देना, अत्यन्त कठोर व्यक्ति में कहीं एक कोमल और दयापूर्ण होने की ओर संकेत करता है। कठोरता में कोमलता का यह स्पर्श एक ओर रसात्मकता की वृद्धि करता है तो दूसरी ओर व्यक्ति-वैचित्र्य भी उपस्थित करता है। मध्यम ब्राह्मणकुमार के न लौटने पर घटोत्कच वृद्ध ब्राह्मण से उसका नाम पूछता है और अपने अनुचित व्यवहार पर स्वयं क्षोभ भी प्रकट करता है। यहाँ दर्शकों के मन में ब्राह्मणकुमार के प्रति अनेक भाव उठते हैं और अधिकांश यही निश्चित-सा होता है कि शायद वह घटोत्कच को धोखा देना चाहता है। बाद में घटोत्कच उसके भाई से संकेत पाकर 'मध्यम' कहकर पुकारता है और भीम को अपने सामने उपस्थित पाता है। भीम के इस एकाएक प्रादुर्भाव से दर्शकों के मन पर घिरी हुई दैन्य और नैराश्य की भावनायें धीरे-धीरे छँटने लगती हैं। यहां से कथानक में एक असंभावित मोड़ उपस्थित होता है। एक ओर भीम अपने को 'मध्यम' सिद्ध करने में युक्ति पर युक्ति देते हैं, दूसरी ओर पूर्वपरिचित ब्राह्मणकुमार उपस्थित होता है। वृद्ध ब्राह्मण की प्रार्थना पर उसके परिवार की रक्षा के लिए भीम बद्धपरिकर, अङ्कुरित आशा को और भी अभिसिंचित करते दिखाई देते हैं। घटोत्कच के सम्मुख भीम को उपस्थित देखकर एक बार सारे दर्शक पुनः आशा और निराशा के बीच दोलायमान होने लगते हैं और अन्त में भीम की इस शर्त पर कि बलपूर्वक ही वे उसकी माता के पास जायँगे, पुनः एक समस्या आती है। समान बलवाले दो योद्धाओं के द्वन्द्व युद्ध का क्या परिणाम होगा, इसकी प्रतीक्षा में सामाजिकों की आतुरता नाटक की सफलता का ही प्रमाण है। अन्त में सबका हिडिम्बा के पास पहुँचना 'प्राप्त्याशा' की स्थिति का स्पष्ट संकेत है। घटोत्कच शीघ्र ही मां के पास पहुँचकर सारा वृत्तान्त कह सुनाता है। वह द्वार पर आकर देखती है तो भीम को देखकर उसका असंभावित अप्रत्याशित भावपरिवर्तन दर्शकों में एक तीव्र कौतूहल का सर्जन करता है। हिडिम्बा की प्रतिक्रिया का घटोत्कच, वृद्ध ब्राह्मण आदि पर बड़ा विचित्र प्रभाव पड़ता है। वह प्रसन्नतापूर्वक पर चुपके से भीम के कान में पूरे षड्यन्त्र का कारण बतला देती है। यद्यपि यहाँ हिडिम्बा का एक अपरिचित व्यक्ति के कान में बात करना अस्वा-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भाविक और त्रुटिपूर्ण है फिर भी रसवत्ता में कमी नहीं आती। बाद में इसका पता चलता है कि वास्तव में हिडिम्बा भीम से ही मिलना चाहती थी मानव का आहार नहीं। यही 'फलागम' है जहाँ भीम और हिडिम्बा मिलकर प्रसन्न होते हैं। ब्राह्मण के पैरों पर गिरता हुआ घटोत्कच मानवता की पशुता पर विजय का उद्घोष करता है। यह सुखान्त नाटक भरतवाक्य से समाप्त होता है।

शीर्षक—प्रस्तुत नाटक का शीर्षक दो शब्दों के योग से बना है—मध्यम और व्यायोग। इसकी व्याख्याएँ निम्न प्रकार से होती हैं—

(१) पाण्डवों में 'मध्यम' भीम पर आधारित व्यायोग (एक विशेष नाटक-प्रकार[1])।

पाण्डुपुत्रों में मध्यम किसे माना जाय इसमें मतभेद है 'वेणीसंहार' में अर्जुन ने तो स्वयं अपना परिचय 'मध्यम' कहकर दिया है।[2] भास ने भीम को कुन्तीपुत्रों में मध्यम मानकर अपने 'पञ्चरात्र' के अभिमन्यु से 'मध्यमस्तातः' तथा 'मध्यम-व्यायोग' में स्वयं उन्हीं के मुख से 'भ्रातृणामपि मध्यमः' कहलवाया है। कुन्ती ने भी 'भागवत' में भीम को ही मध्यम माना है।[3]

इस प्रकार इसकी व्याख्या होगी—कुन्ती के पुत्र पाण्डवों में मध्यम भीम को लक्ष्य करके लिखा गया व्यायोग (एकांकी नाटक)।[4]

(२) मध्यम पाण्डव भीम का हिडिम्बा से विशिष्ट (पुनः) मिलन या संयोग जिसमें वर्णित हो ऐसा नाटक।[5]

(३) पाण्डवों में मध्यम भीम और ब्राह्मणकुमारों में मध्यम युवक

---

१. मध्यमपाण्डुपुत्रमधिकृत्य कृतो व्यायोगः।

२. 'प्रणमति पितरौ वां मध्यमः पाण्डवोऽयम्।'—वेणीसंहार, अंक ५।२७।

३. तं ममाचक्ष्व वार्ष्णेय कथमद्य वृकोदरः।
आस्ते परिघबाहुः स मध्यमः पाण्डवो बली ॥—भगवद्यान पर्व ९०।२७।

४. मध्यमः भीमः कुन्तीतनयत्वावच्छिन्नपाण्डवेषु तस्यैव मध्यमत्वात्! मध्यममुद्दिश्य कृतो व्यायोगः इति मध्यमव्यायोगः।

५. मध्यमस्य मध्यमपाण्डवस्य भीमस्य (राक्षसी) हिडिम्बया सह विशेषेण आयोग-संयोगः यस्मिन्निति मध्यमव्यायोगः।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का विनियोजन जिस नाटक में किया गया हो, वह है मध्यमव्यायोग।[1]

इस प्रकार यद्यपि महाकवि भास ने इस नाटक का कुछ अन्य भी नाम दिया हो तथापि 'मध्यमव्यायोग' शीर्षक के द्वारा सम्पूर्ण नाटक की कथावस्तु सिमट कर एक शब्द में बँध जाती है।

व्यायोग—व्यायोग एकांकी नाटक का वह प्रकार है जिसमें प्रसिद्ध पौराणिक इतिवृत्त होता है। उसका नायक इतिहास प्रसिद्ध धीरोद्धत होता है। गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं होती और ओजगुण की प्रधानता होती है अर्थात् हास्य-श्रृङ्गार से भिन्न वीर, रौद्र आदि रस होते हैं। उसमें शौर्य, विद्या, कुल, धन और रूपादि की स्पर्धा से उत्पन्न संघर्ष होते हैं। कैशिकी वृत्ति का उसमें प्रयोग नहीं होता। सारी घटनाएँ एक ही दिन में घटती हैं अर्थात् एक ही दिन का चरित उसकी कथावस्तु होती है और सबका अभिनय एक ही अङ्क में किया जाता है। इसमें पुरुष पात्रों की वहुलता होती है।[2]

प्रस्तुत नाटक भी एक ही दिन की घटनाओं पर आधारित एकांकी है। इसके नायक प्रख्यात पाण्डव योद्धा भीम हैं। उनमें धीरोद्धत के सभी गुण विद्यमान हैं। हिडिम्वा और ब्राह्मणी दो ही स्त्री पात्र हैं और पुरुष पात्रों में भीम, घटोत्कच, वृद्ध ब्राह्मण और उसके तीन पुत्र आते हैं। इसमें घटोत्कच और भीम का युद्ध स्त्रीनिमित्तक न होकर ब्राह्मण परिवार की रक्षा और वलावल निर्णय के हेतु हुआ है। इसमें हास्य या श्रृङ्गार का कहीं भी पुष्ट नहीं है। नाटक का आरम्भ भयानक वातावरण में होता है। घटोत्कच के रौद्र रूप को देखकर ब्राह्मण परिवार में भय का संचार हो जाता है और वे डर के मारे भागते हुए दिखाए गए हैं। घटोत्कच के द्वारा रखे गए प्रस्ताव के लिए ब्राह्मणकुमारों का

---

१. मध्यमौ भीमः ब्राह्मणकुमारश्च व्यायुज्येते अस्मिन् इति नाटकम्।
तथा इसी मत का समर्थन पुशलकर ने निम्न शब्दों में किया है—
......'the work where the two Madhymas are brought together'. Bhasa : A study P. 201.

२. ख्यातेतिवृत्तो व्यायोगः ख्यातोद्धतनराश्रयः।
हीनो गर्भविमर्शाभ्यां दीप्ताः स्युर्डिमवद्रसाः॥
अस्त्रीनिमित्तसंग्रामो जामदग्न्यजये यथा।
एक हाचरितैकांको व्यायोगो वहुभिर्नरैः॥ धनंजय : दशरूपक ३।६०–६२।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आत्मसमर्पण करुण रस का अङ्कुर करता है तथा बाद में भीम का आगमन अद्‌भुत रस उत्पन्न करके वीर रस की भूमिका तैयार करता है। युद्ध का वर्णन दोनों उक्त रसों का बराबर वर्द्धन करता है। अन्तिम दृश्य में भी हम हिडिम्बादि के व्यवहार देखकर आश्चर्य-चकित हो जाते हैं। इस प्रकार शुरू से अंत तक विरोधी रसों का उद्भव नहीं होता और सब दृष्टियों से यह नाटक एक सफल व्यायोग सिद्ध होता है।

नाटकीय संविधान — प्रस्तुत ग्रन्थ की नाटकीय विशेषताओं की चर्चा 'कथा-वस्तु' और 'व्यायोग' नामक शीर्षकों में काफी हो चुकी है। जो कुछ अंशों में कमी रह गई है यहाँ हम उसे पूरी करेंगे।

'मध्यमव्यायोग' की सारी घटनाएँ रसानुभूति और कौतूहल की वृद्धि में सहायक सिद्ध होती हैं। नेपथ्य से आनेवाली किसी असहाय की पुकार दर्शकों में करुणा का संचार करती है। सूत्रधार के साथ ही सामाजिकों के भी मन में उस वृद्ध ब्राह्मण तथा उग्र प्रकृतिवाले घटोत्कच के विषय में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। सबकी नजरें रंगमंच पर टँग जाती हैं और क्षण भर में सबका हृदय भय और करुणा से आपूर्ण हो जाता है। संकटापन्न स्थिति में ब्राह्मणपरिवार का एक दूसरे के प्रति अपूर्व सहानुभूति और प्रेम करुणा को प्रवर्धित कर देता है। भीम और उनके पुत्र घटोत्कच का युद्ध आश्चर्य और आशंका से मन को आन्दोलित कर देता है। भविष्य के परिणाम की जिज्ञासा को बनाए रखने के लिए महाकवि भास ने कथानक के मोड़ बड़े मार्मिक रखे हैं। प्रारंभ से अंत तक आशा और निराशा का धूपछाहीं ताना-बाना बुन गया है। अंत में हिडिम्बा का भावपरिवर्तन दर्शक को आश्चर्यचकित कर देता है। संभावित परिणाम एकाएक बहुत दूर चला जाता है और रौद्ररस के स्थान पर प्रेम की ही पीयूषधारा प्रवाहित होने लगती है; जिससे प्रत्येक व्यक्ति का हृदय भर जाता है और दर्शक हर्षविभोर हो उठते हैं। इस प्रकार कवि ने इस नाटक को नाटकीय तत्त्वों से पूर्ण और रोचक बनाया है।

भाषाशैली और कथोपकथन—भाषाशैली की दृष्टि से यह नाटक बड़ा सफल है। लम्बी और समासान्त पदावलियों का कहीं भी प्रयोग नहीं किया गया है और न कहीं एक या दो वाक्यों से अधिक कोई पात्र बोलता ही है। इससे एक विशेष प्रकार की गतिमयता आ गई है। भाषा में कहीं भी कोई दुरूह या अप्रचलित

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शब्द नहीं आया है । अतः उसमें पूर्ण प्रवाह और प्रभावोत्पादकता भी है । 'मध्यम' को पुकारने पर भीम का उपस्थित होना और ब्राह्मण परिवार को छोड़ देने के लिए बार-बार कहे जाने पर यह कहना कि "यदि मेरा पिता भी दृढ़ निश्चयपूर्वक 'इसे छोड़ दो' कहता तो भी माता की आज्ञा से पकड़ा गया यह (ब्राह्मण) न छोड़ा जाता"[1] बड़ा ही नाटकीय वन पड़ा है । प्रत्येक पात्र अपने व्यक्तित्व के कारण एक दूसरे से सर्वथा भिन्न और स्वतन्त्र हैं । कथोपकथनों के द्वारा एक और कथा का विकास और फलाप्ति (हिडिम्बा भीम-मिलन) की सुनिश्चितता होती है तो दूसरी ओर पात्रों का चरित्र भी स्पष्ट होकर सामने आता जाता है ।

संकलन-त्रय—नाटकों की सफलता कार्य, देश और काल की एकता पर निर्भर रहती है—ऐसा पाश्चात्य विद्वानों का मत है । मध्यमव्यायोग को इस कसौटी पर यदि कसा जाय तो यह खरा उतरता है ।

प्रारम्भ में ब्राह्मणपरिवार की कथा मध्यम (पाण्डव) के आगमन की सुदृढ़ भूमिका है और उसी के माध्यम से भीम दर्शकों के सम्मुख सहसा पर स्वाभाविक रूप में उपस्थित होते हैं । मध्य में घटोत्कच और भीम का युद्ध घटनाचक में गत्वरता और उत्सुकता के साथ-साथ प्राप्त्याशा की ओर संकेत करते हैं । इन सव की परिणति हिडिम्वा-भीम-मिलन में विना किसी अस्वाभाविकता के होती है । इस प्रकार प्रस्तुत कृति में कार्य की एकता स्पष्ट है ।

प्रस्तुत नाटक एकांकी और एक ही दृश्य का है, अतः स्थानान्तर की संभावना भी नहीं होती और है भी नहीं । बस जहाँ पर्दा उठता है वहीं सब घटनाएँ एक के वाद एक वड़ी सरलता से घटित होती चली जाती हैं । रंगमंच एक वनस्थली के रूप में सामने आता है और अन्त तक बना रहता है । थोड़ा सा परिवर्तन हिडिम्वा की कुटी आदि के दृश्य में है पर वह विना दृश्य वदले ही किसी संकेत द्वारा अवगत कराया जा सकता है । इसलिए इस नाटक में स्थान (देश) की एकता बनी रहती है ।

भास ने प्रस्तुत नाटक की सारी घटनाओं को एक ही दिन में कौन कहे दो प्रहरों में ही समाप्त कर दिया है । अतीत की ओर न विशेष आकर्षण है

---

१. 'मुच्यतामिति विस्रब्धं ब्रवीति यदि मे पिता ।
न मुच्यते तथा ह्येष गृहीतो मातुराज्ञया ।।' १।३६

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और न भविष्य की चिंता। सारी कथावस्तु एक ही दिन के पूर्वार्द्ध तक सीमित है। प्रातःकाल ब्राह्मणपरिवार अपने सम्बन्धी के उत्सव में सम्मिलित होने को निकल पड़ता है और रास्ते के आवर्जित वनप्रदेश में उसका घटोत्कच से पीछा होता है। थोड़ी देर के बाद भीम आते हैं तत्पश्चात् एक दो घण्टे में युद्ध इत्यादि समाप्त करके हिडिम्बा से मिलन होता है। इस प्रकार सारी घटनाओं की सम्प्राप्ति दोपहर के थोड़ी देर बाद तक हो जाती है। अतः समय (काल) में भी कोई विशेष प्रसार नहीं है और समय की एकता का पूर्ण निर्वाह अयत्नकृत हुआ है।

काव्य तत्त्व—दृश्यकाव्य में तत्त्व की अनिवार्यता सर्वथा सिद्ध है। भावानुभूतियों की अभिव्यक्ति में बिना काव्य का सहारा लिए सफलता नहीं मिल सकती। रसदशा में सामाजिकों को पहुँचाने के लिए कवि भास ने भी अनूठी कल्पनाओं के अनेक चित्र खींचे हैं। प्रस्तुत नाटक के अप्रस्तुत विधान अधिकतर सादृश्यमूलक हैं जो रूपानुभूति के साथ हृदय में कवि के अभीष्ट रस की भी उत्पत्ति करते हैं।

प्रथम श्लोक का उत्तरार्ध कवि की प्रौढ़ उपमा का सुंदर उदाहरण है। रूप-सादृश्य के द्वारा कवि ने एक सुन्दर चित्र उपस्थित किया है। तृतीय श्लोक में कवि ने संत्रस्त ब्राह्मण परिवार की मानसिक विकलता का बड़ा ही सजीव चित्र प्रस्तुत किया है, सांगरूपक ने थोड़े से शब्दों में बहुत-कुछ भाव व्यक्त करा दिया है। सूत्रधार कहता है—

भ्रान्तैः सुतैः परिवृतस्तरुणैः सदारैः वृद्धो द्विजो निशिचरानुचरः स एषः।
व्याघ्रानुसारचकितो वृषभः सधेनुः सन्त्रस्तवत्सक इवाकुलतामुपैति ॥३॥

भयाक्रान्त तरुण पुत्रों और पत्नी से युक्त राक्षस से पीछा किया गया यह बुड्ढा ब्राह्मण, सिंह के आक्रमण से चकित गाय और पूर्णरूप से डरे हुए बछड़ों से युक्त वृषभ की भाँति व्याकुल हो रहा है।

कवि ने भावों को बिना किसी आडम्बर के सीधे सरल शब्दों में बड़ी सफलता से व्यक्त किया है।

जहाँ तक काव्य चित्रों का प्रश्न है वे भावोद्रेक और रसानुभूति में बड़े सफल सिद्ध हुए हैं। एक-एक श्लोक के द्वारा कवि ने इतनी गहरी अनुभूति जगाई है कि नाटक के पात्र सजीव और प्रभावोत्पादक बन गये हैं। घटोत्कच के रौद्र रूप का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करते हुए प्रथम (ब्राह्मण कुमार) कहता है कि इसके

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नेत्र सूर्य और चन्द्र की भाँति तेजोमय हैं। मोटा और चौड़ा सीना, स्वर्णिम आभा से युक्त उसके केश और पीले रेशम का वस्त्र पहने हुए, अन्धकार के समान श्याम वर्ण वाले घटोत्कच के बाहर निकले हुए सफेद दाँत ऐसे हैं मानो नवीन चन्द्र की कला जलपूर्ण (होने के कारण विशेष काले) मेघ में लीन हो रही हो।[1]

इसी प्रकार संभावना एवं सादृश्यमूलक अप्रस्तुतों के द्वारा रूप चित्रण करने में इन्हें अन्यत्र भी सफलता मिली है।[2] रूपक के द्वारा भयानक आकृति को और भी स्पष्ट किया गया है। जैसे—'मृत्युः पुरुषविग्रहः' आदि।

भावों को आस्वाद्य बनाने के लिए कवि ने बड़ी सुन्दर उपमाएँ चुनी हैं जिनके दर्शन कई स्थलों पर होते हैं।[3]

भावानुरूप छन्दों के विधान में भी कवि ने कौशल दिखाया है। प्रस्तुत व्यायोग में कुल बावन छन्द हैं जिसमें से ३४ अनुष्टुप्, १ उपेन्द्रवज्रा, २ उपजाति, ३ पुष्पिताग्रा, १ वंशस्थ, ६ वसंततिलका, ४ मालिनी और १ शार्दूलविक्रीडित हैं।

कुछ लोग अनुष्टुप् की अधिकता से इस लघुकाय एकाङ्की को बोझिल मानते हैं पर भास के ये छोटे पर अर्थगर्भित श्लोक नाटक में रसात्मकता ही उत्पन्न करते हैं न कि गत्यवरोध।

चरित्र-चित्रण

'मध्यमव्यायोग' में भीम, घटोत्कच, हिडिम्बा, वृद्ध केशवदास, ब्राह्मणी और उनके तीन पुत्र कुल मिलाकर आठ पात्र हैं। वृद्धा ब्राह्मणी और हिडिम्बा इन दो को छोड़कर शेष छः पुरुष पात्र हैं। नाटक की दृष्टि से भीम का स्थान महत्त्वपूर्ण है। वे ही इसके नायक हैं क्योंकि उन्हीं को लक्ष्य में रखकर हिडिम्बा ने यह षड्यन्त्र (?) रचा है और बाद में वे ही फल के भोक्ता होते हैं। दूसरा महत्त्व घटोत्कच को दिया जा सकता है जो कि 'फलागम' के लिए एक साधन के रूप में हमारे सामने सिद्ध होते हैं फिर हिडिम्बा, मध्यम (ब्राह्मण कुमार), केशवदास और बाद में दो कुमार और ब्राह्मणी का महत्त्व क्रमशः स्वीकार किया जा सकता है।

---

१. 'ग्रहयुगलनिभाक्षः पीनविस्तीर्णवक्षाः. कनककपिलकेशः पीतकौशेयवासाः।
तिमिरनिवहवर्णः पाण्डरोद्वृत्तदंष्ट्रो. नव इव जलगर्भो लीयमानेन्दुलेखः॥ ५॥
२. देखिए—श्लो० सं० ६, मध्यमव्यायोग. तथा श्लो० सं० २५ ऊरुभङ्ग।
३. श्लो० सं० २४, ३३, ४८।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भीम—यद्यपि सम्पूर्ण महत्त्वपूर्ण घटनाओं का नियन्ता घटोत्कच है तथापि भीम का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली है। उसके साथ ही इस नाम से संबद्ध संस्कार-जन्य महत्त्व-बुद्धि भी जागृत हो जाती है। उसके शारीरिक बल ने हृदय पक्ष को कमजोर नहीं बनाया अपितु उसमें पर्याप्त सहृदयता और दलित एवं संत्रस्त के प्रति पूरी सहानुभूति हैं।[1] उसका व्यक्तित्व घटोत्कच पर भी पर्याप्त प्रभाव डालता है और वह कह उठता है—'अहो! यह दर्शन के योग्य पुरुष है'।[2] भीमसेन में आत्माभिमान के साथ दूसरे के गुणों की प्रशंसा की वृत्ति भी पाई जाती है।[3] शुरू-शुरू में भीम का आगमन ही एक ऐसी स्थिति में होता है कि सबकी दृष्टि उन्हीं पर रुक जाती है। घटोत्कच जैसे शूर को परास्त कर उन्होंने अपने पौरुष का प्रदर्शन किया और अन्त में उसकी चपलता को क्षमा करके उसके गर्व और बल पर उन्होंने प्रसन्नता ही व्यक्त की।

भीम क्षत्रिय के कर्तव्यों को खूब जानते थे और उसका पालन उन्होंने प्राणपण से किया अतः वे सच्चे अर्थों में वीर क्षत्रिय के रूप में हमारे सामने आते हैं।[4] उनमें माता एवं ब्राह्मणों के प्रति पूज्य बुद्धि सर्वदा बनी रहती है।[5] हिडिम्बा के प्रसङ्ग में भीम एक प्रेमी पति के रूप में चित्रित किए गए हैं। हिडिम्बा को देखकर भीम में मानवसुलभ प्रसन्नता का प्रादुर्भाव होता है और वे उसकी सहृदयता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि तुम जाति से तो राक्षसी हो पर आचरण से नहीं।[6]

---

१. देखिए—श्लोक सं० ३३, एवं ३४।
२. देखिए—,, ,, २७।
३. देखिए—,, ,, ३५।
तथा—भीमः—(आत्मगतम्) 'कथं मातुराज्ञेति। अहो गुरुशुश्रूषुः खल्वयं तपस्वी।'
४. 'क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः, क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।'—रघुवंश।
५. माता किल मनुष्याणां दैवतानां च दैवतम्।
मातुराज्ञां पुरस्कृत्य वयमेतां दशां गताः॥ ३७॥
तथा—भीमः—'क्षत्रियकुलोत्पन्नोऽहम्। पूज्यतमाः खलु ब्राह्मणाः। तस्माच्छरीरेण ब्राह्मण-शरीरं विनिर्मातुमिच्छामि।
६. '…जातकारुण्यया देवि! संतापो नाशितस्त्वया॥ ४९॥
तथा—भीमः—जात्या राक्षसी, न समुदाचारेण।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कच—घटोत्कच का चारित्रिक संघटन ऐसे सन्धिस्थल पर हुआ है जिसमें मानव की सहज उदात्त भावना के साथ वीरता, दृढ़ता और कर्तव्यपरायणता आदि गुण पाए जाते हैं। पहले पहल उसके उग्र और अमानुषी आचरण पर सूत्रधार ही प्रकाश डालता है।[१] वृद्ध ब्राह्मण को वह प्रलयकालीन (युगनिधने) साक्षात् शङ्कर की प्रतिमा मालूम पड़ता है। द्वितीय कुमार को वह त्रिपुरदाहक रुद्र का रोष ही है और तीसरे कुमार को वह पुरुष रूप में मृत्यु सा मालूम होता है। इसी प्रकार भीम भी उसकी उपमा राहु से देते हैं।[२] उसकी शरीरिक शोभा की प्रशंसा भीम ने प्रथम दृष्टिपात ही में की है।[३] उससे भी पहले उसके उच्च स्वर को सुनकर उन्हें आश्चर्य होता है तथा मन में अनेक तर्क-वितर्क उठने लगते हैं कि अर्जुन के समान यह अन्य किसका स्वर हो सकता है।[४] राक्षसी के गर्भ से समुद्भूत होने पर भी युद्धप्रिय और शरण में आए हुए पर कृपा करनेवाले (युद्धप्रियाश्च शरणागतवत्सलाश्च) पाण्डव भीम का पुत्र होने के कारण उसमें आर्यजनोचित दया, क्षमा, करुणा और ब्राह्मणों के प्रति पूज्य भाव पाया जाता है। वह निरपराध ब्राह्मण परिवार को कष्ट देकर स्वयं ग्लानियुक्त वाणी में कहता है—यद्यपि ब्राह्मण पूज्य होते हैं यह जानता हूँ पर आज माता की आज्ञा से मुझे यह न करने योग्य कार्य भी निःशंक होकर करना होगा।[५] उसे पानी पीने के लिए (मध्यम) ब्राह्मण कुमार को आज्ञा देने में जरा भी हिचक नहीं होती। उसके शीघ्र न आने पर वह उसका नाम वृद्ध से पूछता है और उसके क्रुद्ध होने पर क्षमायाचनापूर्वक अपने स्वाभाविक दोष के लिए खेद करता है। उसे अपने माता-पिता पर गर्व है। परिचय बताते हुए उसका शिर आत्माभिमान से ऊँचा हो जाता है।[६]

केशवदास—प्रस्तुत नाटक में केशवदास का स्थान कोई विशेष महत्त्वपू

---

१. सूत्रधारः—'''एष खलु पाण्डवमध्यमस्यात्मजो हिडिम्बारणिसंभूतो राक्षसाग्नि कृतवैरं ब्राह्मणजनं वित्रासयति।'

२. देखिए—श्लोक सं०, ४, ६, ७ और २३।

३. देखिए—,, ,, २६। ४. देखिए—श्लोक सं० २५।

५. जानामि सर्वत्र सदा च नाम द्विजोत्तमाः पूज्यतमा पृथिव्याम्।
अकार्यमेतच्च मयाद्य कार्यं मातुर्नियोगादपनीय शंकाम्॥ ९॥

६. देखिए—श्लोक सं० ३८।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नहीं है पर उसके द्वारा भीम और घटोत्कच का चरित्र और भी स्पष्ट हुआ है। उसमें कर्तव्यपरायणता के साथ अपने परिवार की रक्षा का भाव बड़ा ऊँचा है। वह अपने शरीर के द्वारा सबकी रक्षा करना चाहता है। वृद्धत्व के कारण सङ्कटग्रस्त होने पर उसकी बुद्धि जड़ हो जाती है, पर क्षण-क्षण में उसे रक्षा का प्रकाश दिखाई देता है, पुनः लुप्त होता है, पुनः दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में वृद्ध और प्रथम कुमार के कथोपकथन के द्वारा कवि ने मानव-मन में होने वाली आशा और निराशा की आँखमिचौनी का बड़ा ही सजीव चित्र खींचा है। वृद्ध का हृदय इतना सरल है कि किसी भी बात पर शीघ्र विश्वास कर लेता है। यह बच्चों जैसी सरलता बड़े स्वाभाविक रूप में चित्रित की गई है।[1] घटोत्कच की शर्त कि (कि दो पुत्र और अपनी पत्नी का यदि मोक्ष चाहते हो तो एक पुत्र मुझे दे दो) सुनकर उसे बड़ा आघात लगता है और वह तुरंत कहता है, 'मैं वेदविद् ब्राह्मण हूँ, अपना शील और गुण से युक्त पुत्र मानवभक्षी को देकर कैसे आत्मशांति प्राप्त करूँगा' ?[2]

द्वितीय पुत्र जब अपने को राक्षस की क्षुधा-शान्ति के लिए अर्पित कर देता है तो वृद्ध ब्राह्मण उसके आत्म बलिदान की प्रशंसा करता है, उसे ब्रह्मलोक प्राप्ति का आशीष देता है पर यह मूल्य उसे बड़ा महँगा पड़ा। शुनःशेपोपाख्यान के अजीगर्त की भाँति वह अपने पुत्र का विक्रेता लोलुप पशु की भूमिका तक नहीं उतरता, अपितु उसे सारा परिवार खण्डित लगता है, सारा जीवन विद्रूप और प्रवंचित।[3] घटोत्कच उससे उसके पुत्र का नाम पूछता है तो वह व्यथित होकर आक्रोशपूर्ण शब्दों में उसकी भर्त्सना करता है। अन्त में घटोत्कच की सारी धृष्टता को क्षमा करके प्रणाम करने पर हृदय से आशीर्वाद देता है।

इस प्रकार उसमें सच्चे पिता, सदाचारी एवं क्षमाशील ब्राह्मण और आत्म-बलिदान करके भी परिवार की रक्षा करने आदि के गुण पाए जाते हैं।

हिडिम्बा—हिडिम्बा की चर्चा तो हम बहुत पहले से ही सुनने लगते हैं पर उसके दर्शन अन्तिम वेला में होते हैं। उसका चिरकल्पित रूप जितना ही

---

१. देखिए—श्लोक ८ से १२।

२. ब्राह्मणः श्रुतवान्वृद्धः पुत्रं शीलगुणान्वितम्।
पुरुषादस्य दत्त्वाहं कथं निर्वृतिमाप्नुयाम्॥ १३॥

३. देखिए—श्लोक सं०, २३।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भयानक और अमानुषी है उतना ही उसका वास्तविक रूप सरल और मानवीय है। पहले तो उसके घटोत्कच के किए गए प्रश्न केवल नाटकीय परिपाटी का पालन मात्र मालूम होते हैं पर बाद में जब यह स्पष्ट होता है कि उसका (मानुषाहार का) आशय क्या था तभी उन प्रश्नों की भी महत्ता मालूम होती है जो उसके कोमल पहलू को और भी चमत्कृत कर देते हैं। उसकी प्रशंसा स्वयं भीम करते हैं। इस प्रकार उसके चरित्र में मानवीय लज्जा (जो षड्यंत्र का मूल कारण है), हर्ष और दया आदि भाव पाए जाते हैं।

मध्यम (द्वितीय ब्राह्मणकुमार)—जिस प्रकार उत्तरार्द्ध में हिडिम्बा आती है उसी प्रकार नाटक के पूर्वार्द्ध में ही मध्यम का चरित्र विकसित होता है। इसका चित्र कवि ने जितना कारुणिक खींचा है और किसी का नहीं। तीन सहोदर भाइयों में से एक को माँ प्यार करती है। दूसरे को पिता, बीच का जो बचा वह न माँ की ओर जा सकता है और न पिता की ओर। अतः उसे आत्मबलिदान करना ही होता है। पर यहाँ मध्यम में किसी प्रकार की विषाद की रेखा नहीं दिखाई देती, वह प्रसन्नतापूर्वक अपने पूज्यों की रक्षा करने को तत्पर होता है। वह कहता है कि 'मैं धन्य हूँ क्योंकि मैंने अपने प्राणों के विनिमय से अपने पूज्यों की प्राणरक्षा की है। भाइयों (बन्धु-बान्धवों) के प्रेम से काल का प्रेम प्राप्त करना, मृत्यु का आलिंगन मिलना बड़ा दुर्लभ है'।[1] घटोत्कच की आज्ञा पाकर ही वह प्यास बुझाने जाता है और अपने वचन के अनुसार (यद्यपि कुछ विलम्ब होता है पर) वापस लौटकर अपने आने की सूचना (भोः पुरुष ! प्राप्तोऽस्मि।) बड़ी निर्भीकता से देता है। जब भीम उसके पिता से कहते हैं कि 'हे ब्राह्मण ! अपने पुत्र को लो। हम इसके साथ जायेंगे।' तो वह 'जान बची लाखों पाए' ऐसा नहीं सोचता अपितु अपने पूर्व संकल्प को पुनः कहता हुआ भीमसेन को उसके साथ जाने से रोकता है। त्याग की इतनी उदात्त भूमिका अन्यत्र दुर्लभ है।

शेष नाटक के पात्र नगण्य हैं। यद्यपि अपने कर्तव्य का निर्वाह ब्राह्मणी और शेष दो कुमारों ने भी किया है पर उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं है।

---

१. धन्योऽस्मि यद् गुरुप्राणाः स्वैः प्राणैः परिरक्षिताः। बन्धुस्नेहाद्धि······॥ २० ॥
२. त्यक्ताः प्रागेव मे प्राणा गुरुप्राणेष्वपेक्षया। युवा रूपगुणोपेतः······॥ ४० ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कथासारः

नान्दीपाठानन्तरं स्वतरुणपुत्रेण पत्न्या च साकं ब्राह्मणो रङ्गमञ्चोपर्यागच्छति। सर्वे च घटोत्कचाभिधाद् राक्षसाद् भीतभीताः सन्ति। ततः स्वेषां रक्षायाः कमप्युपायमनुपलभ्य जरठो ब्राह्मणो घटोत्कचमेव स्वमुक्त्युपायं परिपृच्छति। स चैवं वदति यत् मम जनन्याः पारणार्थं स्वपरिवारेषु मध्ये यद्येकं कमपि दास्यसि तर्हि शेषैः सह सक्षेमं जीवितुं शक्ष्यसि। तस्य एतत्प्रस्तावं श्रुत्वा सर्वतः प्रथमं वृद्धः स्वशरीरं समर्पयितुमियेष। किन्तु तस्य स्थविरतया राक्षसस्तं न स्वीचकार। ब्राह्मणीमपि स्त्रीत्वात् न जग्राह। ततः ज्येष्ठः कुमारो तमनुगन्तुमुद्युक्तः किन्तु ज्येष्ठ इति स्वयं पित्रा वारितः। यतः ज्येष्ठः पितुरुत्तराधिकारी परमप्रियश्च भवति। एवं कनिष्ठे सूनौ माता स्नेहाधिकं विदधाति, अतो जननी कनिष्ठं निवारयति। शेषो मध्यमः, स च स्वगुरुभक्तिपरिचयं ददत् स्वयमेव राक्षसमनुसर्तुं प्रस्तुतः। यदनुगमनात्पूर्वं स पानीयं पातुम् अनुसरोवरं गन्तुम् आदेशं ययाचे। घटोत्कचोऽपि जलं पातुमादेशं तस्मै ददौ। यदा च तस्यागमने विलम्बो बभूव तदा राक्षस आत्मन्येवं चिन्तयामास, यत् मातुः पारणवेला अतिक्रान्ता भवति अतस्तस्य मध्यम इति संज्ञा तद्भ्रातृतः ज्ञात्वा 'मध्यम मध्यम आयाहि'—एवमाह्वयामास। तत्र सन्निकट एव भीमो व्यायामं कुर्वन्नास्ते।

स एवं बुबोध यद् मामेव कश्चिदाह्वयति, अतो राक्षसं भीम एवोपतस्थौ। एतस्मिन्नन्तरे मध्यमो ब्राह्मणकुमारोऽपि समाजगाम। तञ्च ब्राह्मणकुमारमादाय राक्षसः स्वमातुः समीपं गच्छन्नासीत् तदा रुदन् विप्रः पुत्रप्राणभिक्षां भीमं ययाचे। उदारचेता भीमः तं मोचयितुं प्रतिश्रुत्य घटोत्कचेन सह ब्राह्मणकुमारगमनमवरुरोध। तत्स्थाने स्वयं गन्तुं तत्परो बभूव। किन्तु 'नहि अनायासेन बलेन नेतुं शक्तोऽसि चेत् जिगमिषामि' इत्युक्तवान्। ततः कियत्कालं तयोर्युद्धं बभूव। पश्चात् घटोत्कचस्य स्मृतिदानात्स तेन सह तस्य मातुः हिडिम्बायाः समीपं संप्राप। हिडिम्बा च भीमं दृष्ट्वा सामोदं घटोत्कचं प्राह भोः पुत्र! वीरमेनमभिवादयस्व। भीमोऽपि पुत्रं घटोत्कचं प्राह भोः पुत्र ब्राह्मणश्रेष्ठमभिवादयस्व। अन्ते च सुमनाः ब्राह्मणपरिवारं प्रस्थापयितुं प्रतस्थे। तदनन्तरञ्च भरतवाक्येन नाटकसमाप्तिमगात्।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पात्रपरिचयः

पुरुषाः—

वृद्धः—ब्राह्मणः केशवदासनामा ।

प्रथमः—वृद्धस्य ज्येष्ठः पुत्रः ।

द्वितीयः—वृद्धस्य द्वितीयः पुत्रः मध्यमनामा ।

तृतीयः—वृद्धस्य कनिष्ठः पुत्रः ।

घटोत्कचः—राक्षसः, हिडिम्बाभीमसेनयोः सूनुः ।

भीमसेनः—मध्यमः कुन्तीपुत्रः ।

स्त्रियः—

ब्राह्मणी—वृद्धस्य भार्या ।

हिडिम्बा—राक्षसी, भीमसेनस्य पत्नी ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भासनाटकचक्रे

मध्यमव्यायोगः

'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतः

प्रथमोऽङ्कः

(नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः ।)

सूत्रधारः—

पायात्स वोऽसुरवधूहृदयावसादः
पादो हरेः कुवलयामलखड्गनीलः ।

महाकविभिराचार्यवर्यैश्च सादरं गृहीतनामधेयः कविताकामिनीहासो महाकविर्भासः स्वमध्यमव्यायोगे नाटकेस्मिन् आशीर्वादात्मकं मंगलमाचरन् श्रोतृव्याख्यात्रोरनुषङ्गतस्तदुपयोजयन् सूत्रधारमुखेनाह—पायादित्यादि । हरेः—वामनरूपेणावतीर्णस्य सः—विश्रुतः पादः—चरणः वः = युष्मान् सामाजिकान् सहृदयान् वा पायात् = रक्षेत् । यः = पादः असुरवधूनां = दैत्यदयितानां हृदयेषु = चित्तेषु अवसादः = विषादप्रदः किं वा प्रकृतत्वात् असुरो बलिस्तस्य वध्वाः = पत्न्या हृदयमवसादयतीति व्याख्येयम् । कुवलयामलखड्गनीलः = कुवलयमिव नीलकमलमिव अमलं निर्मलं तथा खड्गवत् = कृपाणवत् नीलः श्यामलः यद्वा अमल-

---

(नान्दी के बाद सूत्रधार आता है ।)

सूत्रधार—हरि (विष्णु के वामनावतार) का वह पद आप लोगों (सहृदयों, सामाजिकों) की रक्षा करे; जो नील कमल के समान स्वच्छ तथा तलवार की भाँति नीला है । वह त्रिभुवन को नापने के लिए उठाये जाने पर असुरों की (अथवा असुरराज बलि की) पत्नियों

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यः प्रोद्यतस्त्रिभुवनक्रमणे रराज
वैदूर्यसंक्रम इवाम्बरसागरस्य ॥ १ ॥

एवमार्यमिश्रान्विज्ञापयामि । अये किं नु खलु मयि विज्ञापनव्यग्रे शब्द इव श्रूयते । अङ्ग पश्यामि ।

(नेपथ्ये)

भोस्तात ! को नु खल्वेषः ।

सूत्रधारः—भवतु, विज्ञातम् ।

भोः शब्दोच्चारणादस्य ब्राह्मणोऽयं न संशयः ।

खड्गवत् स्वच्छकृपाणवत् नील इत्यर्थः । त्रिभुवनक्रमणे = त्रैलोक्यपरिमापणे प्रोद्यतः = प्रकर्षेण उद्यतः = संलग्नः, अम्बरसागरस्य = अम्बरमेव सागर इति अम्बरसागरस्तस्य गगनाम्भोधेः वैदूर्यसंक्रम इव = वैदूर्यमणिनिर्मितसेतुरिव रराज = शुशुभे । अत्र कुवलयामलखड्गनीले उपमा, अम्बरसागरस्य इति रूपकं तथा वैदूर्यसंक्रम इवेत्युत्प्रेक्षा अलङ्काराः । 'ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' इति वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ १ ॥

अस्य = सन्निहितस्य जनस्य 'भोः' इति शब्दोच्चारणात् = पदोदीरणात् 'हेतौ पञ्चमी' अयं = संनिकृष्टः किन्तु चक्षुषोरगोचरः जनः ब्राह्मणः = विप्रः इत्यत्र न संशयः = न सन्देहः किञ्च अयम् = पूर्वोक्तः केनचित् = अज्ञातेन पुंसा निर्विशङ्केन = निरातङ्केन पापचेतसा = पापं पापमयं चेतो हृदयं यस्य तेन

के हृदय में विषाद उत्पन्न करनेवाला है तथा ऐसा शोभित हो रहा है मानों आकाश के विस्तृत समुद्र से वैदूर्य मणि की राजि निकली हो या उस पर वैदूर्यमणि का कोई सेतु बाँधा गया हो ॥ १ ॥

मैं आप महानुभावों को सूचित करता हूँ । अरे ! यह कैसे मुझ सूचना देने के लिए व्यग्र (उतावले) को शब्द सुनाई पड़ते हैं ? अच्छा, तो देखूं ।

(नेपथ्य में)

हे तात ! यह वास्तव में कौन है ?

सूत्रधार—अच्छा, अब समझा ।

भोः शब्द के उच्चारण से निश्चित होता है कि वह कोई ब्राह्मण किसी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्रास्यते निर्विशङ्केन केनचित्पापचेतसा ॥ २ ॥

(पुनर्नेपथ्ये)

भोस्तात ! को नु खल्वेषः ।

सूत्रधारः—हन्त दृढं विज्ञातम् । एष खलु पाण्डवमध्यमस्यात्मजो हिडिम्बारणिसंभूतो राक्षसाग्निरकृतवैरं ब्राह्मणजनं वित्रासयति । भोः कष्टम् । अत्रहि

श्रान्तैः सुतैः परिवृतस्तरुणैः सदारै-
वृद्धो द्विजो निशिचरानुचरः स एषः ।
व्याघ्रानुसारचकितो वृषभः सधेनुः
सन्त्रस्तवत्सक इवाकुलतामुपैति ॥ ३ ॥

दुष्कृतात्मनेत्यर्थः । त्रास्यते = भीष्यते । 'पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः । गुरु षष्ठं च पादानां चतुर्णां स्यादनुष्टुभि' । इत्यनेन लक्षणेनेदम् अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ २ ॥

तरुणैः—युवभिः श्रान्तैः = श्रान्तिमद्भिः सुतैः = तनयैः परिवृतः = बलयितः सदारः = सभार्यः निशिचरानुचरः = राक्षसानुगतः एषः सः = सोऽयं वृद्धः = स्थविरः द्विजः = ब्राह्मणः सन्त्रस्तवत्सकः = वत्सकः, स्वार्थे क्षुद्रार्थे वा कन् सम्यक् त्रस्तः भीतः वत्सकः लघुभूतो वत्सो यस्य सः, सधेनुः = सद्यः प्रसूता गौर्धेनुः तया सहितः, व्याघ्रस्य = सिंहस्य अनुसारेण = आक्रमणेन चकितः = भीतः वृषभः = वलीवर्दं इव आकुलताम् = व्यग्रताम् उपैति = अधिगच्छति । अत्रोपमालङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३ ॥

निर्भय अत्याचारी से सताया जा रहा है ॥ २ ॥

(पुनः नेपथ्य में)

हे पिता ! यह कौन ?

सूत्रधार—आह, (मैं) निश्चित रूप से समझ गया । अवश्य ही यह पाण्डवों में मध्यम (भीमसेन) का पुत्र हिडिम्बारूपी अरणि से निकला हुआ यह राक्षस बेचारे साधु-प्रकृति के ब्राह्मण को कष्ट दे रहा है । आह, बड़ा ही कष्ट है ।

यहाँ राक्षस के द्वारा पीछा किए जाने पर डरे हुए पुत्रों और पत्नी के साथ इस वृद्ध ब्राह्मण की स्थिति सिंह से पीछा किये जाने पर डरे हुये छोटे बछड़ों और गाय से युक्त व्याकुल और व्यथित बैल के समान है ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(निष्क्रान्ताः)

स्थापना

(ततः प्रविशति सुतत्रयकलत्रपरिवृतो ब्राह्मणः पृष्ठतो घटोत्कचश्च ।)

ब्राह्मणः—भोः को नु खल्वेषः ।

तरुणरविकरप्रकीर्णकेशो भ्रुकुटिपुटोज्ज्वलपिङ्गलायताक्षः ।
सतडिदिव घनः सकण्ठसूत्रो युगनिधने प्रतिमाकृतिर्हरस्य ॥ ४ ॥

तरुणरविकरप्रकीर्णकेशः = तरुणः = मध्याह्नकालिकः रविः = सूर्यस्तस्य कर इव = किरण इव प्रकीर्णः केशः = कुन्तलो यस्य सः, भ्रुकुटिपुटोज्ज्वलपिङ्गलायताक्षः = भ्रूसंपुटयोः उज्ज्वलम् = उत् ऊर्ध्वं ज्वलो दीप्तिर्यस्मिन् तत् पिङ्गलं पीतवर्णम् आयतं = विस्तृतञ्च अक्षि = नेत्रं यस्य सः सकण्ठसूत्रः = कण्ठे परिहितं सूत्रं कण्ठसूत्रं तेन सहितः सकण्ठसूत्रः परिहितकण्ठसूत्र इत्यर्थः, तडिता = विद्युता सह वर्तते इति सतडित् सविद्युत् मेघः वारिधर इव, युगनिधने = युगान्तकाले प्रलयावस्थायामित्यर्थः, हरस्य = विश्वसंहरणशीलस्य प्रतिमाकृतिः = प्रतिमाया आकृतिरिव आकृतिर्यस्य स एवंविधः राक्षसोऽयं क्षपयति नो धैर्यमिति भावः । अत्रोपमालङ्कारः । 'अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा' इत्यत्र पुष्पिताग्रा वृत्तम् ॥ ४ ॥

(सब चले जाते हैं ।)

स्थापना ।

(तब ब्राह्मण [केशवदास] अपने तीनों पुत्रों और पत्नी के साथ प्रवेश करता है पीछे घटोत्कच भी आता है ।)

ब्राह्मण—हे, यह कौन है ?

जिसका केश-कलाप मध्याह्न-कालिक रवि-किरण की भांति फैला हुआ है, बड़ी-बड़ी आँखें कुञ्चित भ्रू के कारण चमकीली और लाल हो गई हैं, जिसके कण्ठ का स्वर्णसूत्र बादल में विद्युल्लता की भांति शोभित हो रहा है तथा जो प्रलयकाल के रुद्र (शंकर) की प्रतिमा के समान है, हमारे धैर्य का नाश कर रहा है ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रथमः—भोस्तात ! को नु खल्वेषः ।

ग्रहयुगलनिभाक्षः पीनविस्तीर्णवक्षाः
कनककपिलकेशः पीतकौशेयवासाः ।
तिमिरनिवहवर्णः पाण्डरोद्वृत्तदंष्ट्रो
नव इव जलगर्भो लीयमानेन्दुलेखः ॥ ५ ॥

द्वितीयः—क एष भोः !

कलभदशनदंष्ट्रो लाङ्गलाकारनासः

पित्रा सचकितमुपन्यस्तमसुरस्वरूपं निशम्य भीतः सुतोऽपि स्वानुभवं निवेदयति—

ग्रहयोः सूर्यचन्द्रयोर्युगलं द्वन्द्वं तन्निभे = तत्सदृशे अक्षिणी यस्य स सूर्यचन्द्रवद्भास्वरनयन इत्यर्थः, पीनम् = स्थूलं विस्तीर्णम् = आयतं वक्षः = उरः यस्य सः, कनकं = हाटकम् (स्वर्णम्) इव कपिशः = पीताभः केशः = कुन्तलो यस्य सः, पीतं = पीतवर्णं कौशेयं = क्षौमं 'कौशेयं कृमिकोशोत्थम्' इत्यमरः । वासः = वस्त्रं यस्य स धृतपीतवस्त्र इत्यर्थः । तिमिरस्य = तमसः निवहः = स्तोमः तद्वद् वर्णं रूपं यस्य स तमःस्तोमनील इत्यर्थः । पाण्डरोद्वृत्तदंष्ट्रः = पाण्डरा = अतिधवला उद्वृत्ता = ऊर्ध्वगामिनी दंष्ट्रा = दशनः यस्य सः, तथाऽवभासते यथा लीयमाना = अन्तर्भूयमाना इन्दोश्चन्द्रस्य लेखा = कला यस्मिन् सः नवः = नवीनः जलगर्भः = जलं गर्भे = मध्ये यस्य स मेघ इत्यर्थः (शोभते) । अत्राप्युपमालङ्कारः, 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः' अतः मालिनीवृत्तञ्च ॥ ५ ॥

द्वितीयो ब्राह्मणकुमारः उत्प्रेक्षते—कलभ इत्यादिना । कलभस्य = करिकिशोरस्य

प्रथम—हे पिता ! वास्तव में यह कौन है ?

जिसकी आँखें दो (सूर्य और चन्द्र) ग्रहों के समान प्रभापूर्ण हैं, जिसके पुष्ट एवं विशाल वक्षस्थल एवं सोने के समान चमकीले केश हैं, जो पीला रेशमी वस्त्र धारण किए हुए हैं, जिसका वर्ण रात्रि के संपुंजित अन्धकार सा है और जिसके सफेद दाँत मुँह से बाहर निकलकर ऐसे लगते हैं मानो नवीन मेघ समूह में चन्द्र की कला निमज्जित हो रही हो ॥ ५ ॥

दूसरा (कुमार)—यह कौन है ?

जिसके दांत हाथी के बच्चे के (अङ्कुरित) दांत के समान छोटे और पतले से

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करिवरकरबाहुर्नीलजीमूतवर्णः ।
हुतहुतवहदीप्तो यः स्थितो भाति भीम-
त्रिपुरपुरनिहन्तुः शङ्करस्येव रोषः ॥ ६ ॥

तृतीयः—भोस्तात । को नु खल्वयमस्मान्पीडयति ।

वज्रपातोऽचलेन्द्राणां श्येनः सर्वपतत्त्रिणाम् ।
मृगेन्द्रो मृगसंघानां मृत्युः पुरुषविग्रहः ॥ ७ ॥

दशन इव किञ्चिदुद्भिन्ना दंष्ट्रा यस्य सः, लाङ्गलस्य = हलस्य आकार इव नासा = नासिका यस्य सः, करिवरस्य = मत्तमतङ्गजस्य कर इव = शुण्डादण्ड इव बाहुर्भुजो यस्य सः, नीलजीमूतवर्णः = नीलश्चासौ जीमूतश्च नीलजीमूतः = श्यामलजलदः तस्य वर्ण इव वर्णो यस्य सः, हुतहुतवहदीप्तः = हुतः = आहुत्यादिभिर्ज्वलितः हुतवहः = हुतं देवान्प्रति वहतीति हुतवहः = अनलः तद्वत् दीप्तः = प्रकाशितः प्रज्वलितो वा यः पुरो दृश्यमानः त्रिपुरनिहन्तुः = त्रिपुरान्तकस्य शंकरस्य = हरस्य भीमः = भयङ्करः रोष इव = क्रोध इव स्थितः भाति = दीव्यति । अत्राप्युपमोत्प्रेक्षा च अलङ्कारः । इदमपि मालिनीवृत्तम् ॥ ६ ॥

तृतीयः सम्भावयति—वज्रपात इत्यादिना । अयमध्याहार्यः पुरोवर्ती प्राणीत्यर्थः । अचलेन्द्राणां = गिरिराजानां कृते वज्रपातः = वज्राघातः, सर्वपतत्त्रिणां = सर्वेषां पतत्त्रिणां = पक्षिणां कृते श्येनः = पक्षिविशेषः यः स्वपक्षघातेन महतोऽपि खात् पातयतीति भावः । मृगसङ्घानां = पशुसमूहानां कृते मृगेन्द्रः सिंहः एवंभूतः मृत्युः = यमराज एव पुरुषविग्रहः = धृतपुरुषशरीरः दृश्यते इत्यर्थः । अत्र मालारूपकालङ्कारः अनुष्टुप् श्लोकश्च ॥ ७ ॥

हैं, हल की भाँति सुढर जिसकी नाक है, गजराज की सूंड के समान जिसकी लम्बी भुजायें हैं, नीले जलद सा जिसका वर्ण (शरीर का रङ्ग) है और जो यज्ञ की अग्नि की तरह (स्वयं प्रभा से) प्रज्वलित है तथा त्रिपुरदाह के समय शंकर के भयङ्कर क्रोध के समान मालूम पड़ता है ॥ ६ ॥

तीसरा—हे पिता ! वास्तव मे कौन हम लोगों को कष्ट दे रहा है ।

(यह) जो कि पर्वतसमूहों के लिए वज्रपात, सब पक्षियों के लिए बाज, मृग झुण्ड के लिए सिंह और मानव शरीर धारण करके साक्षात् मृत्यु ही है ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्राह्मणी—अय्य को एसो अम्हाअं सन्दावेइ। [आर्य ! क एषोऽस्मान् सन्तापयति।]

घटोत्कचः—भो ब्राह्मण ! तिष्ठ तिष्ठ।

किं यासि मद्भयविनाशितधैर्यसारो
वित्रस्तदारसुतरक्षणहीनशक्ते !।
तार्क्ष्याग्र्यपक्षपवनोद्धतरोषवह्नि-
तीव्रः कलत्रसहितो भुजगो यथार्तः ॥ ८ ॥

भो ब्राह्मण ! न गन्तव्यं न गन्तव्यम्।

वृद्धः—ब्राह्मणि ! न भेतव्यम्। पुत्रकाः न भेतव्यम्। सविमर्शा ह्यस्य वाणी।

घटोत्कचः साक्रोशं तर्जयन्नाह—

तार्क्ष्यस्य=गरुडस्य तृणस्य नाम कश्यपस्य मुनेः अपत्यं तार्क्ष्यः तस्य, अग्रच-पक्षाभ्याम् = पुरोवर्तिपक्षाभ्यां जनितो यः पवनः = अनिलः स एव उद्धतः = प्रचण्डः रोषवह्निः = क्रोधाग्निस्तेन तीव्रः = उत्तेजितः कलत्रसहितः = सस्त्रीकः आर्त्तः = उद्विग्नः भुजगः = सर्पोऽपयाति यथा, तथा वित्रस्तदारसुतरक्षणहीनशक्ते = विशेषेण त्रस्तानां = भीतानां दाराणां = भार्यायाः सुतानां = तनयानां च रक्षणे = पालने हीना = क्षीणा शक्तिः = सामर्थ्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ, मत् = अस्मत् सकाशात् जातं यद्भयं 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' इति पञ्चमी तेन विशेषतः नाशितः = क्षपित धैर्यस्य = स्थैर्यस्य सारः = बलं यस्य स एवंभूतस्त्वं किं = कथं यासि = अपसर्पसि। अत्रापि वसन्ततिलकावृत्तम् उपमालङ्कारश्च ॥ ८ ॥

ब्राह्मणी—आर्य ! यह कौन हम लोगों को पीड़ित करता है।

घटोत्कच—अरे ! ब्राह्मण रुको रुको।

मेरे भय (आतङ्क) से तुम्हारा अवशिष्ट धैर्य भी नष्ट हो चुका है और अब अपने भयभीत पत्नी और पुत्रों की रक्षा की शक्ति भी तुममें नहीं है, (फिर भी) गरुड़ के पंख के अग्रभाग से जिसकी क्रोधाग्नि पूर्ण प्रज्वलित हो गई है ऐसे सपत्नीक सर्प की भांति तुम क्यों जा रहे हो, ब्राह्मण न जाओ न जाओ ॥ ८ ॥

वृद्ध—हे ब्राह्मणी ! तुझे न डरना चाहिये। पुत्रो ! तुम्हें भी न डरना चाहिये, इसकी वाणी सुविचारित, विवेकयुक्त मालूम पड़ती है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः—भोः ! कष्टम् ।

जानामि सर्वत्र सदा च नाम द्विजोत्तमाः पूज्यतमाः पृथिव्याम् ।
अकार्यमेतच्च मयाऽद्य कार्यं मातुर्नियोगादपनीय शङ्काम् ॥ ९ ॥

वृद्धः—ब्राह्मणि ! किं न स्मरसि तत्रभवता जलक्लिन्नेन मुनिनोक्तं-अनपेतराक्षसमिदं वनमप्रमादेन गन्तव्यमिति । तदेवोत्पन्नं भयम् ।

ब्राह्मणी—किं दाणिं अय्यो मज्झत्थवण्णो विअ दिस्सदि । [किमिदानीमार्यो मध्यस्थवर्णं इव दृश्यते ।]

सविमर्शा = विमर्शः योग्यायोग्यविचारः तेन सहिता हि=नूनम् अस्य=राक्षसस्य वाणी = वचनम् ।

जानामीति । यद्यपि द्विजोत्तमाः = ब्राह्मणतल्लजाः पृथिव्यां = भुवि सदा = शश्वत्, सर्वस्मिन् काले सर्वत्र च सर्वस्मिन् स्थाने च पूज्यतमाः = अतिशयेन पूज्या भवन्तीति अहं जानामि नाम = निश्चयेन वेद्मि । तथापि मातुः = जनन्या नियोगात्= आदेशात् अपनीता = दूरंगमिता शङ्का यस्मिन् कर्मणि तत्तथा अद्य = अस्मिन् दिने मया = घटोत्कचेन एतत् = सर्वथा गर्हितमपि कार्यं = कर्तव्यं कार्यं करणीयमेवास्ति । एतेन घटोत्कचस्य ब्राह्मणवधेन सम्भावितः शोकः, मातुर्भक्त्या चाकार्यकरणाध्यवसायश्च प्रतीयते । 'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।' 'उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ।' इत्यनयोरुपजातिः अत्र सिध्यति ॥ ९ ॥

मध्यस्थवर्ण इव = (१) मध्यस्थः त्रिषु वर्णेषु मध्यगतः वर्णः अर्थात् क्षत्रियः

घटोत्कच—अरे ! बड़ा कष्ट है !

मैं यह जानता हूँ कि श्रेष्ठ ब्राह्मण सारी पृथ्वी पर सदा पूजनीय हैं फिर भी बिना किसी शंका के माता की आज्ञा से, सर्वथा न करने योग्य (ब्राह्मण का वध रूप) कार्य आज मुझे करना है ॥ ९ ॥

वृद्ध—हे ब्राह्मणी ! क्या तुम्हें स्मरण नहीं है इस आदरणीय जलक्लिन्न (जल से भीगे हुए) मुनि ने कहा था कि यह वन राक्षसों से विहीन नहीं है अतः सतर्कता से जाना चाहिये । अतएव यह भय उपस्थित हो हो गया ।

ब्राह्मणी—क्यों इस समय भी आर्य (वृद्ध) कर्तव्यविमूढ़ से (या मध्यवर्ण क्षत्रिय सा धैर्य धारण कर चुपचाप) दीखते हैं ?

CC0: In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वृद्धः—किं करिष्यामि मन्दभाग्यः।

ब्राह्मणी—णं विक्कोसामो। [ननु विक्रोशामः।]

प्रथमः—भवति ! कस्य वयं विक्रोशामः।

इदं हि शून्यं तिमिरोत्करप्रभैर्नगप्रकारैरवरुद्धदिक्पथम्।
खगैर्मृगैश्चापि समाकुलान्तरं वनं निवासाभिमतं मनस्विनाम् ॥१०॥

वृद्धः—ब्राह्मणि ! न भेतव्यं, न भेतव्यम्। मनस्विजननिवासयोग्य-

स इव धीरव्यवहारित्वात् (२) मध्यस्थस्य उदासीनस्य इव वर्णः च्छाया यस्य सः। उपस्थितविपत्प्रतीकारयत्नाकरणात्। इति गणपतिशास्त्रिमहोदयैः व्याख्यातः।

इदं हि पुरो विद्यमानं वनम् = अरण्यं शून्यं = जनरहितम् अतोऽत्र विक्रोशनमरण्यरोदनमेवेत्यर्थः। तिमिरोत्करप्रभैः तिमिरस्य = तमसः यः उत्करः = स्तोमः तद्वत् प्रभा येषां तैरित्यर्थः, नितान्तश्यामलकलेवरैः नगप्रकारैः = पादपविशेषैः विभिन्नपर्वतैर्वा अवरुद्धः = आवृतः दिशां पन्था यस्मिन् तद् वनमिति शेषः। खगैः = पक्षिभिः मृगैः = पशुभिश्च समाकुलान्तर = सम्यक्तया आकुलं = परिपूर्णम् अन्तरम् = अन्तरालं यस्य तत् = तादृशं वनम् अरण्यं मनस्विनाम् = प्रशस्तमनसां निवासाय अभिमतं भवतीति भावः। 'समर्थनीयस्यार्थस्य काव्यलिङ्गम् समर्थनमि'त्यत्र काव्यलिङ्गालङ्कारः। 'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ' इति वंशस्थवृत्तमिदम् ॥ १० ॥

वृद्ध—मैं अभागा क्या करूँ ?
ब्राह्मणी—क्यों, हम सब चिल्लाकर बुलावें।
प्रथम—मां ! किसको हम सब बुलावें ?

यह वन अत्यन्त सूना है, चारों दिशायें अन्धकार उत्पन्न करने वाले वृक्ष (पर्वत) समूह से घिरी हुई हैं, इसका अन्तर-प्रदेश पशु-पक्षियों से युक्त तपस्वियों के ही निवासयोग्य है, यहां चिल्लाना अरण्यरोदन के ही समान होगा ॥ १० ॥

वृद्ध—हे ब्राह्मणी ! डरना नहीं चाहिए। मुनिजनों के निवास-योग्य इस वन को सुन-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मिति श्रुत्वा विगत इव मे संत्रासः। शङ्के नातिदूरेण पाण्डवाश्रमेण भवितव्यम्। पाण्डवास्तु,

युद्धप्रियाश्च शरणागतवत्सलाश्च
दीनेषु पक्षपतिताः कृतसाहसाश्च।
एवंविधप्रतिभयाकृतिचेष्टितानां
दण्डं यथार्हमिह धारयितुं समर्थाः ॥ ११ ॥

प्रथमः—भोस्तात! न तत्र पाण्डवा इति मन्ये।

वृद्धः—कथं त्वं जानीषे।

पाण्डवानां शरणागतरक्षणप्रवणतां प्रतिपादयितुमुच्यते—

पाण्डवाः = भीमसेनादयः प्रकृत्या युद्धप्रियाः = युद्धं प्रियं येषां ते रणरसिका इत्यर्थः शरणागतवत्सलाः शरणाय = रक्षणाय आगतेषु जनेषु वत्सलाः = स्निग्धमानसाः चकारत्रयमत्र सर्वत्र समप्राधान्यप्रतिपिपादयिषयोक्तम्। दीनेषु = असहायेषु पक्षपतिताः = पक्षपातवन्तः, कृतसाहसाश्च = कृतमधिकृतं साहसं यैस्ते इत्यर्थः। एवंविधं प्रतिभयं = भयङ्करं (दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम्। भयङ्करं प्रतिभयं रौद्रं तूग्रममी त्रिषु ॥ अमरः) आकृतिः = स्वरूपं चेष्टितं = व्यवसायश्च येषां तेषां यथार्हं = यथोचितं दण्डं धारयितुं = ग्राहयितुं समर्थाः = शक्ताः सन्ति। पाण्डवा एवैतादृशक्रूरकर्मणां समुचितदण्डप्रदाने समर्थाः सन्ति तत्समागम एवास्मत्त्रासनिरासायालमिति भावः। अलंकारः परिकरः साभिप्रायविशेषणे'इत्यत्र परिकरालङ्कारः, वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ ११ ॥

कर मेरा भय विनष्ट हो गया। मैं सोचता हूँ कि यहीं-कहीं निकट ही पाण्डवों का आश्रम होना चाहिये। पाण्डव तो—

बड़े ही युद्धप्रिय (योद्धा), शरण में (रक्षा के लिए) आए हुये पर प्रेम और दीनों का पक्षपात करने वाले हैं एवं बड़े साहसी हैं। इस प्रकार की भयानक आकृति एवं कर्म करने वालों को योग्य दण्ड देने में वे सर्वथा समर्थ हैं ॥ ११ ॥

प्रथम (कुमार)—हे पिता! यहां मालूम होता है पाण्डव नहीं हैं।

वृद्ध—पुत्र! तुम कैसे जान गए?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रथमः—श्रुतं मया तस्मादागच्छता केनचिद् ब्राह्मणेन शतकुम्भं नाम यज्ञमनुभवितुं महर्षेर्धौम्यस्याश्रमं गता इति ।

वृद्धः—हन्त हताः स्मः ।

प्रथमः—तात ! न तु सर्व एव । आश्रमपरिपालनार्थमिह स्थापितः किल मध्यमः ।

वृद्धः—यद्येवं सन्निहिताः सर्वे पाण्डवाः ।

प्रथमः—स चाप्यस्यां वेलायां व्यायामपरिचयार्थं विप्रकृष्टदेशस्थ इति श्रूयते ।

वृद्धः—हन्त निराशाः स्मः । भवतु पुत्र व्यापाश्रयिष्ये तावदेनम् ।

प्रथमः—अलमलं परिश्रमेण ।

वृद्धः—पुत्र ! निर्वेदप्रत्यर्थिनी खलु प्रार्थना । भवतु पश्यामस्तावत् । भो भोः पुरुष ! अस्त्यस्माकं मोक्षः ।

वेलायाम् = काले (अब्व्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि । अमरः) । विप्रकृष्टे = दूरं (स्याद् दूरं विप्रकृष्टकम् । अमरः) व्यपाश्रयिष्ये—वि + अप + आ + श्रि + लृट् = निवेदयिष्ये । निर्वेदप्रत्यर्थिनी खलु प्रार्थना—निर्वेदः = विरागः प्रत्यर्थम् अस्ति अस्याः = शान्त्यभिलाषुका प्रार्थना खलु = याच्ञा खलु ।

प्रथम—उनके आश्रम की ओर से आए हुए किसी ब्राह्मण ने कहा था कि वे शतकुम्भ यज्ञ में सम्मिलित होने महर्षि धौम्य के आश्रम में गए हैं ।

वृद्ध—हाय ! हम सब मारे गए ।

प्रथम (कुमार)—पिता जी ! वे सभी नहीं गए हैं । आश्रम की रक्षा और देखभाल के लिए सम्भवतः मध्यम छोड़ दिए गए हैं ।

वृद्ध—यदि ऐसा है तो (समझो) सब पाण्डव यहीं हैं ।

प्रथम—वह (भीमसेन) भी इस समय व्यायाम करने कहीं दूर गए हैं । ऐसा सुना है ।

वृद्ध—हाय ! हम सब निराश हैं । अच्छा पुत्र तब तक हम इससे ही विनती करें ।

प्रथम—बस, बस, परिश्रम व्यर्थ है ।

वृद्ध—पुत्र ! प्रार्थना मोक्ष की याचना के लिए होगी । अच्छा देखें तब तक, हे पुरुष ! क्या हम लोगों की मुक्ति हो सकती है ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः—मोक्षोऽस्ति समयतः ।

वृद्धः—कः समयः ।

घटोत्कचः—अस्ति मे तत्रभवती जननी । तयाऽहमाज्ञप्तः । पुत्र ! ममोपवासनिसर्गार्थमस्मिन्वनप्रदेशे कश्चिन्मानुषः प्रतिगृह्यानेतव्य इति । ततो मयाऽऽसादितो भवान् ।

पत्न्या चारित्रशालिन्या द्विपुत्रो मोक्षमिच्छसि !
बलाबलं परिज्ञाय पुत्रमेकं विसर्जय ॥ १२ ॥

वृद्धः—हं भो राक्षसापसद ! किमहमब्राह्मणः ।

ब्राह्मणः श्रुतवान्वृद्धः पुत्रं शीलगुणान्वितम् ।

(हे वृद्ध) चारित्रशालिन्या चारित्रेण = सदाचारेण शाल्यते = शोभते यया स तया पत्न्या = धर्मभार्यया सह द्विपुत्रः सन् साम्प्रतमवशिष्टत्वात् यदि मत्तः (घटोत्कचात्) मोक्षं = मुक्तिम् इच्छसि = वाञ्छसि तर्हि बलाबलं = प्रियाप्रियं परिज्ञाय = सम्प्रधार्य विचार्येत्यर्थः, एकं पुत्रं = त्रयाणां मध्ये केवलं विसर्जय = मह्यं देहीत्यर्थः । स्वयं पत्नीं कंचन पुत्रमेकं च यदि रक्षितुमिच्छसि तर्हि सूनुमेकं परित्यजेति भावः । अत्र अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ १२ ॥

(भो नीचराक्षस) अहं वृद्धः = स्थविरः (प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि । अमरः) श्रुतवान् = शास्त्रज्ञः शीलगुणान्वितम् = शीलश्च

घटोत्कच—हाँ, एक शर्त पर ही छुटकारा मिल सकता है ।

वृद्ध—कौन सी शर्त ?

घटोत्कच—मेरी आदरणीया माता हैं । उन्हीं का आदेश है कि हे पुत्र ! मेरे उपवास के पारण के लिए इस वन-प्रदेश से किसी मनुष्य को खोज लाओ । अतः मैंने आप लोगों को पकड़ा है ।

यदि तुम अपनी शीलवती पत्नी और दो पुत्रों के सहित छुटकारे की इच्छा रखते हो तो (इन पुत्रों में से) योग्य और अयोग्य का विचार करके एक को दे दो ॥ १२ ॥

वृद्ध—ओ क्रूर राक्षस ! दूर हट । क्या मैं ब्राह्मण नहीं हूँ ।

मैं, एक वृद्ध शास्त्रज्ञ ब्राह्मण अपने गुणशील-सम्पन्न पुत्र को मानवभक्षी राक्षस के

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुरुषादस्य दत्त्वाहं कथं निर्वृतिमाप्नुयाम् ॥ १३ ॥

घटोत्कचः—

यद्यर्थितो द्विजश्रेष्ठ ! पुत्रमेकं न मुञ्चसि ।
सकुटुम्बः क्षणेनैव विनाशमुपयास्यसि ॥ १४ ॥

वृद्धः—एष एव मे निश्चयः ।

कृतकृत्यं शरीरं मे परिणामेन जर्जरम् ।
राक्षसाग्नौ सुतापेक्षी होष्यामि विधिसंस्कृतम् ॥ १५ ॥

गुणश्च शीलगुणौ ताभ्यामन्वितः तम्, पित्रोस्सेवकं पुत्रं = तनयम् (आत्मजस्तनयस्सूनुः सुतः पुत्र इत्यमरः) पुरुषादस्य पुरुषं = मानुषम् अत्तीति = खादतीति पुरुषादः तस्य राक्षसस्य तुभ्यं दत्त्वा = समर्प्य कथं = केन प्रकारेण अहं = वृद्धः ब्राह्मणः निर्वृतिं नितरां वृतिः निर्वृतिस्ताम् निर्वृतिं = शान्तिम् आप्नुयाम् = लभेय । तुभ्यं पुत्रमेकं समर्प्य कथमपि सुखी न भवामीति भावः । अत्रापि अनुष्टुब् वृत्तम्, परिकरालङ्कारः ॥ १३ ॥

(अङ्ग) द्विजश्रेष्ठ ! द्विजेषु = ब्राह्मणादिषु श्रेष्ठः = पूज्यतमः तत् सम्बुद्धौ, पूज्यब्राह्मण ! यदि = चेत् अर्थितः = याचितस्सन् एकम् = त्रिषु मध्ये केवलं पुत्रम् = सूनुं न मुञ्चसि = नार्पयसि तर्हि सकुटुम्बः कुटुम्बैस्सहितः = परिवारसहितः क्षणेनैव = निमेषमात्रेणैव विनाशं = कथाशेषम् उपयास्यसि = लप्स्यसे । यदि मद्वाचं नाचरिष्यसि तर्हि सपरिवारं विनङ्क्ष्यसीति भावः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ १४ ॥

सुतापेक्षी सुतस्यापेक्षाऽस्तीति = सुतार्थी (अहं) परिणामेन परिणमयतीति परिणामः तेन = परिपाकेन गतवयसा जर्जरम् = शिथिलीभूतम् अनर्थकमित्यर्थः ।

लिए देकर भला किस प्रकार (प्रसन्नता) शान्ति को प्राप्त करूँगा ॥ १३ ॥

घटोत्कच—हे द्विजोत्तम ! यदि मेरे माँगे हुए एक पुत्र को तुम नहीं दोगे तो शीघ्र ही कुटुम्ब के सहित विनाश को प्राप्त होगे ॥ १४ ॥

वृद्ध—मैंने भी वही निश्चय किया है ।

अपने पुत्र की रक्षा के लिए मैं स्वयं अपने संस्कारयुक्त पवित्र शरीर को राक्षस की क्षुधाअग्नि में आहुति कर दूँगा । क्योंकि इस शरीर ने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है और अब वृद्धावस्था के कारण जर्जर हो चुका है ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्राह्मणी—अय्य ! मा मा एवं। पदिमत्तधम्मिणी पदिव्वदत्ति णाम। गहीदफलेण एदिणा सरीरेण अय्यं कुलं अ रक्खिदुमिच्छामि। [आर्यं, मा मैवम्। पतिमात्रधर्मिणी पतिव्रतेति नाम। गृहीतफलेनैतेन शरीरेणार्थं कुलं च रक्षितुमिच्छामि।]

घटोत्कचः—भवति ! न खलु ! स्त्रीजनोऽभिमतस्तत्रभवत्या।

वृद्धः—अनुगमिष्यामि भवन्तम्।

घटोत्कचः—आः वृद्धस्त्वमपसर।

प्रथमः—भोस्तात् ! ब्रवीमि खलु तावत्किंचित्।

वृद्धः—ब्रूहि ब्रूहि शीघ्रम्।

प्रथमः—

मम प्राणैर्गुरुप्राणानिच्छामि परिरक्षितुम्।

विधिसंस्कृतम् = अनुष्ठानेन पूतं कृतकृत्यं कृतं कृत्यं येन स तम् = कृतार्थं सफलमिति यावत्, मे = मम वृद्धस्य = वाडवस्य शरीरं = विग्रहं (शरीरं वर्ष्म विग्रहः। अमरः) राक्षसाग्नौ—राक्षस एव अग्निः राक्षसाग्निः तस्मिन् राक्षसाग्नौ = राक्षसानलमुखे होष्यामि = प्रक्षेप्स्यामि। पुत्ररक्षार्थे अनर्थकं जरठम् इदं स्वीयं शरीरमेव तव मुखे पातयिष्यामीति मे निश्चितमिति भावः। अत्रानुष्टुब् वृत्तम् रूपकालङ्कारश्च ॥ १५ ॥

(अहं प्रथमः पुत्रः) मम = मे प्रथमस्य प्राणैः = असुभिः (पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाः। अमरः)गुरुप्राणान् गुरूणाम् प्राणाः तान् = मातापित्रोः असून् परिरक्षितुम्-

---

ब्राह्मणी—आर्य ! ऐसा न कहो ! पतिव्रता स्त्री के लिए पति ही धर्म है (उसकी रक्षा हर प्रकार से करनी चाहिए)। इस कृतकार्य शरीर को मैं आर्य और पुत्रों को रक्षा के लिए राक्षस को देना चाहती हूँ।

घटोत्कच—देवि ! मेरी पूज्या माता को स्त्री की आवश्यकता नहीं है।

वृद्ध—मैं ही आपके साथ चलूँगा।

घटोत्कच—अरे बुड्ढे ! तुम दूर हटो।

प्रथम—ओ पिता ! मैं कुछ कहना चाहता हूँ।

वृद्ध—कहो, कहो जल्दी।

प्रथम—अपने प्राण को देकर मैं गुरुजनों के प्राणों की रक्षा करना चाहता हूँ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रक्षणार्थं कुलस्यास्य मोक्तुमर्हति मां भवान् ॥ १६ ॥

द्वितीयः—आर्य ! मा मैवम् ।

ज्येष्ठः श्रेष्ठः कुले लोके पितॄणां च सुसंप्रियः ।
ततोऽहमेव यास्यामि गुरुवृत्तिमनुस्मरन् ॥ १७ ॥

तृतीयः—आर्यौ ! मा मैवम् ।

ज्येष्ठो भ्राता पितृसमः कथितो ब्रह्मवादिभिः ।
ततोऽहं कर्त्तुमस्म्यर्हो गुरूणां प्राणरक्षणम् ॥ १८ ॥

परित्रातुम् इच्छामि = वाञ्छामि, ईहे । (अतः) भवान् = जनकः अस्य कुलस्य = वर्तमानस्य मम वंशस्य रक्षणार्थं = त्राणार्थं माम् = प्रथमं पुत्रं मोक्तुम् = त्यक्तुं अर्हति=क्षमः । माम् परित्यज्य स्वीयं कुलम् रक्षेति भावः ॥ १६ ॥

द्वितीयः वदति—(भो जनक !) कुले = वंशे लोके = आमुष्मिके संसारे पितॄणाञ्च = जनकानाञ्च ज्येष्ठः = ज्यायान् अवस्थाकृत इत्यर्थः, श्रेष्ठः = श्रेयान् गुणकृत इत्यर्थः, 'ज्येष्ठः पूज्यतमो लोके ज्येष्ठः सद्भिरगर्हितः' (९।१०९ मनुस्मृतिः) सुसम्प्रियः = अत्यनुरागभाक् भवति, ततः = तस्मात् कारणात् गुरुवृत्तिम् गुरूणां वृत्तिः ताम्=जनकव्यवहारं पूर्वजानामादर्शं वा अनुस्मरन् = स्मरणं कुर्वन् अहमेव = मध्यम एव यास्यामि = गमिष्यामि राक्षसबुभुक्षाशान्त्यर्थंमिति शेषः । अत्राप्यनुष्टुब् वृत्तम् ॥ १७ ॥

तृतीयः वदति ज्येष्ठ इति । ज्येष्ठः=अग्रजः भ्राता = सहोदरः ब्रह्मवादिभिः = मन्वादिमहर्षिभिः (पितेव पालयेत्पुत्रान् ज्येष्ठो भ्रातॄन् यवीयसः । पुत्रवच्चापि

अतः इस शेष कुल की रक्षा के लिए मुझे जाने दीजिए ॥ १६ ॥

द्वितीय—आर्य । ऐसा न कहो ।

ज्येष्ठ पुत्र कुल और लोक में श्रेष्ठ (पूज्य) होता है और पिता को अत्यन्त प्रिय होता है अतः अपने गुरुजनों के प्रति कर्तव्य का स्मरण करता हुआ मैं ही (राक्षस की क्षुधा-शान्ति के लिए) जाऊँगा ॥ १७ ॥

तृतीय—हे आर्यो ! नहीं ऐसा नहीं ।

ज्येष्ठ भाई पिता के समान होता है ऐसा ब्रह्मज्ञ महर्षियों ने कहा है अतः मैं ही अपने पूज्यों की प्राण-रक्षा करने के योग्य हूँ ॥ १८ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रथमः—वत्स ! मा मैवम् ।

आपदं हि पिता प्राप्तो ज्येष्ठपुत्रेण तार्यते ।
ततोऽहमेव यास्यामि गुरूणां प्राणरक्षणात् ॥ १९ ॥

वृद्धः—ज्येष्ठमिष्टतमं न शक्नोमि परित्यक्तुम् ।

ब्राह्मणी—जह अय्यो जेट्ठमिच्छदि तह अहं पि कणिट्ठमिच्छामि ।
[यथार्यो ज्येष्ठमिच्छति तथाहमपि कनिष्ठमिच्छामि ।]

द्वितीयः—पित्रोरनिष्टः कस्येदानीं प्रियः ।

घटोत्कचः—अहं प्रीतोऽस्मि । शीघ्रमागच्छ ।

वर्तेरन् ज्येष्ठे भ्रातरि धर्मतः ॥ ९।१०८ मनुस्मृतिः) पितृसमः—पित्रा=जनकेन समः=तुल्यः कथितः = प्रोक्तः ततः = तस्मात् कारणात् गुरूणाम् = श्रेष्ठानां (गुरुस्तु गीष्पतौ श्रेष्ठे—इत्यमरः), प्राणरक्षणम् = प्राणानां रक्षणम् अर्थात् जीवनत्राणं कर्तुम् = विधातुम् अहम् = तृतीयः पुत्रः अर्हः = योग्यः अस्मि = भवामि । अनुष्टुप् छन्दः ॥ १८ ॥

प्रथमः वदति—आपदमिति । हि = यतः आपदम् = विपत्ति प्राप्तः = अनुगतः पिता = जनकः (ततः) ज्येष्ठपुत्रेण = ज्येष्ठश्चासौ पुत्र = कर्मधारयसमासः तेन = ज्येष्ठात्मजेन तार्यते = विपदः वार्यते ततः = तस्मात् कारणात् गुरूणाम् = जनकानां प्राणरक्षणात्—प्राणानां रक्षणं तस्मात् = जीवनत्राणाद्धेतोः अहमेव = प्रथम एव यास्यामि = गमिष्यामि राक्षसमुखे इति शेषः । अत्रापि अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ १९ ॥

प्रथम—वत्स (प्रिय भाई) । ऐसा नहीं ।

पिता जी आपत्ति में पड़े हैं ज्येष्ठ पुत्र को ही उससे (उनकी) रक्षा करनी चाहिए, अतः पूजनीयों की प्राण-रक्षा के लिए मुझे ही जाना चाहिए ॥ १९ ॥

वृद्ध—ज्येष्ठ (पुत्र) बड़ा प्रिय है उसे नहीं छोड़ सकता ।

ब्राह्मणी—जैसे आप ज्येष्ठ पुत्र को चाहते हैं, वैसे मैं भी छोटे पुत्र को चाहती हूँ ।

द्वितीय—माता-पिता का अनिष्ट इस समय किसे प्रिय है ?

घटोत्कच—मैं प्रसन्न हूँ । (मध्यम पुत्र से) शीघ्र आओ ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

द्वितीयः—

धन्योऽस्मि यद् गुरुप्राणाः स्वैः प्राणैः परिरक्षिताः ।
वन्धुस्नेहाद्धि महतः कायस्नेहस्तु दुर्लभः ॥ २० ॥

घटोत्कचः—अहो स्वजनवात्सल्यमस्य ब्राह्मणवटोः ।

द्वितीयः—भोस्तात ! अभिवादये ।

वृद्धः—एह्येहि पुत्र ।

विनिमाय गुरुप्राणान् स्वैः प्राणैर्गुरुवत्सल ।

द्वितीयः वदति धन्य इति । (अहं द्वितीयः) धन्यः=सौभाग्यशाली अस्मि = भवामि यत् = यतः स्वैः—स्वकीयैः प्राणैः जीवनैः गुरुप्राणाः = गुरूणां प्राणाः = श्रेष्ठजीवनानि परिरक्षिताः = परित्राताः हि=यतः महतः = विशिष्टाद् वन्धुस्नेहात्—वन्धूनां स्नेहः तस्मात् = ज्ञातिप्रेमतः (सगोत्रवान्धवज्ञातिवन्धुस्वस्वजनाः समाः । अमरः ।) कायस्नेहः = शरीरानुरागः दुर्लभः = दुःखेन लब्धुं योग्यः अप्राप्य इति भावः (कालिदासकृतरघुवंशे दिलीपोपि एवमेव वदति—'किमप्यहिंस्यस्तव चेन्मतोऽहं यशःशरीरे भव मे दयालुः । एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु ॥' २।५७) अत्रार्थान्तरन्यासालङ्कारः अनुष्टुव् वृत्तम् ॥ २० ॥

आशीर्वादात्मकेऽस्मिन् श्लोके वृद्धः पुत्रं (मध्यमकुमारं) संवोध्य वदति—(हे) गुरुवत्सल—गुरुषु वत्सलस्तत्संबुद्धौ = पूज्यजनानुरागि ! स्वैः = स्वकीयैः प्राणैः=असुभिः गुरुप्राणान् = तातजीवान् विनिमाय = विनिमयित्वेति (आदान-

---

दूसरा कुमार—मैं धन्य हुआ कि अपने जीवन को देकर गुरुजनों के प्राणों की रक्षा की क्योंकि परिवार का प्रेम (तुच्छ) शरीर के प्रेम की अपेक्षा दुर्लभ होता है ॥ २० ॥

घटोत्कच—अहा ! इस ब्राह्मण-कुमार का परिवार-प्रेम धन्य है ।

द्वितीय—हे पिता जी ! अभिवादन करता हूँ ।

वृद्ध—आओ, आओ पुत्र ।

ओ गुरुभक्त पुत्र तुमने अपने प्राणों का विनिमय करके अपने पूज्यों के प्राणों की रक्षा की

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अकृतात्मदुरावापं ब्रह्मलोकमवाप्नुहि ॥ २१ ॥

द्वितीयः—अनुगृहीतोऽस्मि । अम्ब ! अभिवादये ।

ब्राह्मणी—जाद ! चिरं जीव । [जात ! चिरं जीव ।]

द्वितीयः—अनुगृहीतोऽस्मि । आर्य ! अभिवादये ।

प्रथमः—एह्येहि वत्स ।

परिष्वजस्व गाढं मां परिष्वक्तः शुभैर्गुणैः ।
कीर्त्या तव परिष्वक्ता भविष्यति वसुन्धरा ॥ २२ ॥

द्वितीयः—अनुगृहीतोऽस्मि ।

प्रदानं कृत्वा) अकृतात्मदुरावापम्—अकृतात्मभिः = अजितेन्द्रियैः दुःखेन अवाप्तुं योग्यम् अर्थात् अप्राप्यं ब्रह्मलोकं = स्वर्गलोकम् अवाप्नुहि = लभस्व । यतस्त्वया स्वप्राणैः स्वीयानां गुरुजनानां प्राणाः परिरक्षिताः ततः सर्वेषामनवाप्यं पदं भुङ्क्ष्वेति भावः । अत्रानुप्रासालङ्कारः अनुष्टुब् वृत्तञ्च ॥ २१ ॥

अग्रजः एवं वदति परिष्वजेति । (हे वत्स) शुभैः = शोभनैः गुणैः = दयादाक्षिण्यादिभिः परिष्वक्तः = आलिङ्गितः त्वम् माम् = अग्रजं गाढं = घनं परिष्वजस्व = आलिङ्गय । (यतः) तव = भवतः कीर्त्या = यशसा (यशः कीर्तिः समज्ञा चेत्यमरः ।) वसुन्धरा = सर्वंसहा (सर्वंसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुन्धरा इत्यमरः ।) परिष्वक्ता = आलिङ्गिता भविष्यति । अनुप्रासालङ्कारः अनुष्टुप् छन्दश्च ॥ २२ ॥

है, तुम्हें वह ब्रह्मलोक (सालोक्य मुक्ति) प्राप्त हो जो अजितेन्द्रिय पापात्माओं के लिए सर्वथ दुर्लभ है ॥ २१ ॥

द्वितीय—अनुगृहीत हुआ । माँ ! अभिवादन करता हूँ ।

ब्राह्मणी—बेटा ! चिरकाल तक जिओ ।

द्वितीय—अनुगृहीत हुआ । आर्य ! अभिवादन करता हूँ ।

प्रथम—आओ आओ प्रिय सहोदर !

मुझे अपने घने आलिंगनपाश में बांध लो तुम शुभ गुणों से विभूपित हो । तुम्हारे पुण्य यश से सारी पृथिवी विभूषित (गौरवान्वित) होगी ॥ २२ ॥

द्वितीय—अनुगृहीत हुआ ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तृतीयः—आर्य ! अभिवादये ।

द्वितीयः—स्वस्ति ।

तृतीयः—अनुगृहीतोऽस्मि !

द्वितीयः—भोः पुरुष । किंचिद् ब्रवीमि ।

घटोत्कचः—ब्रूहि ब्रूहि शीघ्रम् ।

द्वितीयः—एतस्मिन्वनान्तरे जलाशय इव दृश्यते । तत्र मे प्रकल्पित-परलोकस्य पिपासाप्रतीकारं करिष्यामि ।

घटोत्कचः—दृढव्यवसायिन् ! गम्यताम् । अतिक्रामति मातुराहार-कालः । शीघ्रमागच्छ ।

द्वितीयः—भोस्तात ! एष गच्छामि । (निष्क्रान्तः ।)

वृद्धः—हा हा परिमुषिताः स्मो भोः ! परिमुषिताः स्मः ।

यस्त्रिशृङ्गो मम त्वासीन्मनोज्ञो वंशपर्वतः ।

वृद्धः मानसिकं परिखेदं व्यञ्जयति यस्त्रिशृङ्ग—इत्यादिना । यस्तु = यो हि मम= वृद्धस्य मनोज्ञः—कान्तः (कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् इत्यमरः ।) वंशपर्वतः—वंश एव = अन्वय एव (संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ । अमरः ।) पर्वतः = अचलः त्रिशृङ्गः त्रीणि शृङ्गाणि यस्मिन् स तथाभूतः आसीत् =

तृतीय—आर्य ! (आपको) प्रणाम करता हूँ ।

द्वितीय—कल्याण हो ।

तृतीय—अनुगृहीत हुआ ।

द्वितीय—(घटोत्कच से) हे पुरुष ! मैं कुछ कहना चाहता हूँ ।

घटोत्कच—कहो, जल्दी कहो ।

द्वितीय—इस जंगली प्रदेश में कुछ तालाब सा दिखाई देता है । मैं परलोक यात्रा के लिए प्रस्तुत हूँ अतः अपनी प्यास बुझा लूँ ।

घटोत्कच—ओ दृढ़ निश्चय वाले ! जाओ, मेरी माता के भोजन का समय बीत रहा है (अतः) जल्दी चले आना ।

द्वितीय—हे पिता जी ! (अब) यह मैं जाता हूँ ।

वृद्ध—हाय ! हाय !! हम सब ठग लिए गए । लूट लिए गए ।

मेरे पर्वतरूपी (उच्च एवं दृढ़) वंश के परम रमणीय जो तीन शिखर थे, उसके मध्य

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स मध्यशृङ्गभङ्गेन मनस्तपति मे भृशम् ॥ २३ ॥

हा पुत्रक ! कथं गत एव ।

तरुण ! तरुणतानुरूपकान्ते !
नियमपराध्ययनप्रसक्तबुद्धे ! ।
कथमिव गजराजदन्तभग्न-
स्तरुरिव यास्यसि पुष्पितो विनाशम् ॥ २४ ॥

अभूत् सः = पर्वतः मध्यत्रिशृङ्गभङ्गेन—मध्यश्चासौ शृङ्गः=मध्यमशिखरः (कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गमित्यमरः ।) तस्य भङ्गेन = पातेन मे = मम (वृद्धस्य) मनः = मानसं (चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः । अमरः । भृशं = प्रचुरं तपति = दुःखमनुभवति । अनुष्टुप् छन्दोऽस्मिन् साङ्गरूपकालङ्कारः ॥ २३ ॥

वृद्धः सन्तापं प्रकटयति—तरुणेत्यादिना । (हे) तरुणः युवन् (वयःस्थस्तरुणो युवा । अमरः ।) तरुणतानुरूपकान्ते—तरुणस्य भावः तरुणता तस्याः अनुरूपा कान्तिर्यस्य स तत्सम्बुद्धौ = यौवनानुरूपसौन्दर्यसम्पन्न, नियमपराध्ययनप्रसक्तबुद्धे ! नियमपराऽध्ययनप्रसक्ता च बुद्धिर्यस्य स तत्—सम्बुद्धौ = संयमनिरताध्ययनतत्परमते ! (तत्परे प्रसितासक्तावित्यमरः ।), इह = संसारेऽस्मिन् गजराजदन्तभग्नः—गजानां = करिसमूहानां (मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी । अमरः) राजा = ईशः तस्य दन्तः = रदः तेन भग्नः = भञ्जितः पुष्पितः = कुसुमितः तरुरिव = पादप इव (विटपी पादपस्तरुरित्यमरः । कथं = केन प्रकारेण विनाशं = नाशभावं यास्यसि = प्राप्स्यसि । 'अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।' इत्यत्र पुष्पिताग्रा वृत्तम् , तरुण—तरुणतेति यमकः तारुण्यसम्पन्नब्राह्मणकुमारस्य पुष्पितवृक्षेण सादृश्यं निरूपितम् अतएव सादृश्यमूलक उपमालङ्कारः ॥ २४ ॥

शृङ्ग के टूट जाने से मुझे बड़ा सन्ताप हो रहा है ॥ २३ ॥

हा पुत्र, क्या चले ही गए ?

(हे पुत्र) युवावस्था की अपूर्व स्वाभाविक शोभा से मण्डित ! संयमी एवं स्वाध्याय में दत्त-चित्त (युवक) ! तुम सुपुष्पित वृक्ष के समान यहाँ (इस निर्दय संसार में) प्रमत्त मातङ्ग के दन्ताघात से विनष्ट कर दिए गए ॥ २४ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः—चिरायते खलु ब्राह्मणवटुः । अतिक्रामति मातुराहार-कालः । किं नु खलु करिष्ये । भवतु दृष्टम् । भो ब्राह्मण ! आहूयतां तव पुत्रः ।

वृद्धः—आः अतिराक्षसं खलु ते वचनम् ।

घटोत्कचः—कथं रुष्यति । मर्षयतु भवान्मर्षयतु । अयं मे प्रकृतिदोषः । अथ किंनामा तव पुत्रः ।

वृद्धः—एतदपि न शक्यं श्रोतुम् ।

घटोत्कचः—युक्तम् । भोः ! ब्राह्मणकुमार ! किंनामा ते भ्राता ।

प्रथमः—तपस्वी मध्यमः ।

घटोत्कचः—मध्यम इति सदृशमस्य । अहमेवाह्वयामि । भो मध्यम ! मध्यम ! शीघ्रमागच्छ ।

(ततः प्रविशति भीमसेनः ।)

भीमः—कस्यायं स्वरः ।

घटोत्कच—ब्राह्मणकुमार अवश्य ही देर कर रहा है। माता के आहार का समय बीत रहा है । (मुझे) क्या करना चाहिए ? अच्छा, देखा । (समझा) हे ब्राह्मण ! अपने पुत्र को बुलाओ ।

वृद्ध—आह ! तुम्हारे वचन बड़े राक्षसी (पुरुष) हैं ।

घटोत्कच—क्यों (आप) क्रुद्ध हो रहे हैं । मुझे क्षमा कीजिए, आप क्षमा कीजिए । यह तो मेरे स्वभाव का ही दोष है । अच्छा, तुम्हारे पुत्र का क्या नाम है ?

वृद्ध—इस (वचन) को भी सुनने में (मैं) असमर्थ हूँ ।

घटोत्कच—ठीक है, हे ब्राह्मण (के) पुत्र ! तुम्हारे भाई का क्या नाम है ?

प्रथम—बेचारा मध्यम ।

घटोत्कच—मध्यम नाम (सर्वथा) उसके उपयुक्त ही है। मैं ही पुकारता हूँ । हे मध्यम ! मध्यम !! शीघ्र आओ ।

(तब भीमसेन आते हैं ।)

भीम—यह किसका स्वर है ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खगशतविरुते विरौति तारं
द्रुमगहने दृढसंकटे वनेऽस्मिन् ।
जनयति च मनोज्वरं स्वरोऽयं
बहुसदृशो हि धनंजयस्वरस्य ॥ २५ ॥

घटोत्कचः—चिरायते खलु ब्राह्मणवटुः । अतिक्रामति मातुराहारकालः । किं न खलु करिष्ये । भवतु दृष्टम् । उच्चैः शब्दापयामि । भो मध्यम । शीघ्रमागच्छ ।

भीमः—भोः । को नु खल्वेतस्मिन्वनान्तरे मम व्यायामविघ्नमुत्पाद्य

भीमः घटोत्कचस्य शब्दं श्रुत्वा सम्भावयति—खगेति । खगशतविरुते = पक्षिशतस्य (खगे विहङ्गविहगविहङ्गमविहायसः । शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः । अमरः) विरुते = शब्दसहिते, दृढसंकटे = अतिसम्बाधापन्ने (संकटं ना तु सम्बाधः । अमरः ।) अतिसंकटोपस्थिते वा द्रुमाः = वृक्षाः, (वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः । अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः । अमरः ।) तैः गहने = व्याप्ते अस्मिन् वने = कानने (अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् । अमरः) स्वरोऽयम् = अयं शब्दः तारं विरौति = उच्चैः ध्वनति, च = तथा मनोज्वरम् = उत्कण्ठाम् उत्सुकतां वा जनयति = उत्पादयति हि = यतः धनञ्जयस्य = अर्जुनस्य स्वरः = शब्दः तस्य बहुसदृशः = अत्यन्तसमानः अयं स्वरः = इयं वाणी अस्तीति शेषः । अत्र पुष्पिताग्रा वृत्तं स्मरणालङ्कारश्च ॥ २५ ॥

शब्दापयामि = (शब्द + आप् + णिच्) आह्वयामि ।

(जो) सैकड़ों पक्षियों की चहचहाहट से युक्त, अनेक वृक्षों से संकुलित, अत्यन्त गहन इस वन में उच्चस्वर से पुकारता है । यह अर्जुन के स्वर से बहुत मिलता है (अतः) मेरे मन में बड़ा कौतूहल है ॥ २५ ॥

घटोत्कच—यह ब्राह्मणकुमार बड़ी देरी कर रहा है । माता जी के भोजन का समय बीत रहा है । क्या करूँ ? अच्छा, और जोर से पुकारूँ । हे मध्यम ? शीघ्र आओ ।

भीम—अरे ! कौन हैं, इस वन में (जो) मेरे व्यायाम-क्रिया में विघ्न डालकर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मध्यम इति मां शब्दापयति । भवतु पश्यामस्तावत् । (परिक्रम्यावलोक्य सविस्मयम् । अहो दर्शनीयोऽयं पुरुषः । अयं हि,

सिंहास्यः सिंहदंष्ट्रो मधुनिभनयनः स्निग्धगम्भीरकण्ठो
बभ्रुभ्रूः श्येननासो द्विरदपतिहनुर्दीप्तविश्लिष्टकेशः ।
व्यूढोरा वज्रमध्यो गजवृषभगतिर्लम्बपीनांसबाहुः
सुव्यक्तं राक्षसीजो विपुलबलयुतो लोकवीरस्य पुत्रः । २६॥

भीमसेनः घटोत्कचस्य अलौकिकशरीरसंघटनां सिंहास्य इत्यादिना वर्णयति । सिंहास्यः—सिंह इव = केसरी इव (सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिरित्यमरः) । आस्यं = मुखं (वक्त्रास्यवदनं तुण्डमाननं लपनं मुखमित्यमरः ।) यस्य सः, सिंहदंष्ट्रः—सिंहस्य = मृगेन्द्रस्य दंष्ट्रा = दन्तः इव दंष्ट्रा यस्य सः, मधुनिभनयनः—मधुनिभे नयने यस्य सः = मधुरेक्षणः (लोचनं नयनं नेत्रमित्यमरः । स्निग्धः = मसृणः गम्भीरः = उन्नतः कण्ठः = ग्रीवा यस्य सः बभ्रुभ्रूः = बभ्रू = पिङ्गलवर्णौ भ्रुवौ = भृकुटी यस्य सः, श्येननासः—श्येनस्य = शशादनस्य नासा इव (शशादनः पत्री श्येनः । अमरः ।) नासा=घोणा (घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका । अमरः) द्विरदपतिहनुः—द्वौ रदौ = दन्तौ येषां तेषां पतिः = गजेन्द्रः तस्य हनुरिव हनुः यस्य सः, दीप्तविश्लिष्टकेशः—दीप्ताः = दीर्घाः विश्लिष्टाः = विरलाः शिथिला वा केशाः = कचाः (चिकुरः कुन्तलो वालः कचः केशः शिरोरुह इत्यमरः । यस्य सः, व्यूढोरा = व्यूढं = विपुलम् उरः = वक्षः (उरो वत्सं च वक्षश्चेत्यमरः) यस्य सः, वज्रमध्यः—वज्र इव = कुलिशम्

'मध्यम' ऐसा मुझे पुकारता है ? अच्छा तो (चलकर) देखूं । (मुड़कर देखता है और विस्मय के सहित कहता है) अहा ! वह मनुष्य वास्तव में दर्शन करने के योग्य है । यह तो,

सिंह के समान (भयङ्कर) मुँह और दाढ़, शराब सी (मतवाला बनाने वाली) आँखें, चिकना और ऊँचा गला, भूरी भवें, बाज की (नासिका की) तरह नाक, गजेन्द्र के समान ठोढ़ी, लम्बे और बिखरे हुए केश, सुविस्तीर्ण सीना, वज्र सा कठोर कटिप्रदेश, गज और बैल (या गजवृषभ = गजश्रेष्ठ) के समान गति, लम्बे और पृथुल कन्धा और भुजाओं वाला अत्यन्त बलशाली (यह) स्पष्ट ही किसी राक्षसी और विश्वविख्यात योद्धा का पुत्र है ॥ २६ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः—चिरायते खलु ब्राह्मणवटुः । उच्चैः शब्दापयामि। भो भो ! मध्यम । शीघ्रमागच्छ ।

भीमः—भोः ! प्राप्तोऽस्मि ।

घटोत्कचः—न खल्वयं ब्राह्मणवटुः । अहो दर्शनीयोऽयं पुरुषः। य एष—

सिंहाकृतिः कनकतालसमानबाहु-
मध्ये तनुर्गरुडपक्षविलिप्तपक्षः ।

इव (वज्रोऽस्त्री कुलिशं पविरित्यमरः) मध्यः = मध्यभागः यस्य सः, गजवृष-भगतिः—गजवृषभयोर्गतिरिव गतिर्यस्य सः = द्विपोक्षगमनः लम्बौ = आयतौ पीनांसबाहू—पीनौ = विशालौ अंसौ = स्कन्धौ (स्कन्धो भुजशिरोंऽस इत्यमरः ।) बाहू = भुजे यस्य सः, विपुलबलयुतः—विपुलं च तत् बलं तेन युतः = महद्बल-संयुतः महाबलवानित्यर्थः । राक्षसीजः—राक्षस्यां = हिडिम्बायां जातः लोकवीरस्य-लोके वीरः तस्य सप्तमीसमासः = जगत्प्रसिद्धबलशालिनः (अयं) पुत्रः = सूनुः—सुव्यक्तं—सुतरां व्यक्तं प्रत्यक्षमित्यर्थः । अत्र परिकरकाव्यलिङ्गोपमानु-मानालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितवृत्तं तल्लक्षणम्—'सूर्याश्वैर्यदि यः सजौ सततगा' इति ॥ २६ ॥

घटोत्कचः भीमस्य अद्भुतरूपं वर्णयति—सिंहादिना ।

अयं = समागन्ता जनः सिंहाकृतिः—सिंहस्य आकृतिः इव आकृतिर्यस्य सः = मृगेन्द्राकारः (सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्य इत्यमरः ।), कनकतालसमानबाहुः—कनकस्य= सुवर्णस्य तालवृक्षः तेन समानौ = बाहू = भुजे यस्य सः, मध्ये = मध्यभागे तनुः—कृशः गरुडपक्षविलिप्तपक्षः—गडस्य = गरुत्मत पक्षाभ्यां = पत्राभ्यां विलिप्तौ =

घटोत्कच—अवश्य ही ब्राह्मणकुमार देरी कर रहा है । माता जी के भोजन का समय बीत रहा है । अब क्या करूँ ? अच्छा ऊँचे स्वर से पुकारूँ । हे हे मध्यम ! शीघ्र आओ ।

भीम—हे ! मैं आ गया ।

घटोत्कच—यह तो वास्तविक ब्राह्मणकुमार नहीं है, अहा यह पुरुष तो दर्शन करने के योग्य है । जो यह,

सिंह के समान आकृति (रूप), सोने के ताड़ वृक्ष सी (लम्बी) बाहें, क्षीण कटि, गरुड़ के पङ्ख से चिकने पार्श्वों, प्रफुल्ल कमल दल के समान विशाल

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विष्णुर्भवेद्विकसिताम्बुजपत्रनेत्रो
नेत्रे ममाहरात बन्धुरिवागतोऽयम् ॥ २७ ॥

भो मध्यम ! त्वां खल्वहं शब्दापयामि ।

भीमः—अतः खल्वहं प्राप्तः ।

घटोत्कचः—किं भवानपि मध्यमः ।

भीमः—न तावदपरः ।

मध्यमोऽहमवध्यानामुत्सिक्तानां च मध्यमः ।
मध्यमोऽहं क्षितौ भद्र भ्रातृणामपि मध्यमः ॥ २८ ॥

घृष्टौ पक्षौ = पार्श्वे यस्य सः, विकसिताम्बुजपत्रनेत्रः—विकसिते = प्रफुल्लिते अम्बुज-पत्रे = कमलदले इव नेत्रे यस्य सः बन्धुरिव = सुहृदिव आगतः—प्राप्तः विष्णुः = उपेन्द्र भवेत् = भवितुमर्हति (यतः) मम = घटोत्कचस्य नेत्रे = चक्षुषी आह-रति = सम्मोहयति आकर्षयतीत्यर्थः । पक्षविलिप्तपक्षे यमकः अन्तिमयोः चरणयोः सन्देहः तथा बन्धुरिवोत्प्रेक्षा अलङ्कारः वसन्ततिलका वृत्तञ्च ॥ २७ ॥

भीमः नैजं परिचयं ददत् राक्षसं प्रत्याह—मध्यम इत्यादिना ।

(हे) भद्र = सौम्य अहं = भीमः अवध्यानां = हन्तुमयोग्याः तेषाम् अमरणा-र्हाणां मध्यमः = पाण्डवानां मध्य इति भावः । उत्सिक्तानां = निष्कासितानां शौर्योद्धतानां वा मध्ये मध्यमः, अहं = भीमः क्षितौ—लोके भूलोकत्वेन तत्सम्बन्धा-दहं मध्यमो मध्यमलोकभवो मानुष इत्यर्थः । भ्रातृणां = सहोदराणां युधिष्ठिरादीनां मध्ये अहं मध्यमः भीम इत्यर्थः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ २८ ॥

नेत्रों वाला बन्धु के समान आया हुआ यह विष्णु हो सकता है जो मेरे नेत्रों को आकृष्ट कर रहा है ॥ २७ ॥

हे मध्यम ! मैं तुम्हें ही बुला रहा हूँ ।

भीम—अतः मैं आ गया ।

घटोत्कच—क्या आप भी मध्यम हैं ?

भीम—तो दूसरा नहीं । (क्योंकि—)

अमृतधर्मात्माओं में मैं मध्यम हूँ और स्वाभिमानियों (वन में निर्वासितों) में भी । हे भद्र ! मैं पृथ्वी पर (त्रिलोकों में) मध्य में हूँ अपने भाइयों में भी (उत्पत्ति क्रम से मझला) मध्यम मैं ही हूँ ॥ २८ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः—भवितव्यम् ।

भीमः—अपि च,

मध्यमः पञ्चभूतानां पार्थिवानां च मध्यमः ।
भवे च मध्यमो लोके सर्वकार्येषु मध्यमः ।। २९ ।।

वृद्धः—

मध्यमस्त्विति संप्रोक्ते नूनं पाण्डवमध्यमः ।
अस्मान्मोक्तुमिहायातो दर्पान्मृत्योरिवोत्थितः ।। ३० ।।

(प्रविश्य)

भीमः भङ्ग्यन्तरेण पूर्वोक्तिमेव पुनः स्पष्टयति—पञ्चभूतानां = पृथिव्यादीनां मध्ये अहं मध्यमः = मध्यभूतां पार्थिवानां—पृथिव्या ईश्वराः पार्थिवाः तेषां = राज्ञां मध्ये च अहं मध्यमः भवे = प्रादुर्भावे मध्यमः मम मध्योत्पत्तिरित्यर्थः, लोके—भुवने (लोकस्तु भुवने जने इत्यमरः ।) सर्वकार्येषु = अशेषव्यापारेषु मध्यमः = मध्यस्थः ।। २९ ।।

वृद्ध आत्मगतं विचारयति—मध्यमस्त्विति ।

(अहं) मध्यम इति सम्प्रोक्ते = समुच्चारणे नूनं = निश्चितं पाण्डवमध्यमः—पाण्डवेषु मध्यमः (भीमोऽयमिति भावः ।) दर्पात्—गर्वात् मृत्योः = अन्तकादिव उत्थितः = उद्युक्तः अस्मात् = राक्षसात् मोक्तुं = निराकर्तुम् अस्माकमिति शेषः, इह अस्मिन् स्थाने आयातः = आगत इति प्रतिभाति । उत्प्रेक्षालङ्कारः अनुष्टुब् वृत्तम् ।। ३० ।।

घटोत्कच—होंगे ।

भीम—और भी—

पञ्चभूतों (पृथिवी जल अग्नि वायु आकाश) में मैं मध्यम (वायु) हूँ, राजाओं में भी मैं मध्यम हूँ, इस लोक में उत्पन्न होने वालों में मैं मध्यम हूँ तथा सब कार्यों में भी ।। २९ ।।

वृद्ध—इसने 'मध्यम' ऐसा कहा है तो अवश्य ही पाण्डवों में मध्यम (भीम) होंगे। यहाँ हम लोगों को मृत्यु के दर्प से छुड़ाने के ही लिए आए हैं ।। ३० ।।

(प्रवेश करके)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मध्यमः—

अस्यामाचम्य पद्मिन्यां परलोकेषु दुर्लभम् ।
आत्मनैवात्मनो दत्तं पद्मपत्रोज्ज्वलं जलम् ॥ ३१ ॥

(उपगम्य) भोः पुरुष ! प्राप्तोऽस्मि ।

घटोत्कचः—भवानिदानीं खल्वसि मध्यमः । मध्यम ! इत इतः ।

वृद्धः—(भीमसेनमुपगम्य) भो मध्यम ! परित्रायस्व ब्राह्मणकुलम् ।

भीमः— न भेतव्यम् । न भेतव्यम् । मध्यमोऽहमभिवादये ।

वृद्धः—वायुरिव दीर्घायुर्भव ।

भीमः—अनुगृहीतोऽस्मि । कुतो भयमार्यस्य ।

वृद्धः—श्रूयताम् । अहं खलु कुरुराजेन युधिष्ठिरेणाधिष्ठितपूर्वे कुरु-

---

अस्यामिति । अस्यां = पुरोवर्तिन्यां पद्मिन्यां पद्मानि अस्यां सन्ति इति पद्मिनी तस्यां = वाप्यां परलोकेषु = स्वर्गादिषु दुर्लभं—दुःखेन लब्धुं योग्यम् = अप्राप्यम् पद्मपत्रोज्ज्वलं = पद्मपत्रम् = कमलदलम् इव उज्ज्वलं=स्वच्छं जलं=सलिलं (सलिलं कमलं जलम् । अमरः) आचम्य = पीत्वा आत्मनैव = असहायेन सन्तान-विहीनेन स्वेनैव आत्मनः = स्वस्य दत्तं = प्रदत्तम् । अत्रानुप्रासः अलङ्कारः, अनुष्टुप् छन्दः ॥ ३१ ॥

मध्यम—इस कमलपूरित सरोवर के कमलदल से उज्ज्वल तथा स्वच्छ जल को जो परलोक में दुर्लभ है, स्वयं अपने को ही (पुत्रविहीन होने के कारण भविष्य में तर्पणादि की आशा न रहने से) दे लिया है ॥ ३१ ॥

(समीप जाकर) हे पुरुष ! मैं आ गया ।

घटोत्कच—वास्तव में तुम ही अब मध्यम हो (न कि यह दूसरा) मध्यम ! इधर-इधर (आओ) ।

वृद्ध—(भीमसेन के पास जाकर) हे मध्यम ! ब्राह्मण कुल की रक्षा करो ।

भीम—डरना नहीं चाहिए । डरना नहीं चाहिए । मैं मध्यम अभिवादन करता हूँ ।

वृद्ध—वायु के समान चिरञ्जीवी हो ।

भीम—अनुगृहीत हुआ ! आर्य को किस से भय है ।

वृद्ध—सुनिए । मैं वास्तव में कुरुवंश के युधिष्ठिर राजा से पहले शासित कुरुजाङ्गल

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाङ्गले यूपग्रामवास्तव्यो माठरसगोत्रश्च कल्पशाखाध्वर्युः केशवदासो नाम ब्राह्मणः। तस्य ममोत्तरस्यां दिशि उद्यामकग्रामवासी मातुलः कौशिकसगोत्रो यज्ञवन्धुर्नामास्ति। तस्य पुत्रोपनयनार्थं सकलत्रोऽस्मि प्रस्थितः।

भीमः—अरिष्टोऽस्तु पन्थाः। ततस्ततः।

वृद्धः—ततो मामेष हि।

सजलजलदगात्रः पद्मपत्रायताक्षो
मृगपतिगतिलीलो राक्षसः प्रोग्रदंष्ट्रः।
जगति विगतशङ्कस्त्वद्विधानां समक्षं
ससुतपरिजनं भो! हन्तुकामोऽभ्युपैति ॥ ३२ ॥

सकलत्रः = सपत्नीकः। अरिष्टः = विघ्नरहितः पान्थः = मार्गः अस्तु = भवतु।

वृद्धः अपायस्वरूपोपस्थितं घटोत्कचं वर्णयति—सजलादिना।

भोः! = भद्र! (एष) सजलजलदगात्रः=जलेन सहितः सजलः, जलं ददातीति जलदः, सजलश्चासौ जलदः तस्य गात्रम् इव गात्रं यस्य सः = सनीरमेघशरीरः (गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः इत्यमरः।) अर्थात् तद्वत् नीलः, पद्मपत्रायताक्षः—पद्मपत्रे इव आयते अक्षिणी यस्य सः—कमलदलविशालनेत्रः मृगपतिगतिलीलः—मृगाणां पतिः तस्य गतिः तस्याः लीला इव लीला यस्य सः = सिंहगमनविलासः प्रोग्रदंष्ट्रः—प्रोग्रा = समुन्नता दंष्ट्रा = दन्तः यस्य सः = प्रोत्थितदन्तः जगति = संसारे विगतशङ्कः विगता शङ्का यस्य सः = निर्द्वन्द्वः राक्षसः =

(कुरुक्षेत्र) में यूप ग्राम में रहने वाले, माठर के सगोत्र, कल्पशाखा का अध्वर्यु (पुरोहित) केशवदास नामक ब्राह्मण हूँ। उस मेरे गांव से उत्तर दिशा में उद्यामक नामक ग्राम में यज्ञवन्धु नामक मेरे मामा रहते हैं। उन्हीं के पुत्र के उपनयन संस्कार में सम्मिलित होने के लिए मैं सपत्नीक जा रहा हूँ।

भीम—तुम्हारी यात्रा निर्विघ्न हो। तब और क्या हुआ।

वृद्ध—तब मुझे यह—

जलपूर्ण मेघ के समान (श्याम) शरीर वाला, कमल दल के समान बड़ी-बड़ी आखों और सिंह के दाढ़ों के समान बाहर निकले हुए दांतों वाला, संसार में निर्भय होकर तुम्हारे (ऐसे वीरों के) सामने यह राक्षस स्त्री-पुत्र के सहित मुझे मारने को उद्यत हैं। ॥ ३२ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भीमः—एवम् । अनेन ब्राह्मणजनस्य मार्गविघ्नः कृतः । भवतु निग्रहिष्यामि तावदेनम् । भोः पुरुष ! तिष्ठ तिष्ठ ।

घटोत्कचः—एष स्थितोऽस्मि ।

भीमः—किमर्थं ब्राह्मणजनमपराध्यसि ।

पुत्रनक्षत्रकीर्णस्य पत्नीकान्तप्रभस्य च ।
वृद्धस्य विप्रचन्द्रस्य भवान् राहुरिवोत्थितः ॥ ३३ ॥

घटोत्कचः—अथ किम् । राहुरेव ।

भीमः – आः,

नक्तश्चरः (नक्तश्चरो रात्रिचरो कर्बुरो निकषात्मजः । अमरः) त्वद्विधानां—तव विधा इव विधा येषां = तत्सदृशानां समक्षम्—अक्षणः समम् = प्रत्यक्षं ससुतपरिजनं–सुतैः परिजनैश्च सहितं = सपरिवारं हन्तुकामः—अत्तुकामः अभ्युपैति = समायाति । अत्रोपमा स्वभावोक्तिरलंकारौ मालिनीवृत्तम् ॥ ३२ ॥

भीमः वृद्धविप्रस्य स्थितिं प्रकाशयति—पुत्रादिना ।

(भो राक्षस !) पुत्रनक्षत्रकीर्णस्य—पुत्राः एव नक्षत्राणि तैः कीर्णः तस्य = सूनूडुगणव्याप्तस्य, पत्नीकान्तप्रभस्य च—पत्नी एव कान्ता प्रभा यस्य तस्य = प्रियामनोज्ञज्योत्स्नस्य, वृद्धस्य=जरठस्य विप्रचन्द्रस्य—विप्र एव चन्द्रः तस्य = ब्राह्मणेन्दोः भवान् = घटोत्कचः राहुरिव = सैंहिकेय इव (तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः । अमरः) उत्थितः=तत्परः किंकारणमत्रेति भावः । अत्र रूपकगर्भितोपमा अलंकारः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ३३ ॥

भीम—ऐसा ? इसने ब्राह्मण के मार्ग में विघ्न उपस्थित किया है । अच्छा, तो मैं इसे दण्ड दूँगा । हे पुरुष ठहरो, ठहरो ।

घटोत्कच—यह मैं रुका हूँ ।

भीम—किस लिए ब्राह्मण बेचारे को कष्ट दे रहे हो ।

नक्षत्र के समान पुत्रों और सुन्दर ज्योत्स्ना सी पत्नी से युक्त इस बूढ़े (पूर्ण) चन्द्र को तुम राहु के समान ग्रसने आए हो ? ॥ ३३ ॥

घटोत्कच—और क्या ! राहु ही ।

भीम—आह ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निवृत्तव्यवहारोऽयं सदारस्तनयैः सह।
सर्वापराधेऽवध्यत्वान्मुच्यतां द्विजसत्तमः ॥ ३४ ॥

घटोत्कचः—न मुच्यते।

भीमः—(आत्मगतम्) भोः! कस्य पुत्रेणानेन भवितव्यम्।

भ्रातॄणां मम सर्वेषां कोऽयं भो! गुणतस्करः।
दृष्टैतद्बालशौण्डीर्यं सौभद्रस्य स्मराम्यहम् ॥ ३५ ॥

निवृत्तेति। निवृत्तव्यवहारः—निवृत्ताः व्यवहाराः यस्य सः = व्यावृत्तैहिक-व्यापारः, सर्वापराधेऽपि—सर्वश्चासौ अपराधः तस्मिन् = दोषसंकुलेऽपि अवध्यत्वात् = प्राणवियोगानुकूलव्यापाराक्षमत्वात् (न जातु ब्राह्मणं हन्यात्सर्वपापेष्वपि स्थितम्। राष्ट्रादेनं बहिः कुर्यात्समग्रधनमक्षतम् ॥ न ब्राह्मणवधाद् भूयानधर्मो विद्यते भुवि। तस्मादस्य वधं राजा मनसापि न चिन्तयेत् ॥ (मनुस्मृति ३८०।१) सदारः—दारैस्सह = सपत्नीकः तनयैः = पुत्रैः सह अयं = पुरोवर्त्ती द्विजसत्तमः—द्विजेषु सत्तमः = ब्राह्मणतल्लजः मुच्यतां = परित्यज्यताम्। अत्राप्यनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ३४ ॥

भीमः सम्भावयति (आत्मगतम्) भ्रातॄणामित्यादिना। भोः! मम = भीमस्य सर्वेषाम् = अखिलानां भ्रातॄणां = बान्धवानां युधिष्ठिरादीनामित्यर्थः, गुणतस्करः—गुणानां तस्करः = गुणाहरणकारी अयं कः = कोऽसावित्यर्थः। एतस्य पुरोवर्तिनः (घटोत्कचस्य) बालस्य = माणवकस्य (बालस्तु स्यान्माणवकः। अमरः) शौण्डीर्यम् = औद्धत्यं दृष्ट्वा सौभद्रस्य—सुभद्रायाः = कृष्णभगिन्याः अपत्यं तस्य = अभिमन्योः (अर्जुनपुत्रस्य) स्मरामि = स्मरणं करोमि बालशौर्यमिति शेषः। स्मरणालङ्कारः ॥ ३५ ॥

इस संसार के कर्मों से निवृत्त ब्राह्मणश्रेष्ठ को उसके पत्नी और पुत्रों के सहित छोड़ दो। क्योंकि, ब्राह्मण को अनेक अपराध करने पर भी मारना नहीं चाहिए ॥ ३४ ॥

घटोत्कच—नहीं छोड़ता।

भीम—(अपने मन में) हे! यह किसका पुत्र हो सकता है?

मेरे सब भाइयों के गुणों को चुराने वाला यह कौन है? इसके कौमारोद्धत दर्प को देखकर मुझे सुभद्रा के पुत्र (अभिमन्यु) की याद आती है ॥ ३५ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(प्रकाशम्) भोः पुरुष ! मुच्यताम् ।

घटोत्कचः—न मुच्यते ।

मुच्यतामिति विस्रब्धं ब्रवीति यदि मे पिता ।
न मुच्यते तथा ह्येष गृहीतो मातुराज्ञया ॥ ३६ ॥

भीमः—(आत्मगतम्) कथं मातुराज्ञेति । अहो गुरुशुश्रूषुः खल्वयं तपस्वी ।

माता किल मनुष्याणां दैवतानां च दैवतम् ।
मातुराज्ञां पुरस्कृत्य वयमेतां दशां गताः ॥ ३७ ॥

घटोत्कच एवमुत्तरयति—मुच्यतामित्यादिना ।

यदि=चेत् मे=मम (घटोत्कचस्य) पिता=जनकः विश्रब्धं=विश्वस्तं मुच्यताम्= परित्यज्यताम् इति = इत्थं ब्रवीति=कथयति (तथापि) न मुच्यते=न परित्यक्तु-मर्हामि । एषः = ब्राह्मणवटुः (मध्यमः) मातुः = जनन्याः आज्ञया = आदेशेन गृहीतः = परिगृहीतो मया । अत्रानुष्टुप् छन्दः ॥ ३६ ॥

भीम आत्मगतं विमर्शयति—मातेति ।

मनुष्याणां—मनोर्जाताः तेषां = मानवानां (मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरा इत्यमरः ।) देवतानाञ्च—देवस्य भावाः तासां = देवविशेषाणां, दैवतम् = ईश्वरो माता = जननी किल इति नूनं यतः मातुः = जनन्याः (कुन्त्याः) आज्ञाम् = आदेशं पुरस्कृत्य = स्वीकृत्य वयं = युधिष्ठिरादयः एतां = वर्तमानां विपन्नां दशाम् = अवस्थां गताः = प्राप्ताः स्मः । अत्र पूर्वपदे सामान्येन उत्तरपदे विशेषः समर्थितः अतएव अर्थान्तरन्यासालंकारः । अनुष्टुब् वृत्तम ॥ ३७ ॥

(प्रकाश में) हे पुरुष ! इसे छोड़ दो ।

घटोत्कच—नहीं छोड़ता ।

'छोड़ दो' ऐसा यह मेरा पिता भी विश्वासपूर्वक कहता तो भी माता की आज्ञा से ग्रहण किए गए इसको मैं कदापि न छोड़ता ॥ ३६ ॥

भीम—(अपने मन में) कैसा ? माता की आज्ञा । अहा, यह बेचारा अवश्य ही माता की सेवा करने वाला है ।

मनुष्यों के लिए तो माता अवश्य ही देवताओं का भी देवता है । माता (कुन्ती) की ही आज्ञा मान कर हम लोग (द्यूत-क्रीड़ा के कारण) इस (वनवास की) दशा को प्राप्त हुए ॥ ३७ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(प्रकाशम्) पुरुष ! प्रष्टव्यं खलु तावदस्ति ।

घटोत्कचः—ब्रूहि ब्रूहि, शीघ्रम् ।

भीमः—का नाम भवतो माता ।

घटोत्कचः—श्रूयतां, हिडिम्बा नाम राक्षसी,

कौरव्यकुलदीपेन पाण्डवेन महात्मना ।
सनाथा या महाभागा पूर्णेन द्यौरिवेन्दुना ॥ ३८ ॥

भीमः—(सहर्षमात्मगतम्) एवं हिडिम्बायाः पुत्रोऽयम् । सदृशो ह्यस्य गर्वः ।

रूपं सत्त्वं बलं चैव पितृभिः सदृशं बहु ।

घटोत्कचः स्वमातुः परिचयं ददत् सविशेषणं कौरव्यादिना उद्घाटयति ।

या = मम माता (हिडिम्बा) महाभागा = सौभाग्यशालिनी कौरव्यकुलदीपेन—कुरोः अपत्यं तस्य कुलस्य दीपः तेनः = कौरववंशोत्तंसेन महात्मना महांश्चासौ आत्मा तेन = महासत्त्वेन पाण्डवेन—पाण्डोरपत्यं तेन = पाण्डुपुत्रेण पूर्णेन = सकल (षोडश) कालयुक्तेन इन्दुना = चन्द्रमसा युक्ता द्यौरिव = आकाशमण्डलमिव सनाथा = सपतिका जातेति शेषः । कौरव्यकुलदीपे रूपकः तथा सम्पूर्णे श्लोके उपमा अलंकारौ ॥ ३८ ॥

भीमः आत्मगतं घटोत्कचविषये परामृशति—रूपमित्यादिना ।

अस्य = बालकस्य घटोत्कचस्य रूपं = सौन्दर्यं सत्त्वं = पराक्रमः बलं = सामर्थ्यम्

(प्रकाश में) हे पुरुष ! कुछ तुमसे पूछना हैं ।

घटोत्कच—कहो शीघ्र कहो ।

भीम—आपकी जननी का क्या नाम हैं ?

घटोत्कच—सुनिए, हिडिम्बा नाम की राक्षसी ।

कौरव कुल के दीपक महात्मा पाण्डव से जो पूर्णचन्द्र से आकाश की भांति सनाथ की गई है ॥ ३८ ॥

भीम—(सहर्ष मन में) इस प्रकार, यह हिडिम्बा का पुत्र हैं । इसका आत्माभिमान उचित ही है ।

रूप, पराक्रम शक्ति आदि सब इसके माता-पिता के समान ही हैं किन्तु

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रजासु वीरकारुण्यं मनश्चैवास्य कीदृशम् ॥ ३९ ॥

(प्रकाशम्) भोः पुरुष । मुच्यताम् ।

घटोत्कचः—न मुच्यते ।

भीमः—भो ब्राह्मण ! गृह्यतां तव पुत्रः । वयमेनमनुगमिष्यामः ।

द्वितीयः—मा मा भवानेवम् ।

त्यक्ताः प्रागेव मे प्राणा गुरुप्राणेष्वपेक्षया ।
युवा रूपगुणोपेतो भवांस्तिष्ठतु भूतले ॥ ४० ॥

बहु = अनल्पं पितृभिः = जनकैः) (आस्माभिः) सदृशं = तुल्यं (किन्तु) प्रजासु= जनेषु (प्रजा स्यात् सन्ततौ जने इत्यमरः ।) वीतकारुण्यं वीतं करुणस्य भावः कारुण्यं यस्मिन् तत् = त्यक्तकृपं मनः = चित्तं (चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः । अमरः) कीदृशं = कथं (भिन्नं) जातमिति ॥ ३९ ॥

मध्यमः ब्राह्मणपुत्रः भीमं वारयति—त्यक्ता इति ।

गुरुप्राणेषु—गुरूणां प्राणाः तेषु = पूज्यतमजीवेषु अपेक्षया = तेषां कृते मे = मम (ब्राह्मणवटोः) प्राणाः = असवः । प्रागेव = ग्रहणदशायामेव त्यक्ताः = मुक्ताः अतः युवा = तरुणः भवान् = भीमः रूपगुणोपेतः—रूपगुणाभ्याम् उपेतः = युक्तः भूतले = पृथिव्यां तिष्ठतु = बहुकालं जीवतु । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ४० ॥

(क्षत्रिय होने के कारण सन्तति के समान) प्राणियों के प्रति कैसे इसका मन इतना दयाविहीन हो गया ॥ ३९ ॥

(प्रकाश में) हे पुरुष ! इसे छोड़ दो ।

घटोत्कच—नहीं छोड़ता ।

भीम—हे ब्राह्मण ! अपने पुत्र को लो । (इसके स्थान पर) मैं ही इसके पीछे जाता हूँ ।

द्वितीय—नहीं, ऐसा नहीं ।

गुरुजनों के प्राण के विनिमय में मैंने पहले ही अपने प्राण के त्याग का निश्चय किया है आप सुन्दर और श्रेष्ठ गुणों वाले (हैं, अतः) इस पृथ्वी पर चिरकाल तक रहें ॥ ४० ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भीमः—आर्य ! मा मैवम् । क्षत्रियकुलोत्पन्नोऽहम् । पूज्यतमाः खलु ब्राह्मणाः । तस्माच्छरीरेण ब्राह्मणशरीरं विनिर्मातुमिच्छामि ।

घटोत्कचः—एवं क्षत्रियोऽयं, तेनास्य दर्पः । भवतु, इममेव हत्वा नेष्यामि । अथ केनायं वारितः ।

भीमः— मया ।

घटोत्कचः— किं त्वया ?

भीमः—अथ किम् ।

घटोत्कचः—तेन हि भवानेवागच्छतु ।

भीमः—एवमतिवलवीर्यान्नानुगच्छामि । यदि ते शक्तिरस्ति वलात्कारेण मां नय ।

घटोत्कचः—किं मां प्रत्यभिजानीते भवान् ।

भीमः—पुत्र इति जाने ।

घटोत्कचः— कथं कथं तव पुत्रोऽहम् ।

एवमतिबलवीर्यात्—अतिशयिते वलवीर्ये यस्य तस्मात्—आत्मानमतिपराक्रमशालिनं मन्यमानत्वात । बलात्कारेण = बलपूर्वकेण ।

भीम—आर्य ! ऐसा नहीं । मैं क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ हूँ । ब्राह्मण तो सबसे पूज्य हैं इसलिए अपने शरीर से ब्राह्मण के शरीर को बदलना चाहता हूँ (अर्थात् अपना शरीर राक्षस को देकर ब्राह्मण के शरीर की रक्षा करना चाहता हूँ) ।

घटोत्कच—ऐसा ? यह क्षत्रिय है इसीसे इसे इतना गर्व है । अच्छा मैं तो इसी (कुमार) को मार कर ले जाऊँगा । फिर किसके द्वारा रोका गया ।

भीम—मुझसे ।

घटोत्कच—क्या तुमसे ?

भीम—और क्या ।

घटोत्कच—तो आपही आइए ।

भीम—इस प्रकार (मैं) अधिक वल-पराक्रमशाली के पीछे नहीं जाऊँगा । यदि तुम में शक्ति है तो मुझे वलपूर्वक ले जाओ ।

घटोत्कच—क्या मुझे जानते हैं आप (मैं कौन हूँ) ?

भीम—मेरे पुत्र ऐसा जानता हूँ ।

घटोत्कच—कैसे-कैसे तुम्हारा मैं पुत्र ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भीमः—कथं रुष्यति । मर्षयतु भवान् । सर्वाः प्रजाः क्षत्रियाणां पुत्रशब्देनाभिधीयन्ते । अत एवं मयाभिहितम् ।

घटोत्कचः—भीतानामायुधं गृहीतम् ।

भीष्मः—

शपामि सत्येन भयं न जाने ज्ञातुं तदिच्छामि भवत्समीपे ।
किंरूपमेतद्वद भद्र तस्य गुणागुणज्ञः सदृशं प्रपत्स्ये ॥ ४१ ॥

घटोत्कचः—एष ते भयमुपदिशामि । गृह्यतामायुधम् ।

भीमः—आयुधमिति, गृहीतमेतत् ।

घटोत्कचः—कथमिव ।

भीमः घटोत्कचं प्रति तद्व्यवसायं ज्ञातुमिच्छन् पृच्छति—शपामीत्यादिना । हे भद्र = हे वीर पुरुष अहं भीमः सत्येन = ऋतेन शपामि = शपथं करोमि भयं = भीतिं न जाने = न जानामि । तत् भयं भवत्समीपे = भवतः समीपं तस्मिन् = त्वत्पार्श्वे ज्ञातुम् = अवगन्तुम् इच्छामि = ईहे एतद् रूपं = भयस्य रूपं, किमाकारं तस्य = भयस्य गुणागुणज्ञः = गुणावगुणवेत्ता त्वं वद = ब्रूहि सदृशम् = अनुरूपं त्वां प्रपत्स्ये = प्राप्तः । अतः स्वयं त्वमेव अस्य स्वरूपं वक्तुं शक्नोसीति पृच्छामीति भावः । उपजातिवृत्तम् ॥ ४१ ॥

भीम—(आप) क्यों क्रुद्ध होते हैं । क्षमा करें आप । सारी प्रजा क्षत्रियों के द्वारा पुत्र शब्द से ही पुकारी जाती है ।

घटोत्कच—(आपने) दुर्बलों का शस्त्र (बात बनाना) ग्रहण कर लिया ।

भीम—मैं सत्य शपथ खाता हूं, भय नहीं जानता । उसी को आपके समीप जानने के लिए आया हूं । हे भद्र ! उसका क्या रूप है बतलाओ क्योंकि तुम उसके अवगुण और गुणों के ज्ञाता हो ॥ ४१ ॥

घटोत्कच—यह तुम्हें डर की शिक्षा देता हूं । शस्त्र ग्रहण करो ।

भीम—शस्त्र ? यह इसे ले लिया ।

घटोत्कच—किस तरह ?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भीमः—

काञ्चनस्तम्भसदृशो रिपूणां निग्रहे रतः ।
अयं तु दक्षिणो बाहुरायुधं सहजं मम ॥ ४२ ॥

घटोत्कचः – इदमुपपन्नं पितुर्मे भीमसेनस्य ।

भीमः—अथ कोऽयं भीमो नाम ।

विश्वकर्ता शिवः कृष्णः शक्रः शक्तिधरो यमः ।

आयुधं = शस्त्रं ।

काञ्चनेति—रिपूणां=वैरिणां (रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृद इत्यमरः ।) निग्रहे = पराजये रतः = संलग्नः काञ्चनस्तम्भसदृशः = काञ्चनस्य स्तम्भः तेन सदृशः = सुवर्णस्तम्भोपमः अयं = यत् शरीरवर्ती दक्षिणः = वामेतरः बाहुः = भुजः मम = भीमस्य सहजं—सहजातं स्वाभाविकम् आयुधं = शस्त्रम् अस्तीति शेषः । अतः कुनोऽन्यायुधस्यावश्यकता ॥ अनुष्टुब् वृत्तम् । काञ्चनस्तम्भसदृशे उपमा अलङ्कारः ॥ ४२ ॥

उपपन्नम् = योग्यम् ।

विश्वेति—विश्वकर्ता-विश्वस्य = जगतः कर्ता = रचयिता निर्माणकर्त्तेति भावः= ब्रह्मा, शिवः = पशुपतिः (शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः) कृष्णः— कर्षति जनेभ्यः दुःखान् यः सः = विष्णुः (विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टर- श्रवा इत्यमरः ।) शक्रः = दिवस्पतिः (जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः । अमरः) शक्तिधरः—धरतीति धरः शक्तेः धरः = कुमारः (षाण्मातुरः शक्ति- धरः कुमारः क्रौञ्चदारणः । अमरः) यमः = शमनः (शमनो यमराड् यमः ।

भीम—

स्वर्ण के खम्भे के समान शत्रु-विनाश में परम संलग्न यह हमारा दक्षिण बाहु ही मेरे अनुरूप शस्त्र है ॥ ४२ ॥

घटोत्कच—यह तो मेरे पिता भीमसेन के ही योग्य (कथन) है ।

भीम—अच्छा, यह भीम नामक कौन (व्यक्ति) है ।

ब्रह्मा (सृष्टि की रचना करने वाले), महेश, विष्णु, इन्द्र, कुमार कार्तिकेय

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एतेषु कथ्यतां भद्र केन ते सदृशः पिता ॥ ४३ ॥

घटोत्कचः—सर्वैः ।

भीमः—धिगनृतमेतत् ।

घटोत्कचः—कथं कथमनृतमित्याह । क्षिपसि मे गुरुम् । भवत्विमं स्थूलं वृक्षमुत्पाट्य प्रहरामि । (उत्पाट्य प्रहरति ।) कथमनेनापि न शक्यते हन्तुम् । किं नु खलु करिष्ये नु । भवतु, दृष्टम् । एतद्गिरिकूटमुत्पाट्य प्रहरामि ।

शैलकूटं मयाक्षिप्तं प्राणानादाय यास्यति ।

भीमः —

रुष्टोऽपि कुञ्जरो वन्यो न व्याघ्रं धर्षयेद्वने ॥ ४४ ॥

अमरः) एतेषु = देवेषु (मध्ये) ते = तव पिता = जनकः केन = देवेन सदृशः = तुल्यः वर्तते इति हे भद्र = हे सौम्य कथ्यताम् = व्याहर । अनुष्टुप् वृत्तम् ॥ ४३ ॥

क्षिपसि = निन्दसि । गुरुम् = पूज्यतमम् (जनकम्) ।

मया = घटोत्कचेन आक्षिप्तम् = उत्पाट्य उपक्षिप्तम् (इदं) शैलकूटं = पर्वतशिखरम् (अस्य) प्राणान् = असून् आदाय = गृहीत्वा यास्यति = गमिष्यति ।

वन्यः—वने भवः = आरण्यकः (अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् । अमरः) कुञ्जरः = हस्ती रुष्टः अपि = क्रुद्धः अपि वने = कानने व्याघ्रं = शार्दूलं (शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्र इत्यमरः ।) न धर्षयेत् = भर्त्सयेत् । अत्रोत्तरार्धश्लोके

(देवताओं के सेनापति) यमराज इन लोगों में से हे सौम्य ! बतलाओ तुम्हारे पिता किसके सदृश हैं ॥ ४३ ॥

घटोत्कच—सब के ।

भीम—धिक्कार है । यह झूठ है ।

घटोत्कच—कैसे कैसे झूठ कहा ? तुम मेरे पूज्य की निन्दा करते हो ? अच्छा तो इस विशाल वृक्ष को उखाड़ कर मारूँ ।

मेरे द्वारा फेका गया यह पर्वत-शिखर तुम्हारे प्राण को लेकर (ही) जायगा ।

भीम—

क्रुद्ध होकर भी मतवाला जंगली हाथी वन में बाघ की निन्दा नहीं करता है ॥ ४४ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः—(प्रहृत्य) कथमनेनापि नु शक्यते । हन्तुम् । किं नु खलु करिष्ये । भवतु दृष्टम् ।

नन्वहं भीमसेनस्य पुत्रः पौत्रो नभस्वतः ।
तिष्ठेदानीं सुसन्नद्धो नियुद्धे नास्ति मत्समः ॥ ४५ ॥

(इत्युभौ नियुद्धं कुरुतः ।)

घटोत्कचः - (भीमसेनं बद्ध्वा)

व्रजसि कथमिह त्वं वीर्यमुल्लङ्घ्य बाह्वो-

लोकवादानुकारेण लोकोक्त्यलंकारः यतो हि—'लोकप्रवादानुकृतिर्लोकोक्तिरिति भण्यते ।' अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ४४ ॥

सगर्वः राक्षसः वंशपरिचयं ददत् आह्वयति—नन्वहमिति ।

अहं = घटोत्कचः भीमसेनस्य = पाण्डवेयस्य पुत्रः = सूनुः नभस्वतः—नभः अस्ति अस्य तस्य = पवनस्य (नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः । अमरः) पौत्रः ननु = निश्चितम् इदानीं साम्प्रतं सुसन्नद्धः—सु + सं + नह + क्त = सुसज्जितः तिष्ठ = आजौ स्थिरो भव नियुद्धे = बाहुयुद्धे (नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ । अमरः) मत्समः—मया समः इति = मत्तुल्यः (कश्चिद्) नास्ति = न वर्तते, अतोऽहं त्वाम् पराजये 'समर्थनीयस्यार्थस्य काव्यलिङ्गं समर्थनम्' अतः अत्र अप्रतिमबलशालित्वं नानाप्रकारेण समर्थितम् । अतः काव्यलिङ्गालङ्कारः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥

घटोत्कचः बाहुपाशेन भीमं बद्ध्वा एवं प्रक्षिपति—व्रजसीति ।

त्वम् = भीमसेनः बाह्वोः = मम भुजयोः वीर्यं = विक्रमम् उल्लङ्घ्य = लङ्घयित्वा (तिरस्कृत्य) मद्भुजाभ्यां—मम भुजे ताभ्यां = मम बाहुभ्यां पीडितः = घृष्टः

घटोत्कच—(प्रहार करके) कैसे, इससे भी नहीं मार सकता ? अब (मैं) क्या करूँ । अच्छा समझा ।

मैं निश्चय ही भीम का पुत्र और वायु का पौत्र हूँ, तो ठहरो, इस समय मल्लयुद्ध में मेरे समान वीर योद्धा कोई नहीं ॥ ४५ ॥

(दोनों मल्ल युद्ध करते हैं ।)

घटोत्कच—(भीमसेन को [बाहुपाश में] बाँधकर)

मेरी बली भुजाओं की शक्ति का उल्लंघन करके, सुदृढ़ बन्धन में कस कर बँधे हुए हाथी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गज इव दृढपाशैः पीडितो मद्भुजाभ्याम् ।

भीमः—(आत्मगतम्) कथं गृहीतोऽस्म्यनेन । भोः सुयोधन ! वर्धते ते शत्रुपक्षः । कृतरक्षो भव । (प्रकाशम्) भोः पुरुष ! अवहितो भव ।

घटोत्कचः—अवहितोऽस्मि ।

भीमः - (नियुद्धबन्धमवधूय)

व्यपनय वलदर्पं दृष्टसारोऽसि वीर !
न हि मम परिखेदो विद्यते बाहुयुद्धे ॥ ४६ ॥

दृढपाशैः—दृढाश्च ते पाशाः तैः = कठिनबन्धनैः (बद्धः) गज इव = करीव इह = अस्मिन् वने कथं = केन प्रकारेण व्रजसि = यासि । गज इवेत्युपमाऽलङ्कारः (उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीरुल्लसति द्वयोः) । अनुष्टुब् वृत्तम् ।

सुयोधनः = दुर्योधनः । अवधूय = तिरस्कृत्य ।

भीमः घटोत्कचस्य बललाघवं प्रकाशयति—व्यपनयेति । हे वीर = हे पराक्रमिन् दृष्टसारा—दृष्टो सारो यस्य स = प्रकाशितबलः (सारो बले स्थिरांशे च । अमरः (त्वम्) असि = भव ।

बलदर्पं—बलस्य दर्पं = सारगर्वं व्यपनय = दूरीकुरु हि यतः बाहुयुद्धे—बाह्वोः युद्धं तस्मिन् = मल्लयुद्धे मम = भीमस्य परिखेदः = परिश्रमः खिन्नतेति भावः, न विद्यते = न वर्तते । अतः निकामं युद्धं कुर्विति भावः । मालिनी वृत्तम् ॥ ४६ ॥

की भांति तुम कैसे जा सकते हो ।

भीम—(मन में) [मैं] इसके द्वारा कैसे पकड़ लिया गया हूँ ? हे दुर्योधन, तुम्हारा शत्रुपक्ष बढ़ रहा है । अपनी रक्षा में तैयार रहो । (प्रकाश में) हे पुरुष ! तैयार हो जाओ ।

घटोत्कच—तैयार हूँ ।

भीम—(मल्लयुद्ध में बाहुपाश को छुड़ा करके)

हे वीर ! अपने बल का घमण्ड छोड़ दो, तुम्हारी शक्ति देख ली गई । तुमसे बाहु युद्ध करने में मुझे तनिक भी श्रम नहीं करना पड़ा ॥ ४६ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः कथमनेनापि न शक्यते हन्तुम्। किं नु खलु करिष्ये। भवतु, दृष्टम्। अस्ति मातृप्रसादलब्धो मायापाशः। तेन बध्वैनं नेष्यामि। कुतः खल्वापः। भो गिरे! आपस्तावत्। हन्त स्रवति। (आचम्य मन्त्रं जपति।) भोः पुरुष!

मायापाशेन बद्धस्त्वं विवशोऽनुगमिष्यसि।
राजसे रज्जुभिर्बद्धः शक्रध्वज इवोत्सवे॥ ४७॥

(इति मायया बध्नाति।)

भीमः—कथं मायापाशेन बद्धोऽस्मि। किमिदानीं करिष्ये। भवतु दृष्टम्। अस्ति मे महेश्वरप्रसादाल्लब्धो मायापाशमोक्षो मन्त्रः। तं जपामि। कुतः खल्वापः भो ब्राह्मणकुमार! आनय कमण्डलुगता-अपः।

त्वं = भवान् (भीमः) मायापाशेन—मायायाः पाशः तेन = ऐन्द्रजालिकबन्धनेन बद्धः निगडितस्सन् (इदानीं) विवशः—विगतः वशः = स्वातन्त्र्यं यस्य सः = परतन्त्रः अनुगमिष्यसि = मम पश्चाद् गमनं करिष्यसि अतः साम्प्रतम् उत्सवे = सांवत्सरिकोत्सवे शक्रध्वजः—शक्रस्य = इन्द्रस्य ध्वजः = इन्द्रकेतुरिव रज्जुभिः = रशनाभिः बद्धः = नद्धः राजसे = शोभसे। शक्रध्वज इवेत्युपमा अलङ्कारः। अनुष्टुव् वृत्तम्॥ ४७॥

घटोत्कच—क्या, इससे भी (इसे) नहीं मार सकता। अब क्या करूँ? अच्छा समझा। माता के प्रसाद से मुझे मायापाश प्राप्त हुआ है। तो उससे ही बाँधकर इसे ले जाऊँगा। जल कहाँ है? हे पर्वत! मुझे जल दो। अहा चू रहा है। (आचमन करके मन्त्र जपता है।) हे पुरुष!

मायापाश से बंधे हुए तुम विवश होकर मेरा अनुगमन करोगे (और) वर्षोत्सव में रस्सियों से बंधे हुए इन्द्र की ध्वजा के समान शोभित होगें॥ ४७॥

(माया से बाँधता है)

भीम—क्या मायापाश से (मैं) बंध गया। अब क्या करूँ? अच्छा, देखा (समझा) शंकर जी की कृपा से मुझे मायापाश से मुक्ति का मन्त्र भी प्राप्त है। उसी को जपता हूँ। जल कहां है? हे ब्राह्मणकुमार! कमण्डलु का जल ले आओ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वृद्धः—इमा आपः ।

(भीमः आदायाचम्य मन्त्रं जप्त्वा मायामपनयति ।)

घटोत्कचः—अये पतितः पाशः । किमिदानीं करिष्ये । भवतु, दृष्टम् । भोः पुरुष ! पूर्वसमयं स्मर ।

भीमः—समयमिति । एष स्मरामि । गच्छाग्रतः । (उभौ परिक्रामतः ।)

वृद्धः—पुत्रकाः किं कुर्मः । अयं गच्छति वृकोदरः ।

आक्रम्य राक्षसमिमं ज्वलदुग्ररूप-
मुग्रेण बाहुबलवीर्यगुणेन युक्तम् ।
एष प्रयाति शनकैरवधूय शीघ्र-
मासारवर्षमिव गोवृषभस्सलीलम् ॥ ४८ ॥

गच्छन्तं वृकोदरं वृद्धः पुत्रान्प्रति प्रकटयति आत्मनो व्यथाम्—आक्रम्येति ।

ज्वलदुग्ररूपं—ज्वलत् उग्रं रूपं यस्य तम् = प्रदीप्तकठोरस्वरूपम् उग्रेण = घोरेण बाहुबलवीर्यगुणेन—बाह्वोः बलवीर्यगुणः तेन = भुजबलशौर्यगुणेन युक्तम् = सहितम् इमं पुरोवर्तिनं राक्षसं = घटोत्कचम् आक्रम्य = विजित्य एषः = भीमः शनकैः = शनैरेव मन्दं मन्दं सलीलम् लीलया सहितम् आसारवर्षम्—आसारस्य वर्षं तत् = धारासंपातवृष्टिं (धारासम्पात आसारः । अमरः) शीघ्रं = त्वरितम् अवधूय = तिरस्कृत्य गोवृषभ इव = गोषु वृषभः (वृषभश्रेष्ठो वा) = महोक्ष इव याति = गच्छति । गोवृषभ इवेत्युपमा अलङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ४८ ॥

वृद्ध—यह जल है ।

(भीम आचमन कर मन्त्र जपकर पाश दूर करते हैं)

घटोत्कच—अरे, बन्धन गिर पड़ा । अब क्या करूँ ? अच्छा समझा । हे पुरुष अपनी पहले की हुई प्रतिज्ञा का स्मरण करो ।

भीम—प्रतिज्ञा । मैं स्मरण करता हूँ । आगे चलो (दोनों जाते हैं ।)

वृद्ध—हे पुत्रो, हम क्या करें । यह भीमसेन जाता है ।

इस अत्यन्त प्रचण्ड राक्षस को अपनी अतुल शक्ति एवं पराक्रम से जीतकर मूसलाधार वृष्टि को धीरे से उपेक्षित करके श्रेष्ठ बैल की भांति लीलापूर्वक (भीम) जा रहा है ॥ ४८ ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः--इह तिष्ठ। त्वदागमनमम्बायै निवेदयामि।

भीमः--बाढम्। गच्छ।

घटोत्कचः—(उपसृत्य) अम्ब! अग्रमभिवादये। चिराभिलषितो भवत्या आहारार्थमानीतो मानुषः।

(प्रविश्य)

हिडिम्बा—जाद! चिरं जीव। [जात! चिरं जीव।]

घटोत्कचः—अनुगृहीतोऽस्मि।

हिडिम्बा—जाद! कीदिसो माणुसो आणीदो। [जात, कीदृशो मानुष आनीतः।]

घटोत्कचः--भवति रूपमात्रेण मानुषः। न वीर्येण।

हिडिम्बा—किं बम्हणो। [किं ब्राह्मणः।]

रूपमात्रेण मानुषः न वीर्येण—अत्र अधिकार्थवचनमिव प्रतिभाति यतः आकारमात्रेण मानवः न वीर्येण इति कथने मानुषाधिक्यः पराक्रमो वर्तते इति स्तुतिर्गम्यते अथ च रूपमात्रेण मनुष्यः वीर्यं किञ्चिदपि न वर्तते इति निन्दा काकपेया नदीतिवत्। अत्र काकूक्तिरपि गम्यते।

घटोत्कच—यहीं ठहरो। माँ को तुम्हारे आने की सूचना दूं।

भीम—अच्छा। जाओ।

घटोत्कच—(पास जाकर) माता जी! यह (मैं) अभिवादन करता हूँ। आप की बहुत दिनों का इच्छित मनुष्य आज (आपके) भोजन के लिए लाया गया है।

(प्रवेश करके)

हिडिम्बा—पुत्र! चिरजीवी हो।

घटोत्कच—अनुगृहीत हुआ।

हिडिम्बा—पुत्र! किस प्रकार का मनुष्य लाए हो।

घटोत्कच—माँ! आकार मात्र से ही वह मनुष्य है बल से नहीं। (अर्थात् बल में तो वह मनुष्यों से बहुत अधिक बलशाली है अथवा बल में तो मनुष्यों से भी कमजोर है।)

हिडिम्बा—क्या ब्राह्मण है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घटोत्कचः —न ब्राह्मणः।

हिडिम्बा —आदु थेरो [अथवा स्थविरः।]

घटोत्कचः — न वृद्धः।

हिडिम्बा —किं बालो। [किं बालः।]

घटोत्कचः न बालः।

हिडिम्बा—जइ एव्वं पेक्खामि दाव णं। (उभौ परिक्रामतः।) [यद्येवं पश्यामि तावदेनम्।]

हिडिम्बा किं एसो माणुसो आणीदो। [किमेष मानुष आनीतः।]

घटोत्कचः--अम्ब ! कोऽयम्।

हिडिम्बा —उम्मत्तअ दव्वदं खु अम्हाअं। [उन्मत्तक दैवतं खल्वस्माकम्।]

घटोत्कचः -- आः कस्य दैवतम्।

हिडिम्बा तव अ, मम अ। [तव च, मम च।]

घटोत्कचः —कः प्रत्ययः।

हिडिम्बा—अअं पच्चओ। जेदु अय्यउत्तो। [अयं प्रत्ययः! जयत्वार्यपुत्रः।]

घटोत्कच—ब्राह्मण नहीं।

हिडिम्बा—अथवा बूढ़ा है ?

घटोत्कच—बुड्ढा नहीं।

हिडिम्बा—तो क्या बालक है ?

घटोत्कच—बालक भी नहीं।

हिडिम्बा—यदि ऐसा है तो इसे मैं देखूंगी (दोनों जाते हैं।)

हिडिम्बा—क्या यही मनुष्य (तुम्हारे द्वारा) लाया गया है।

घटोत्कच—मां, यह कौन है ?

हिडिम्बा—पागल ! हम लोगों के देवता हैं।

घटोत्कच—आह ! किसके देवता ?

हिडिम्बा—तुम्हारे और मेरे भी।

घटोत्कच—कैसे विश्वास किया जाय ?

हिडिम्बा—यह विश्वास का परिचायक (है)। आर्यपुत्र की जय हो।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भीमः - (विलोक्य) का पुनरियम् । अये देवी हिडिम्बा ।

अस्माकं भ्रष्टराज्यानां भ्रमतां गहने वने ।
जातकारुण्यया देवि ! संतापो नाशितस्त्वया ॥ ४९ ॥

हिडिम्बे ! किमिदम् ।

हिडिम्बा –(कर्णे) अय्यउत्त ! ईदिसं विअ । [आर्यपुत्र ! ईदृशमिव ।]

भीमः—जात्या राक्षसी, न समुदाचारेण ।

हिडिम्बा—उम्मत्तअ ! अभिवादेहि पिदरं । [उन्मत्तक । अभिवादयस्व पितरम् ।]

घटोत्कचः—भोस्तात !

अज्ञानात्तु मया पूर्वं यद्भवान्नाभिवादितः ।

(हे) देवि ! हिडिम्बे ! गहने=कान्तारे वने = विपिने भ्रष्टराज्यानां भ्रष्टं राज्यं येषां तेषां = विनष्टराज्यविषयाणां भ्रमताम् = इतस्ततः परिभ्रमणं कुर्वताम्= अस्माकम् = युधिष्ठिरादीनां भ्रातॄणां जातकारुण्यया करुणस्य भावः कारुण्यम् जातं कारुण्यं यत्र तया = उत्पन्नदयालुतया त्वया = भवत्या हिडिम्बया संतापः = अस्माकं क्लेशः नाशितः = दूरीकृतः, अस्यां विपन्नावस्थायां त्वाम् प्राप्य नितरां प्रमोदमनुभवामि ॥ ४९ ॥

घटोत्कचः उद्धततां क्षमापयन् भीमम् अभिवादयति–अज्ञानादिति (हे तात !) मया = घटोत्कचेन अज्ञानात् = ज्ञानाभावात् पूर्वं = प्रथमम् यत् भवान् भीमः

भीम—(देखकर) यह कौन है ? अरे, देवी हिडिम्बा ।

हम लोगों के राज्य नष्ट हो जाने पर गहन वन में भ्रमण करते हुए हे देवि ! तुमने हमारे कष्ट दूर कर दिए ॥ ४९ ॥

हे हिडिम्बा, यह क्या ?

हिडिम्बा—(कान में) आर्यपुत्र ! ऐसे ही ।

भीम—(तुम) जन्म में ही राक्षसी हो न कि आचरण से ।

हिडिम्बा—अरे उन्मत्त ! (अपने) पिता को प्रणाम कर ।

घटोत्कच—हे पिता !

पहले अज्ञान के कारण जो मैंने आपका अभिवादन नहीं किया (उस) इस पुत्र के

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अस्य पुत्रापराधस्य प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ ५० ॥

अहं स धार्तराष्ट्रवनदवाग्निर्घटोत्कचोऽभिवादये। पुत्रचापलं क्षन्तुमर्हसि।

भीमः—एह्येहि पुत्र व्यतिक्रमकृतं क्षान्तमेव। (इति परिष्वज्य) अयं स धार्तराष्ट्रवनदवाग्निः। पुत्रापेक्षीणि खलु पितृहृदयानि। पुत्र, अतिवल्पराक्रमो भव।

घटोत्कचः—अनुगृहीतोऽस्मि।

वृद्धः—एवं भीमसेनपुत्रोऽयं घटोत्कचः।

भीमः—पुत्र ! अभिवादयात्रभवन्तं केशवदासम्।

घटोत्कचः—भगवन्नभिवादये।

वृद्धः—पितृसदृशगुणकीर्तिर्भव।

घटोत्कचः—अनुगृहीतोऽस्मि।

नाभिवादितः = न प्रणामविषयीकृतः अस्य–पुत्रेण कृतः अपराधः तस्य = आत्मजागसः (आगोऽपराधो मन्तुश्चेत्यमरः।) प्रसादं = क्षमापनं कर्तुं = विधातुम् अर्हसि = योग्योसि। ममापराधः क्षन्तव्य इति भावः ॥ ५० ॥

धार्तराष्ट्रवनदवाग्निः धृतराष्ट्रस्यापत्यानि तानि एव वनानि तेषां दावाग्निः—धृतराष्ट्रपुत्रारण्यदावानलः। रूपकालङ्कारः।

अपराध को आप क्षमा कीजिए ॥ ५० ॥

मैं घटोत्कच धृतराष्ट्र के पुत्ररूपी वन के लिए दावाग्नि, आपको प्रणाम करता हूँ। (अपने) पुत्र की चपलता क्षमा करें।

भीम—आओ पुत्र आओ। तुम्हारा अपराध पहले ही क्षमा कर दिया गया। (आलिंगन करके) यही वह धृतराष्ट्रवंशरूपी वन का दावाग्नि है। पिता का हृदय हमेशा पुत्र की अपेक्षा रखता है। पुत्र ! अजेय शक्ति वीरता प्राप्त करो।

घटोत्कच—मैं अनुगृहीत हुआ।

वृद्ध—ऐसा भीमसेन का पुत्र यह घटोत्कच है।

भीम—पुत्र ! पूजनीय केशवदास जी को प्रणाम करो।

घटोत्कच—भगवन् ! आपको प्रणाम करता हूँ।

वृद्ध—पिता के समान गुण और कीर्ति वाले बनो।

घटोत्कच—मैं अनुगृहीत हुआ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वृद्धः—भोः वृकोदर ! रक्षितमस्मत्कुलं, स्वकुलमुद्धृतं च। गच्छामस्तावत्।

भीमः—

अनुग्रहात्तु भवतः सर्वमासीदिदं शुभम्।
आश्रमोऽदूरतोऽस्माकं तत्र विश्रम्य गम्यताम्॥ ५१॥

वृद्धः—कृतमातिथ्यमनेन जीवितप्रदानेन। तस्माद् गच्छामस्तावत्।

भीमः—गच्छतु भवान् सकुटुम्बः पुनर्दर्शनाय।

वृद्धः—बाढम्। प्रथमः कल्पः। (सपुत्रत्रयकलत्रो निष्क्रान्तः केशवदासः।)

भीमः—हिडिम्बे ! इतस्तावत्। वत्स घटोत्कच। इतस्तावत्। तत्रभवन्तं केशवदासम् आश्रमपदद्वारमात्रमपि संभावयिष्यामः।

भीमः वृद्धं प्रार्थयति—अनुग्रहादिति।

भवतः = केशवदासस्य तव अनुग्रहात् = अनुकम्पातः इदं = स्वकुलोद्धरणं त्वत्कुलरक्षणञ्च शुभं = माङ्गलिकं सर्वम् = अशेषम् आसीत् = अभवत्। अस्माकं = पाण्डवेयानाम् आश्रमः = निवासभूमिः अदूरतः = अतिनिकटं वर्तते तत्र = आश्रमे विश्रम्य = अध्वश्रममपनीय गम्यतां = (सुखेन) यात्रा क्रियताम्। अनुष्टुप् छन्दः॥ ५१॥

सम्भावयिष्यामः = आराधयिष्यामः।

वृद्ध—हे भीम ! हमारे कुल की रक्षा और अपने भी कुल का उद्धार किया। तो हम सब (अब) जाते हैं।

भीम—आपकी ही कृपा से यह सब मांगलिक कृत्य हुए हैं। हमारा आश्रम निकट ही है वहां विश्राम करके तब यात्रा कीजिये॥ ५१॥

वृद्ध—इस जीवन-दान के द्वारा (आपने) पूरा अतिथि-सत्कार कर दिया। इसलिए अब हम जाते हैं।

भीम—आप सकुटुम्ब पुनः दर्शन के लिए जांय।

वृद्ध—अच्छा। अति उत्तम विचार (है)। (केशवदास अपने तीन पुत्र और पत्नी के साथ चला गया।)

भीम—हे हिडिम्बा ! इधर आओ। पुत्र घटोत्कच इधर आओ। पूज्य केशवदास को (इस) आश्रम के द्वार प्रदेश तक तो हम सब पहुँचा आवें।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY

यथा नदीनां प्रभवः समुद्रो
यथाहुतीनां प्रभवो हुताशनः ।
यथेन्द्रियाणां प्रभवं मनोऽपि
तथा प्रभुर्नो भगवानुपेन्द्रः ॥ ५२ ॥

(निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

॥ मध्यमव्यायोगं नाम नाटकं समाप्तम् ॥

यथा = येन प्रकारेण नदीनां = सरितां समुद्रः = पारावारः (समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिरित्यमरः ।) प्रभवः = प्रभवति इष्टे इति प्रभवः (प्र + भू + अ पचाद्यच्) = इष्टे आश्रय इति भावः । यथा = येन = प्रकारेण आहुतीनां = हव्यादीनां हुताशनः—हुतम् अश्नातीति = हव्यभक्षकोऽनलः प्रभवः = आश्रयः यथा = येन प्रकारेण इन्द्रियाणां = वागादीनां मनः = चित्तं प्रभवम् = आश्रयस्थानं तथा = तेनैव प्रकारेण नः = अस्माकं = (नटानां सामाजिकानाञ्च) भगवान् = ऐश्वर्यवान् (भगः ऐश्वर्यम्) उपेन्द्रः = इन्द्रावरजः विष्णुरित्यर्थः (उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिरित्यमरः ।) प्रभुः = ईश्वरः आश्रयस्थानमित्यर्थः । 'उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ' । इतीदं भरतवाक्यमुपेन्द्रवज्रावृत्ते निबद्धम् । अत्र मालारूपकालङ्कारः ॥ ५२ ॥

जैसे समुद्र नदियों का स्वामी है, अग्नि आहुतियों का, मन इन्द्रियों का उसी प्रकार हम लोगों के प्रभु भगवान हैं।

(सब चले जाते हैं ।)

मध्यमव्यायोग नामक नाटक समाप्त ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
ACC No. 4034

श्लोकानुक्रमणिका

	श्लोकाङ्काः
अनुग्रहात्तु	५१
अस्माकं भ्रष्ट	४९
अस्यामाचस्य	३१
अज्ञानात्तु	५०
आक्रम्य राक्षस	४८
आपदं हि पिता	१९
इदं हि शून्यं	१०
कलभदशन	६
काञ्चनस्तम्भ	४२
किं यासि मद्	८
कृतकृत्यं शरीरं	१५
कौरव्यकुल	३८
खगशतविरुते	२५
ग्रहयुगल	५
जानामि सर्वत्र	९
ज्येष्ठः श्रेष्ठः कुले	१७
ज्येष्ठो भ्राता	१८
तरुण तरुणता	२४
तरुण रविकर	४
त्यक्ताः प्रागेव	४०
धन्योऽस्मि यद्	२०
नन्वहं भीम	४५
निवृत्तव्यवहारो	३४
पान्था चारित्र	१२
परिष्वजस्व गाढं	२२
पायात्स वोऽसुर	१
पुत्रनष्टन्न	३३
ब्राह्मणः श्रुत	१३
भोश्शब्दोच्चा	२
भ्रातृणां मम	३५
भ्रान्तैः सुतै	३
मध्यमः पञ्च	२९
मध्यमस्त्विति	३०
मध्यमोऽहं	२८
मम प्राणैर्गुरु	१६
माता किल मनुष्याणां	३७
मायापाशेन	४७
मुच्यतामिति	३६
यथा नदीनां	५२
यद्यर्थितो द्विज	१४
यस्त्रिश्शृङ्गो	२३
युद्धप्रियाश्च	११
रूपं सत्त्वं	३९
वज्रपातो	७
विनिमाय गुरु	२१
विश्वकर्ता शिवः	४३
व्रजसि कथमिह	४६
शपामि सत्येन	४१
शैलकूटं	४४
सजलजलद	३२
सिंहाकृतिः कनक	२७
सिंहास्यः सिंह	२६

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कतिपय परीक्षोपयोगी प्रकाशन

१ रघुवंशमहाकाव्यम् प्र० सर्ग। 'चन्द्रकला' सं० हि० व्या०—शेषराजशर्मा २—२५
२ रघुवंशमहाकाव्यम्। 'विमला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या। श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी
द्वितीय २-५०, तृतीय २-२५, ४-५ ४-००, ६-७ ४-००, १३-१४ ४—५०
३ हितोपदेश : मित्रलाभ। 'चन्द्रकला' सं० हि० टीका—श्रीशेषराजशर्मा ५—५०
४ लघुसिद्धान्तकौमुदी। 'शिवाख्य' सं० हि० टीका—गोमतीप्रसादशास्त्री ८—००
५ तर्कसंग्रह—पदकृत्य। हिन्दीटीकासहित—श्रीशेषराजशर्मा 'रेग्मी' २—५०
६ कुमारसम्भव। 'विमला' संस्कृत-हिन्दीटीका—पं० श्रीकृष्णमणित्रिपाठी
१—२ सर्ग ४—०० तृ० सर्ग २—०० च० सर्ग २—०० पञ्चमसर्ग २—५०
७ स्वप्नवासवदत्ता। 'चन्द्रकला' सं० हि० टीका—श्रीशेषराजशर्मा 'रेग्मी' ७—००
८ नीतिशतकम्। 'विमला' संस्कृत—हिन्दीव्याख्योपेतम्—कृष्णमणित्रिपाठी ३—००
९ छन्दोमञ्जरी। (प्रमाणिक-संस्करण)। 'सुषमा'-'सफला' संस्कृत-
हिन्दी व्याख्या युक्त। व्याख्याकार—डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ५—००
१० काव्यमीमांसा। 'विमला' संस्कृत-हिन्दी टीका। १—५ अध्याय ३—५०
११ पञ्चतन्त्र। अपरीक्षितकारक। 'विमला' सं०हि०टीका। कृष्णमणित्रिपाठी ३—५०
१२ संस्कृत व्याकरणम्। (अनु० खण्ड—निबन्धखण्ड सहित)-पं० रामचन्द्रझा ८—००
१३ सांख्यकारिका। 'सांख्यप्रकाश' सं० हि० टीका। श्रीकृष्णमणित्रिपाठी ५—००
१४ वेदान्तसार। 'भावबोधिनी' सं० हि० टीका—श्रीरामशरणत्रिपाठी ५—००
१५ मेघदूत। 'चन्द्रकला' सं० हि० टीका—श्रीशेषराजशर्मा 'रेग्मी' १०—००
१६ अनुवादचन्द्रिका। (सर्वांगपूर्ण संस्करण)। डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ८—००
१७ दशरूपक। 'चन्द्रकला' हि० टीका सहित—डॉ० भोलाशंकर व्यास १६—००
१८ साहित्यदर्पण। 'शशिकला' हिन्दीटीका १-६ परि० २४-००, ७—१० परि १२—००
१९ काव्यप्रकाश। 'चन्द्रकला' हिन्दी टीका—डॉ० सत्यव्रत सिंह २५—००
२० भट्टिमहाकाव्य। सान्वय संस्कृत-हिन्दीव्याख्यासहित। श्रीगोपालशास्त्री
'दर्शनकेशरी' १—४ सर्ग ७—००, ५—८ सर्ग ८—०० एवं १४—२२ ८—००
२१ नैषधमहाकाव्य। 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। श्रीशेषराजशर्मा
प्र० सर्ग ५—०० १-३ सर्ग १०—०० १-५ सर्ग १५—०० १-९ सर्ग २५—००
२२ किरातार्जुनीयम्। 'विजया' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, परीक्षोपयोगि संस्करण।
डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी। द्वि० सर्ग १—५० ३—६ सर्ग ६—००
२३ दशकुमार-पूर्वपीठिका। परीक्षोपयोगि 'विमला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित
व्याख्याकार—प० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ४—००
२४ प्रस्तावरत्नाकरः। परीक्षोपयोगि निबन्धसंग्रह। डॉ० ब्रह्मानन्दत्रिपाठी ६—००
२५ सवृत्तिरष्टाध्यायीसूत्रपाठः। सम्पा० श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' ३—००

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi